सलंग अंक ४८/४९ अप्रैल-मई-२०११

श्री स्वामिनारायण

मासिक

मुल्य रु. ५-००

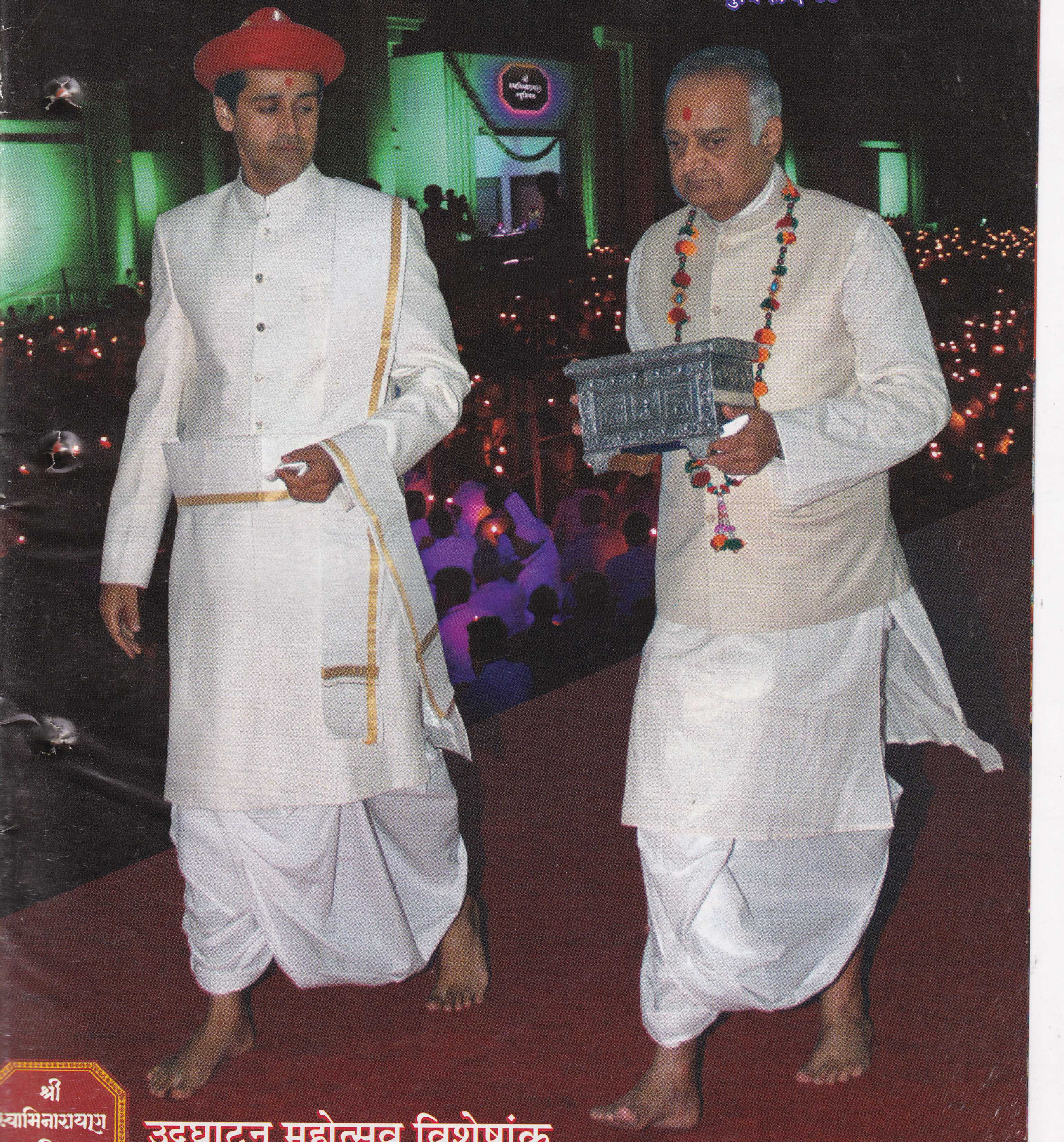

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

उद्घाटन महोत्सव विशेषांक

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

Tejendraprasadji

શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમના દર્શન જીવપ્રાણીમાત્ર માટે જન્મમરણના ફેરાઓથી મુક્ત કરનાર છે

સર્વાવતારી સર્વોપરી શ્રી હરિના અંગભૂત પ્રસાદીની દરેક વસ્તુ અત્યંત ઉપકારી, મહારાજે જે તે સમયે જે તે લીલાઓ કરી તેનું સ્મરણ અને મનન કરી દર્શન કરનારને શ્રીહરિના દિવ્ય સાંનિધ્યની અનુભૂતિ થયા વગર રહેતી નથી.

મ્યુઝિયમમાં સહયોગ આપનાર સંપ્રદાયના નાનામોટા સૌ સંતહરિભક્તો ઉપર પરમ કૃપાળુ શ્રી નરનારાયણ દેવની અખંડ કૃપા અને અમીદૃષ્ટિ રેડે એવી અમારી શ્રીહરિના ચરણોમાં નમ્ર પ્રાર્થના.

મ્યુઝિયમના નિત્ય દર્શન કરી, અલૌકિક અને દિવ્ય અનુભૂતિના સુખના અધિકારી બનવા આપસૌને અમારું ભાવભર્યું આમંત્રણ છે.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Bagh Ahmedabad 380 052 Phone : (079) 27478070 Fax : (079) 27452145 Museum: (079) 2741 9597, 2749 9597

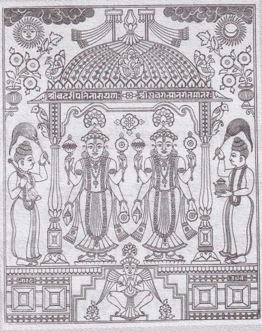

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४/५ | अंक : ४८/४९ | अप्रैल-मई-२०११

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०२
०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३
०३. विश्व में सर्वोपरि अपना श्री स्वामिनारायण म्युजियम ०४
०४. सर्वोपरिता गौरव ०८
०५. संप्रदाय का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण म्युजियम का उद्‌घाटन समारोह ०९
०६. श्री स्वामिनारायण भगवान का घर १२
०७. प्रसादी का जीवन्त स्वरुप १३
०८. निःस्वार्थ भाव से किया गया दान श्रेष्ठदान १७
०९. समग्र विश्व में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्वोपरि अद्वितीय महातीर्थ श्री स्वामिनारायण म्युजियम, अहमदाबाद १८
१०. श्रीहरि को प्रसन्न करने का श्रेष्ठ साधन अर्थात् सेवा २७
११. संप्रदाय में सदा स्मरणी श्री स्वामिनारायण म्युजियम ३४
१२. म्युजियम की मनोहरता ३६
१३. श्री स्वामिनारायण म्युजियम “पवित्रता का मूल” ४१
१४. श्री स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण के साथ ४७
१५. आई.एस.एस.ओ. “सेवा” संस्था द्वारा जापान में भूकंप पीडितों को सहायता प्रदान की गई ५०
१६. सत्संग बालवाटिका ५१
१७. भक्ति सुधा ५३

सम्पादकीय

इस सदी के लिये अपनें संप्रदाय का श्री स्वामिनारायण म्युजियम सभी के लिये मंगलकारी रहा है । सं. २०६७ फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के शुभ अवसर प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों से समस्त जन समुदाय तथा संप्रदाय के आश्रितों के लिये दर्शनार्थ खोल दिया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प पूर्ण हुआ । हमलोग भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्घाटन समारोह को बड़ी अच्छी तरह से संपन्न किये । श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दर्शनार्थ हजारो भक्त प्रतिदिन आते हैं । सतत तीन घंटे का समय व्यतीत होता है । फिर भी मानसिक तृप्ति नहीं होती है । बार-बार दर्शन करने की चाहना होती है । इस तरह का अद्भुत यह म्युजियम है । अपने ईष्टदेव की एक-एक वस्तु को निरखने के लिये मन एकाग्र यहाँ स्वतः हो जाता है । यहाँ पर दिव्यता तथा अलौकिकता का अनुभव होता है ।

अपने भारत देश के लिये यह वर्ष बड़ा शुभ कारक है । १९८३ में सर्वप्रथम वनडे क्रिकेट वर्ल्ड कप हम जीते थे उसके बाद २८ वर्ष के बाद पुनः वही सिद्धि हमारे खिलाड़ियों ने प्राप्त की । यह अपने देश के लिये गौरव की बात है ।

देश प्रेम की झांकी सम्पूर्ण भारत देश में देखने को मिली । संप्रदाय के भक्त भी श्री नरनारायणदेव की निष्ठा में रहकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उद्घाटन महोत्सव में तन, मन, धन से प्रत्येक स्थान पर खड़े रहे । संत-हरिभक्त खूब श्रध्धा तथा भक्ति के साथ म्युजियम की सेवा में लगे रहे । उन सभी के खूब आभारी है । सभी संत हरिभक्तों के ऊपर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न है और सभी को अन्तःकरण पूर्वक आशीर्वाद प्रदान करते हैं ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

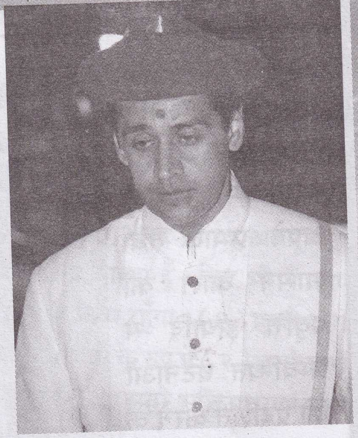

(मार्च-२०११)

५. से ९. श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्घाटन महोत्सव तथा श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव अपने अध्यक्ष सथान पर धूमधाम से किये।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापूनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर देउसणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९. श्री नरनारायण जयंती फूलदोलोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में सम्पन्न।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल पारायण तथा महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर कार्शीन्द्रा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
न्यु राणीप सत्संग सभा के प्रसंग पर पदार्पण।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर सुवर्ण जयंती महोत्सव प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण।

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर सुवर्ण जयंती महोत्सव अपने शुभ सानिध्य में धूमधाम से संपन्न किये।

(अप्रैल-२०११)

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

३. सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर खाण रजत जयंती पाटोत्सव अपने सानिध्य में सम्पन्न किये।

५. से १८. तक ओस्ट्रेलिया के धर्म प्रवास में पदार्पण।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०. प.पू. बड़े महाराजश्री के ६७ वें प्रागट्योत्सव को अपनी उपस्थिति में सम्पन्न किये।

२१. सिद्धपुर पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२३ सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२३. से २४. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्री राधाकृष्णदेव के पाटोत्सव शोभायात्रा के प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु कथा प्रसंग पर पदार्पण.

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२७. श्री भोलाभाई जोईताराम पटेल (इंटादरावाला) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण नारणपुरा।

२९. पिलवाई वेडागाँव में पदार्पण।

३०. श्री रोकडिया हनुमानजी के पाटोत्सव प्रसंग पर जीरागढ गाँव में पदार्पण।

विश्व में सर्वोपरि अपना श्री स्वामिनारायण म्युजियम

- शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामीश्री अहमदाबाद)

जगत में बहुत सारे राजे महाराजे अपनी सौख को ध्यान में रखकर अपने प्रभाव तथा शासन काल की प्रवृत्ति इत्यादि से सम्बन्धित घटनाओं को प्रदर्शित करने के लिये म्युजियम बनाते थे । कई वाते ऐतिहासिक आधुनिक युग के लिये अच्छी लगती है।

ये सभी जगत के लोगों के लिये अच्छी लगती है । हम लोगों को इसमें कोई रुचि नहीं रहती । धार्मिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो भारत देश में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम तथा लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण भगवान इस पृथ्वी पर हजारों वर्ष पूर्व हुये और कृष्ण के अनुयायी हैं, लेकिन दुःख की वात यह है कि उनके अनुयायी या उनके वंशज भगवान के उपयोग में आई वस्तु संग्रहीत नहीं कर सके हाँ उनके जन्म स्थान की जगह अवश्य मौजूद है । यह आनंद की वात है । यदि भगवान श्रीराम या भगवान श्री कृष्ण के उपयोग में आई हुई वस्तु आज सुरक्षित रखी गयी होती तो अमूल्य कींमत की होती और भक्तों के लिये आस्था का केन्द्र स्थान बनकर रहती । भक्त यह कहते कि भगवान के वस्त्र हैं, भगवान की यह पादुका है, इस वर्तन में भोजन करते थे इत्यादि ।

मुस्लिम धर्म में मुहम्मद पैगम्बर का एक वाल काश्मीर में संग्रहीत किया गया है । इसके लिये मुस्लिम में गर्व है ।

अब बात आती है अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की हमारे भाग्य की कोई सीमा नहीं है ।

४९ वर्ष तक इस पृथ्वी पर रहे उनके छपैया की बाल्यावस्था से लेकर वनविचरण के काल को छोड़ कर ३० वर्ष तक गुजरात और सौराष्ट्र में सतत विचरण किये । लाखों अनुयायी बनें । विचरण के समय जिस गाँव में पधारते वहाँ भक्तों पर प्रसन्न होकर अपना चरणारविन्द देते । दुष्काल में हरि भक्तों के घर में खाने को अनाज नहीं होता और प्रभु वहाँ पहुँचकर कहते कि कोठी को खोले विना अनाज नीचे से निकालते रहना, इससे दुष्काल भर अन्न चल जाता था । वह कोठी आज भी है । उनके धारण किये हुये वस्त्र, वासन, हस्ताक्षर के पत्र दाढी के बाल, नख, केश, इस तरह हजारों प्रकार की वस्तुये धर्मकुल परिवार को प्रसाद के रुप में मिली है। बहुत सारे संत-हरिभक्तों के घर भी मिली है । ये सभी वस्तुयें जिसके पास है वे सभी सोचते थे कि कब म्युजियम बने और एक ही स्थान पर वस्तुओं का दर्शन हों । प.पू. बड़े महाराजश्री रात-दिन, ठन्डी-गर्मी,

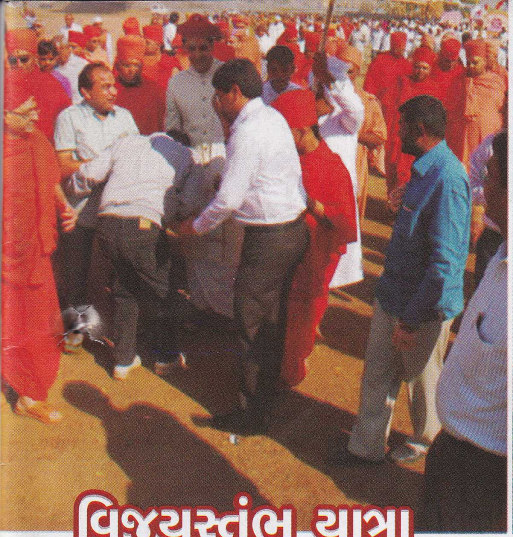

વિજયસ્તંભ યાત્રા

પોથી યાત્રા

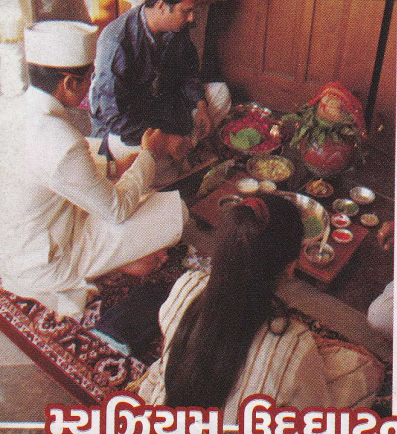

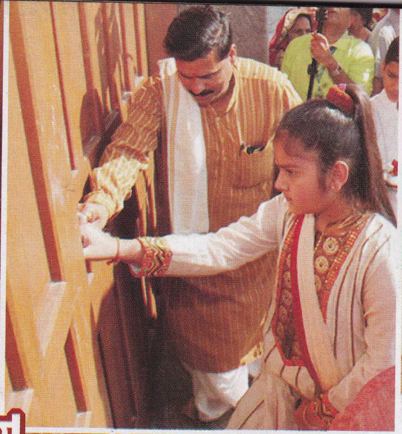

મ્યુઝિયમ-ઉદ્ઘાટન

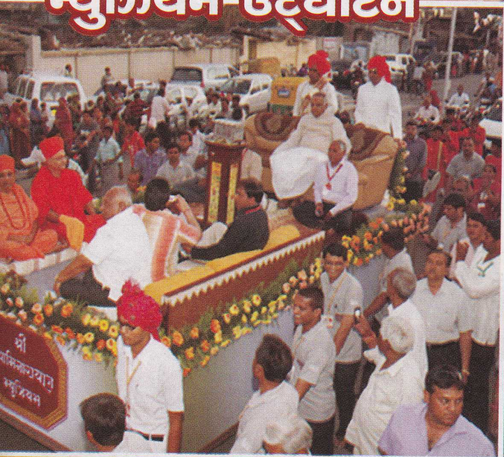

बरसात की परवाह किये विना गाँव-गाँव, शहर-शहर, देश-विदेश में हरिभक्तों के यहाँ विचरण करते रहे। इसी तरह प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी संतो को साथ में लेकर म्युजियम के लिये सतत विचरण करते रहे। विदेश के हरिभक्त जब स्वदेश आवें तब विशेष रुप से म्युजियम देखने जाते थे। वे पू. बड़े महाराज के संकल्प को श्रीजी महाराज का संकल्प मान कर बहुत प्रसन्न होते। प.पू. बड़े महाराजश्री के रुप में अपने इष्टदेव तथा उनके दादा उनके साथ है ऐसा कहकर खूब प्रसन्न होते। देखते ही देखते ५ मार्च २०११ का दिन आ गया। एक तरफ जोर शोर की म्युजियम की तैयारी दूसरी तरफ उद्घाटन का कार्यक्रम। दोनो में दूरी खूब थी। थोड़े समय में सभा मंडप, स्टेज मुख्य द्वार, भोजनालय व्यवस्था, यज्ञ मंडप, निवास व्यवस्था मंदिर का कार्य इत्यादि को देखकर ऐसा लगता था कि सभी एक साथ सम्भव है क्या ? लेकिन प्रभु के इतने चमत्कार देखे गये थे इसलिये सभी को विश्वास था कि कार्य हो जायेगा और बडी सरलता से हो भी गया। श्री स्वामिनारायण म्युजियम भी महाराज का एक चमत्कार है। यहाँ पर संत हरिभक्त रात दिन अपनी योग्यतानुरुप सेवा में लगे ही रहे। यहाँ पर पांडवो के खांडव वन में बनी हुई नगरी की तरफ बड़ा कठिन काम था। लेकिन यह महाराज का कार्य था इसलिये सरल हो गया। महाराज स्वयं इसे पूर्ण किये है। सं. २०६७ फाल्गुन शुक्ल-३ श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन ही श्री स्वामिनारायण म्युजियम का उद्घाटन समारोह भी रखा गया था।

सायंकाल श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप जब मुख्य होल में पधारे और बड़े महाराजश्री जब करोड़ो भक्तों के सामने करोड़ो लोगो के कल्याण हेतु मोक्ष के द्वार के समान श्री स्वामिनारायण म्युजियम को खोल दिये उस समय उपस्थित लाखों संत हरिभक्तों के आंखों में आनन्द की अश्रुजल धारा वह गयी। जो भी हुआ वह अपने लिये नहीं अपने आश्रितों के लिये अपने संकल्प को पूरा कर के पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री सभी से ऐसा कहने लगे कि यह म्युजियम आपकी है आप लोग एकबार नहीं अनेकों बार इसका दर्शन कीजिये। यहाँ की सभी वस्तुयें भगवान का साक्षात्कार करायेंगी। अक्षरधाम के लिये पाथेय का कार्य करेंगी।.

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

अहमदाबाद :

www.swaminarayan.in

जेतलपुर :

www.jetalpurdarshan.com

महेसाणा

www.mahesanadarshan.org

छपैया :

www.chhapaiya.com

टोरडा :

www.gopallalji.com

सर्वोपरिता गौरव

- शा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

गोपालानंद स्वामी ने लिखा है कि अक्षरधाम के अधिपति पुरुषोत्तम नारायण इस धरती पर जब पधारे तब अनंत मुक्त विविधरुप धारण करके महाराज की सेवा में रहे। विविधरुप का मतलब कोई गद्दी, कोई तकिया, कोई पात्र, कोई पलंग, पृक्ष इत्यादि रुप में सेवा कर रहे थे । यह बात गोपालानंद स्वामीने प्रकरण १ वार्ता नं. ५० में लिखा है । सज्जनो ! विषय यह है कि वे मुक्त तो यहाँ से अदृश्य हो गये लेकिन जिस रुप को धारण किये वह रुप आज म्युजियम में दर्शन दे रहा है। म्युजियम अलौकिक धाम है। अडसठ तीर्थ, चारधाम, तथा सात पुरी की यात्रा करने से भी अधिक फल म्युजियम में भगवान की प्रसादी की वस्तुयें के दर्शन से मिलने वाला है। इस लिये इस म्युजियम के दर्शन विना सभी यात्रा संपूर्ण नहीं कही जायेगी।

इन प्रसादी की वस्तुओं का महत्व बताते हुये निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है कि सूर्य उदित होता है और अस्त भी होता है लेकिन भगवान स्वामिनारायण के प्रसादी की वस्तुयें तो सदा प्रकाशमान रहती है । ये प्रसादी की वस्तुयें उन्हीं को मिलती है जिन पर भगवान की कृपा हो। सज्जनो ! सर्वोपरि परमात्मा भगवान स्वामिनारायण के संबन्धमें आयी हुई वस्तुयें अमूल्य है, इनकी महिमा अपरंपार है । संप्रदाय के ग्रंथों मं लिखा गया है कि दादा खाचर के दरबार की नरिया, छपरा, नीम इत्यादि का ध्यान करने से स्वरुपानंद स्वामी का रोग खत्म हो गया था।

जीवों के कल्याण के लिये प्रसादी की वस्तुयें आत्मनिष्ठा की अपेक्षा अधिक कल्याण कारी हैं। यह दिव्य वस्तुओं की खान है ऐसा भी कहा जा सकता है । प.पू. विश्ववंदनीय बड़े महाराजश्री की तरफ से म्युजियम की भेंट सम्प्रदाय के लिये अमूल्य धरोहर कही जायेगी। ऐसा कहा जाता है कि महा पुरुषों का संकल्प साकार होता है। सामान्य मनुष्य के विचार साकार नहीं होपाते। अपने शास्त्रों में लिखा है कि सच्चिदानंद स्वामी का संकल्प प्रत्यक्ष बना था। आज २०० वर्ष के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प प्रत्यक्ष हुआ है। जो म्युजियम के रुप में दर्शन दे रहा है।

रामायण में कथा आती है। भगवान राम सेतु बन्धकरके सागर पार किये । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने जो म्युजियम बनाया है इसमें जो आयेगा वह भव सागर से पार हो जायेगा।

पुजारी जी जब श्री नरनारायणदेव का श्रृंगार करते हैं तब प्रथम पीताम्बर धारण कराकर बाद में अलंकार धारण कराते हैं। बाद में मस्तक पर मुकुट धारण करवाते हैं। मुकुट दर्शन पूर्ण दर्शन है। सज्जनो ! पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने इस म्युजियम का निर्माण करके अपने संप्रदाय के मस्तक पर मुकुट धारण करा दिया है। बड़े महापुरुष स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करते लेकिन कार्य उनकी प्रशंसा करता है । जिस तरह पुष्प बोलता नहीं उसकी सुगंधबोलती है। वृक्ष नहीं बोलते उनका फल बोलता है।

नदी नहीं बोलती उसका जल बोलता है। वसंत ऋतु नहीं बोलती लेकिन कोयल बोलती है। इसी तरह महा पुरुष नहीं बोलते उनके कार्य बोलते हैं । मनुष्य जब बोलता है तब मर्यादित स्थान तक सुनाई देता है लेकिन उसका काम सारे विश्व में सुनाई देता है । पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री का यह कार्य सम्पूर्ण विश्व में सुनाई दे रहा है। श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये एक वाक्य में कहा जा सकता है कि "यह म्युजियम अपने संप्रदाय में सर्वोपरि गौरव है।" ऐसा अद्भुत कार्य करके संप्रदाय के लिये तथा धार्मिक जगत के लिये अर्पण करने वाले पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री के श्री चरणों में लाखों प्रणाम।

संप्रदाय का सर्व प्रथम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

का उद्‌घाटन समारोह

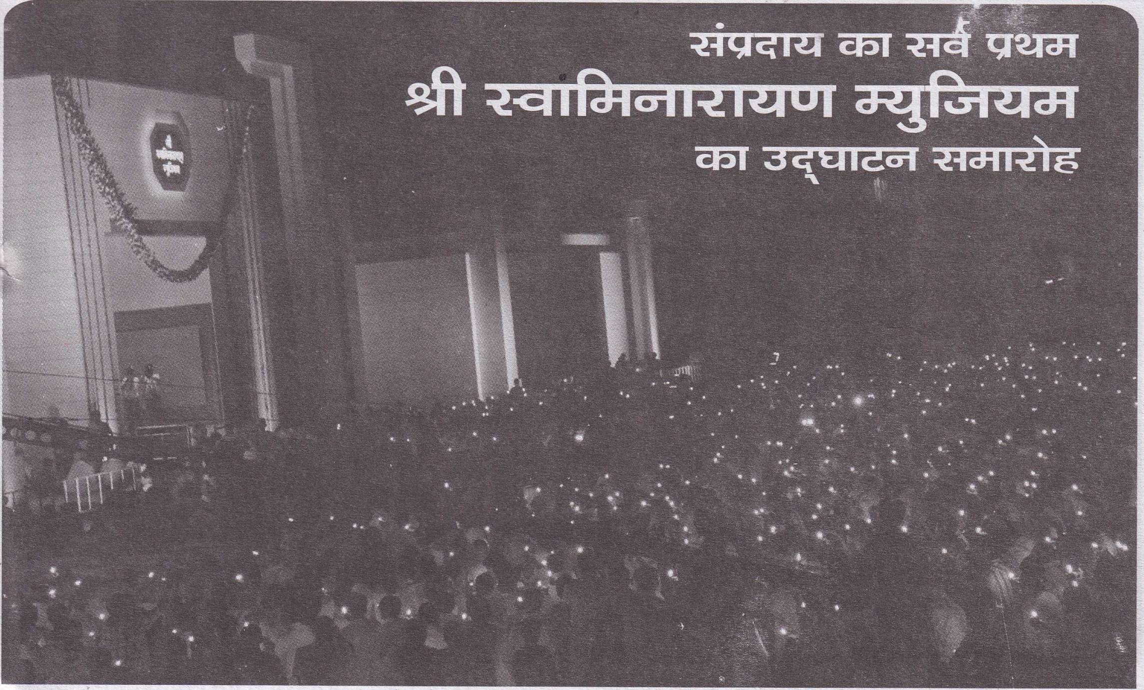

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्री नरनारायणदेव की गादी पर ३५ वर्ष तक पदारुढ रहकर संप्रदाय का पोषण करते हुए विश्व के अधिकतम देशों में धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को गादी पर प्रस्थापित करके निवृति में प्रवृति का कार्य अविरत गति से ध्येय में थोड़ा भी विराम के विना संप्रदाय में अति आवश्यक ऐसी स्वामिनारायण संप्रदाय की प्रभु के प्रसादी की वस्तुयें योग्य स्थान पर रखी जाय तथा सर्व सामान्य व्यक्ति भी उसका दर्शन कर सके इन्हीं कई कारणों को ध्यान में रखकर विश्व कक्षा का संग्रहालय बनाने का संकल्प बड़े महाराजश्री के मन में हुआ था। स्वयं भगवान ने उन्हें प्रेरणा दी अथवा भगवान स्वयं महाराजश्री के रुप में आकर इतना बड़ा दिव्य संकल्प किये और वह संकल्प पूर्ण भी हो गया। श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की मालिकी का अहमदाबाद के पश्चिम विस्तार में नारणपुरा गाँव में करीब ४ एकड़ जमीन में अति किंमती जगह में श्री स्वामिनारायण म्युजियम का शिलान्यास २००५ के वर्ष में श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के शुभ दिन किया गया था। जिसकी पूर्णता होते ही २०११ की साल में श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर उद्‌घाटन विधिकी गयी थी।

सत्संगियों के हृदय में सुषुप्त अवस्था को म्युजियम निर्माण कार्य हेतु जागृत किया गया। यह कार्य एकाकी पूर्ण होना संभव नहीं था। एक ही ध्येय एक ही लक्ष्य एक ही ध्वजा लेकर देश-विदेश-गाँव-गाँव घूमकर

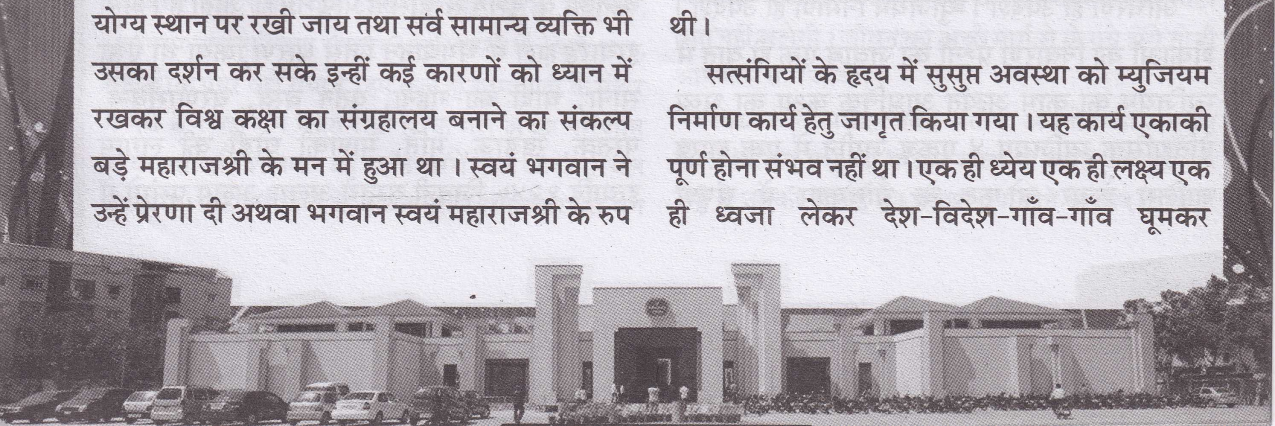

म्युजियम निर्माण का कार्य प्रचारित होता रहा। संप्रदाय में कोई भी प्रसंग हो, कोई भी उत्सव हो, सभी को एक ही वात कहते थे कि मैं म्युजियम के लिये आया हूँ। ऐसा कहकर भक्तों को अपने जैसा म्युजियम के रंग में रंग दिये।

पांच वर्ष तक देश-विदेश विचरण करके अलग अलग विचारवाले संत हरिभक्तों को म्युजियम के रस में डुबो दिये। कहीं ऋण को स्वीकार किये कहीं ऋण देकर ध्येय सिद्धि करने में प.पू. बड़े महाराजश्री स्वकार्य सिद्धि में सफल रहे।

आचरण ही उपदेश। म्युजियम निर्माण ही उपदेश। शंकाओं का निवारण प्रश्नों का जवाब एक ही वात में म्युजियम का काम अत्यंत आधुनिक कक्षा का भव्य ऐतिहासिक म्युजियम ४ एकड़ जमीन में एक लाख चालिस हजार चो.फुट के बांधकाम में संपूर्ण वातानुकूलित, ११ बड़े-बड़े हाल तथा केन्द्र स्थान में १५० x १५० का मुख्य हाल जिसे मौन मंदिर के रुप में जाना जाता है। जिस में मुख्य (मध्य) स्थान पर भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्राप्त श्री नरनारायणदेव की चल मूर्ति तथा संप्रदाय में एक मात्र भगवान श्री स्वामिनारायण के हस्ताक्षरवाला मुखत्यारनामा कोर्ट के सही स्टेम्प वाला पत्र भी वहीं पर रखा गया है। उसके पास भगवान स्वामिनारायण के दिव्य अंग भूत दाढी का बाल, बांई तरफ अस्थि (फूल) नख, केश, इतनी पांच दिव्य अलौकिक वस्तुओं के दर्शन से वासना पाप नष्ट हो जाता है। अन्य इग्यारह हाल में भगवानने जिसे धारण किया था ऐसा सोना, चांदी का गहना, वर्तन वस्त्र, चरणारविन्द, पुस्तक, खडाऊ, मूर्ति, माणकी घोड़ी की लगाम इत्यादि १२४५ जितनी वस्तुये अलग-अलग प्रसंगो में

उपयोग आई हुई प्रसंग के अनुसार चित्र में प्रदर्शित की गई है।

निर्माण के कार्य में जो प्रश्न आते उनका एक ही जवाब भगवान श्री नरनारायणदेव स्वयं कर रहे हैं। इस लिये भगवान के काम में कोई कमी न रह जाय यह ध्यान रखकर ऐसा कहकर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री भगवान का बल देकर प्रेरणा देते।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का उद्घाटन संवत् २०६७ फाल्गुन शुक्ल-३ ता. ८-३-२०११ के दिन रखा गया। देश-विदेश से हजारों हरिभक्त संप्रदाय का सर्व प्रथम म्युजियम के उद्घाटन प्रसंग पर पधारे।

ता. ७-३-२०११ को श्री स्वामिनारायण म्युजियम की वास्तु विधिकी गयी थी। प.पू. लालजी महाराजश्री तथा श्रीराजा के हाथों वास्तु विधिका घटन स्थापन किया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं सन्तों की उपस्थिति में तथा देश विदेश के हरिभक्तों की उपस्थिति में वेद विधिपुरस्सर वास्तु विधिएवं होमात्मक महा पूजा का कार्यक्रम रखा गया था।

ता. ८-३-२०११ को उद्घाटन कार्यक्रम रखा गया था, जिसकी प्रतिक्षा एक वर्ष से सभी सत्संग समाज को थी। संप्रदाय के लिये एक भव्य इतिहास का समय आया और वह था फाल्गुन शुक्ल-३ भगवान श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव का दिन। सायंकाल ७ से ८-३० तक का समय उद्घाटन के लिये निश्चित किया गया। प्रातःकाल में श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव तथा महाभिषेक ही उद्घाटन था।

सायंकाल ६-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री निवास स्थान श्री स्वामिनारायण बाग से म्युजियम की चाभी लेकर पधारे उस समय हजारों संत-हरिभक्त धूमधाम के साथ उनका भव्य स्वागत किये। आकर्षक सजावट, गगनभेदी नाद पुलिस बैन्ड की तरह स्वागत विधिसे ऐसा लग रहा था कि कोई राजाधिराज पधार रहे हैं। म्युजियम के पटांगण में उपस्थित भक्तों के आनंद की सीमा न रही, दर्शन मात्र से अपने पुरुषार्थ को सफल माना।

उद्घाटन समारोह अवसर पर गुजरात के प्रसिद्ध कलाकार देवांग पटेल जैसे म्युजियम की वात को गीत के माध्यम से आधुनिक लाईट, गगन भेदी वीर रस की ध्वनि से उद्घाटन समारोह इतना आनन्ददायी हो गया कि भक्तों को म्युजियम के बाहर जाने नहीं दिया।

रात्रि में ८-१५ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की यजमानों एवं संतो के साथ म्युजियम के द्वार को हजारों वर्ष के लिये हजारों भक्तों के लिये संप्रदाय का सर्वप्रथम म्युजियम दर्शन हेतु खोल दिया था। इस दृश्य को जिसने देखा वही इस यथार्थता को जान सकता है।

जितनी इस ब्रह्मांड की आयु है उनती उस म्युजियम की आयु होगी। इस तरह ज्योतिर्विदो ने व्यक्त किया है।

नारायणपुरा विस्तार में टर्फ स्कुल के सामने म्युजियम है। भव्य बिल्डिग तथा विशाल २०० गाडियों के पार्किंग की सुविधावाला है।

म्युजियम के दर्शन में कम से कम २-३ घन्टे समय लगता है। जिस तरह श्री नरनारायणदेव के दर्शन से तृप्ति मिलती है उसी तरह म्युजियम में स्थित प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन से तृप्ति मिलेगी इस तरह प.पू. बड़े महाराजश्री ने तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आज्ञा किया है।

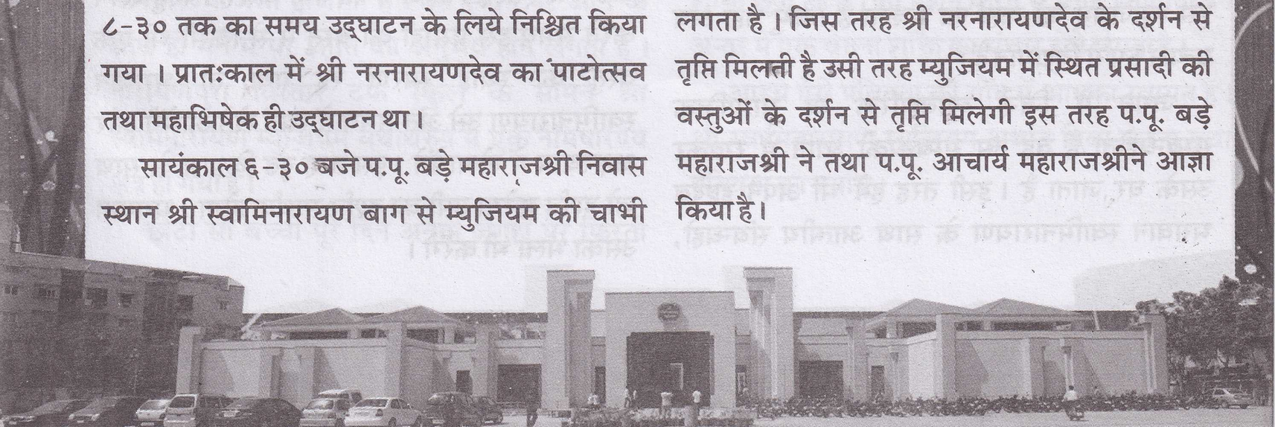

श्री स्वामिनारायण भगवान का घर

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अहमदाबाद)

हम सभी के हृदय में सदा निवास करने वाले प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम, जिस म्युजियम में अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के अंगो से स्पर्श की हुई वस्तुये तथा उनके शरीर के अमूल्य अंग जैसे नख, केश, अस्थि, मुख का दांत इत्यादि को प्रतिष्ठित किया गया है । यह म्युजियम श्रीहरि का स्वरुप तथा श्रीहरि का घर बन गया है । कारण यह कि अपने घर में ही अपनी वस्तु रहती है । अन्यत्र तो प्रवास में जितनी ले जाने की आवश्यकता होती है उतनी ही सभी ले जाते हैं । परंतु यहाँ पर शरीर से सम्बन्धित बाह्य आभ्यन्तर दोनो अटूट सम्बन्धसे विद्यमान हैं । इस लिये शरीर के रुप में इस म्युजियम को कहा जा सकता है । प्रभु यहाँ अब प्रत्यक्ष रुप से विद्यमान हैं ।

जगत में जिन्हे व्यावहारिक या सामाजिक सम्बन्धहोता हैं वह उस सम्बन्धको ध्यान में रखकर उसके घर जाता है । इसी तरह हमें भी अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के साथ आत्मीय संबन्धहो, स्नेहे या प्रेमातिशय हो तो भगवान स्वामिनारायण का घर अर्थात् श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन वारंवार करते रहने में कल्याण है, वह इस लिये कि दुनिया के जितने पदार्थ है वे क्षणभंगुर हैं नष्ट होजाने वाले है यदि उसमें बार बार स्पृहा होती हो तो जो अविनाशी है उसमें स्पृहा क्यों न हो । जिस तरह किसी घर में उसके वंशज रहते हैं, ठीक उसी तरह भगवान स्वामिनारायण के इस घर में उनके वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री दर्शन देते रहते हैं । जो अन्यत्र अति दुर्लभ है।

ऐसे अति पवित्र तथा साक्षात् भगवान के धाम का दर्शन शेषजी भी दर्शन नहीं कर सकें ऐसा है । तो अन्य की क्या वात है । परंतु दर्शन करते समय इस प्रसादी की वस्तु में से किसी भी एक वस्तु का स्थाई स्मरण रह गया तो भगवान स्वामिनारायण उसे अंत समय में स्वयं लेने आयेंगे और अक्षरधाम में लेजायेंगे । इस तरह दृढ विश्वास के साथ जो दर्शन करेगा उसी का दर्शन सार्थक होगा । भगवान उसका भला भी करेंगे ।

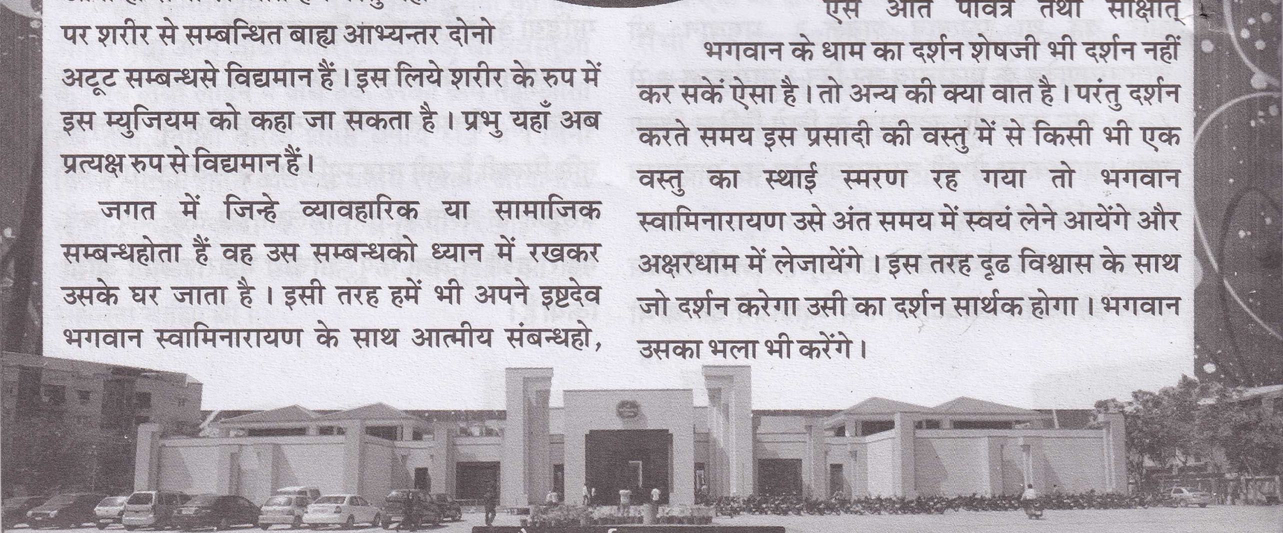

प्रसादी का जीवन्त स्वरुप

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (जमीयतपुरा - महंत स्वामी माणसा)

''बंद किधा बीजा बारणा रे वहेजी की अक्षरवाट
पुरुषोत्तम प्रगटी रे...''

पूर्ण पुरुषोतम भगवान स्वामिनारायण इस ब्रह्मांड में पहली बार पधारे । ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, पात्र-कुपात्र का विचार किये बिना सभी का कल्याण किये । जैसा जो था उसे अपनी शरीर से सम्बन्धित वस्तु देते गये । जहाँ जाते उसे तीर्थ रुप बना देते थे । चाहे वह दादा खाचर का दरबार हो या घेला नदी का किनारा हो, नीम वृक्ष का तल हो या लक्ष्मीवाडी में समी के वृक्ष का बल हो । जेतलपुर का देव सरोवर हो या मांगरोल की अडालज वावली हो । वडताल की ज्ञान बाग हो या अहमदाबाद का रंगमहोल लेकिन प्रभु को सबसे अधिक प्रिय गढडा की लक्ष्मीवाडी थी जो वृन्दावन से भी अधिक तीर्थत्व को प्राप्त हुई । अहमदाबाद की असवारी तथा पंचाला का रास स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया जो आज भी गाया जाता है । महाराज के शरीर से स्पर्शित वस्तु अनमोल होती गई । चाहे वह कीमती चादर हो या कीमती पगड़ी हो । पैर की खडाऊँ भी प्रभु के शरीर से सम्बन्धित हुई और आज सभी की सभी अलभ्य वस्तुओं का संयोग सभी के आँखो का नयन रम्य रुप बन गया है ।

एक बार महाराज घोडी से नीचे उतर रहे थे एक घास महाराज के पैर के नीचे आ गयी और वह टूट गयी । यह दृश्य मुक्तानन्द स्वामीने देखा तो पूछा कि महाराज इस घास की क्या गति होगी तब महाराज उसका उत्तर उस समय नहीं दिये। कुछ समय बीतने के बाद स्वयं उन्होंने बताया कि मेरे पैर से टूटी घास आज यह वीरा भगत बनकर आया है जो मेरी सेवा में है । जिस वृक्ष के नीचे मैं आराम किया था । जिस फूल फल का उपयोग किया अथवा जिस पशु का दूधया दही ग्रहण किया या जिस गाड़ी पर बैठ कर सवारी किया वे सभी इतनी दिव्य हो गयी कि मुक्त आत्माओं को दर्शन मात्र से मोक्ष प्राप्ति का परम साधन बन गयी । कपड़ा-

लत्ता, वर्तन, लकड़ी, तावा चिमचा, लोटा-लोटी, गिलाश, थाली जो भी सम्पर्क में आया वह सभी भवसागर पार करने का एक साधन बन गया। कितने अवतार हुये लेकिन इतना सामर्थ्य अन्य अवतारों में नहीं था कि एक घास भी सामर्थ्यवान बनी हो। दिव्यता की पराकाष्ठा आज चारों तरफ प्रगट हो रही है। मंदिर के माध्यम से वह प्रकाश चारो तरफ फैल रहा है। जिसे अपना आश्रय महा प्रभु ने दिया वे आज जंगम तीर्थ बन गये हैं। स्वामी निष्कुलानन्द जीने पुरुषोत्तम प्रकाश नामक ग्रन्थ ४७ वें प्रकरण में लिखा है कि

वळी हमारा अंगनुं अंबर रे
बहु स्पर्शेल सारुं सुंदर रे।
एक प्रसादीनुं जे षट रे
मले टले सर्वे संकट रे।
एक वस्त्र अनुपम अति रे
थाय पूजता परम प्राप्ति रे।
अति महात्म्य एनुं अतुल्य रे
कहो क्यांथी मले ऐ मूल्य रे।
जे जे अमारा सम्बन्धनी वस्तु रे
न मले गोतता उदय अस्त रे।
जणस अम संबन्धनी जेजे रे
छे ए कल्याणकारी मानी लीजे रे।
ते तो राखी छे अमे अपार रे
सौ जन ना अर्थे आ वारे रे।

इस प्रकार अनेको अमूल्य वस्तुओं को गाँव-गाँव से, जनजन से एकत्रित करना कितना कठिन कार्य था फिर भी उसका संकल्प करके पूरा किया और एक स्थान निश्चित करके श्री स्वामिनारायण म्युजियम को खड़ा किया। इस अकल्पनीय कार्य को करने वाले प.पू. प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जो स्वयं एक अजोड प्रसादी के जीवंत रुप में हैं। जिन के दर्शन से सभी जीवों का कल्याण होता रहता है। जिनके ऊपर लाखो भक्त जन अनमोल-अगणित तन-मन-धन समर्पित करके अपना ऋण उतार रहे हैं ऐसे पूज्य महाराजश्री के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

दर्शन का समय

मंगलवार से शुक्रवार : प्रातः १०-०० से सायम् ६-३०

शनिवार : प्रातः १०-०० से सायम ७-००

रविवार : प्रातः १०-०० से सायम् ७-३०

प्रवेश पास रुपये २०/- बालकों के लिये (१२ वर्ष से नीचे के) रु।. १०/-

गाडी पार्कींग रु।. २०/- तथा स्कूटर पार्किग रु।. १०/-

प्रति सोमवार को अवकाश

सूचना के लिये
फोन : (०७९) २७४८९५९७

श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारणपुरा ए.ई.सी. जोनल आफिस के पीछे,
टर्फ स्कुल के सामने, अहमदाबाद.

મહોત્સવ-ઉદ્ઘાટન

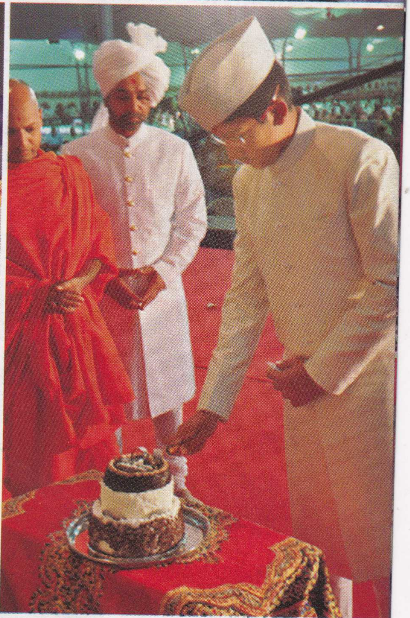

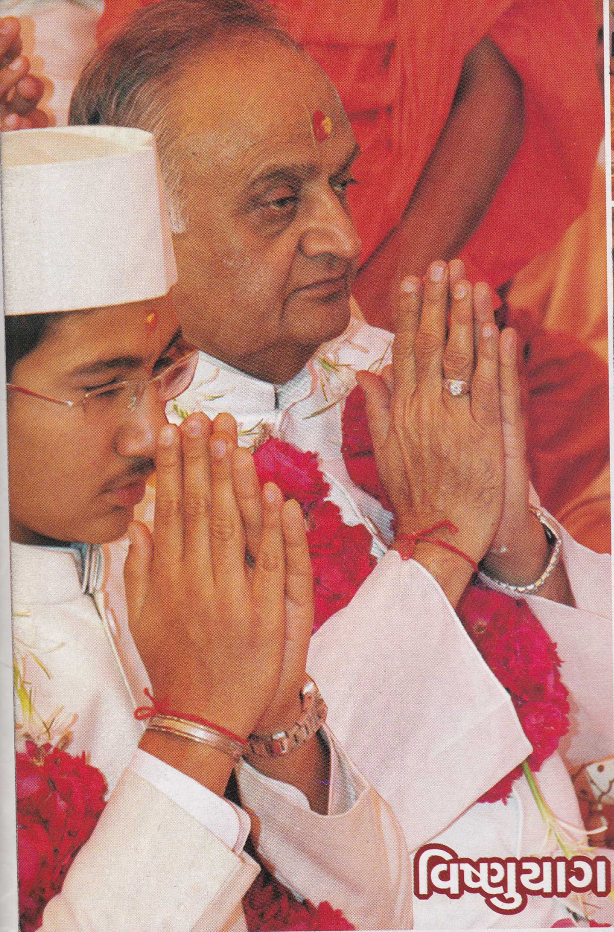

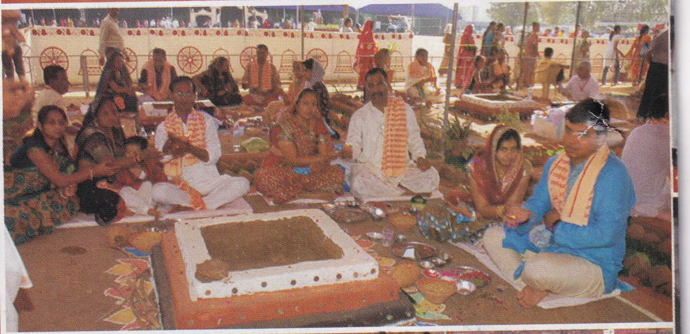
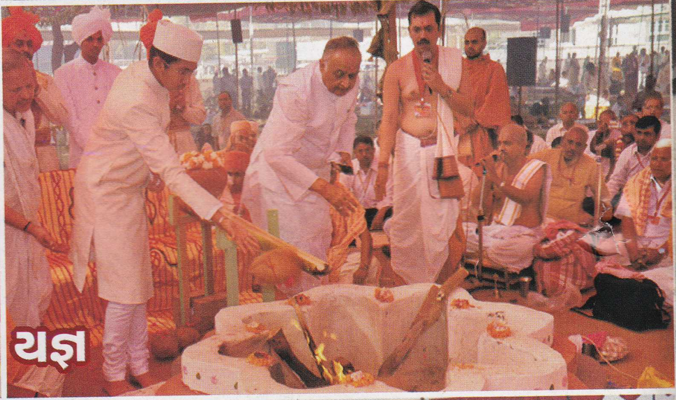

વિષ્ણુયાગ યજ્ઞ

વાસ્તુ યજ્ઞ

निःस्वार्थ भाव से किया गया दान श्रेष्ठदान

– साधु नारायण मुनिदास गुरु, महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद)

स्वर्ग के देवदूतो ने भगवान से एक बार प्रश्न किया कि दुनियां में ऐसी कोई वस्तु है जो पहाड से भी कठोर है ? भगवान ने उत्तर दिया कि लोढा पहाण से कठोर होता है। क्योंकि लोहा पहाण को भी तोड़ देता है। देव दूतों ने पुनः प्रश्न किया कि लोढा से भी कोई कठोर वस्तु है क्या ? भगवान ने कहा हाँ, अग्नि है, क्योंकि अग्नि लोढा को भी पिघला सकता है । देवदूतो की जिज्ञासा और बढ गयी। प्रभु ? अग्नि से भी कोई कठोर है। अग्नि से कठोर पानी है। कारण यह कि पानी अग्नि को भी बुझा सकता है। देवताओं ने पूछा कि पानी को हरा सके ऐसा कौन है ? भगवानने उत्तर दिया कि जो जल को भी तरंग में बदल दे वह है हवा। हवा बरसात को भी तितर-वितर कर देता है। देवदूतों ने पुनः पूछा - कि इससे भी कोई शक्तिशाली है ? भगवानने कहाँ हाँ जिसका दयालु हृदय है वह सबसे शक्तिशाली है क्योंकि जिस दाहिने हाथ से वह गुप्त दान करता है उसी के बगल में रहनेवाला वांया हाथ जान भी नहीं पाता इसलिये विना बताये गुप्त रुप से निःस्वार्थ भाव से किया गया दान सबसे श्रेष्ठ और शक्तिशाली बताया गयै है। जो दान देने वाले को सुखिया बनाकर लोक में यशस्वी बनाता है।

इस न्याय से अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्‌धाटन महोत्सव में भी बहुत सारे भक्त निःस्वार्थ भाव से सेवा किये है। इस उत्सव में छोटे-छोटे हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये। किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं रखे। मात्र इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण एवं पू. बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प को साकार करने के लिये भक्तों ने दान किया है। इस में किसी का कोई स्वार्थ नहीं है। जब पू. बड़े महाराजश्री के इस दिव्य संकल्प में कोई स्वार्थ नहीं है तो सहयोग करने वालों की भावना भी वैसी हुई और साकार रुप लिया श्री स्वामिनारायण म्युजियम।

कितनी बार यह देखा गया कि बहुत सारे बालकों के माता पिता अपने बच्चों के जन्म दिन पर या मौज मस्ती के लिये भी जो पैसे दिये वे अपने पास एकत्रित करते गये और समय आने पर म्युजियम के लिये दान कर दिये।

समझने लायक वात तो यह है कि बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति अर्थात् अपनी परम्परा में प्राप्त भगवान स्वामिनारायण की प्रसादी की वस्तु जो भी थी उसे लोक कल्याण की भावना से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये अर्पण कर दिया। इन वस्तुओं को इस तरह रखा गया है कि शांति से इनका दर्शन हो सके। संतो के पास या हरिभक्तों के पास भी जो प्रसादी की वस्तु थी उसे यहाँ म्युजियम में रखा गया है। इस उत्सव में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उत्साह के साथ तन, मन, धन की सेवा न की हो अर्थात् यथासम्भव सभी लगे रहे। सेवा करने वाले सभी का भगवान श्री नरनारायणदेव मंगल करें ऐसी प्रार्थना।

समग्र विश्व में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्वोपरि अद्वितीय महातीर्थ

श्री स्वामिनारायण म्युजियम, अहमदाबाद

- डॉ. हर्षदभाई कस्तूरचंद झींझूवाडीया (अहमदाबाद)

प्रिय सत्संगी हरिभक्तो !

हम सभी को महान सद्‌भाग्य की सच्ची पहचान नहीं हुई है इसलिये सच्चा सुखनहीं मिल सका । कस्तूरी मृग के नाभी में कस्तूरी होते हुये भी बाहर से सुगन्धआ रही है यह समझकर मृग चारो तरफ दौड़ता रहता है । ठीक यही स्थिति हमारी है कस्तूरी हमारे पास है और हम अन्यत्र दौड़ रहे है, अन्यत्र ढूंढ रहे है । यथार्थरुप से देखें तो श्रीहरि की समीपता ही हमारी सौभाग्य है उनसे दूर होना दुर्भाग्य है ।

इस पृथ्वी की उत्पत्ति जब से हुई तब से सर्वोपरि, सर्वावतारी तथा सभी कारणों के कारण ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण का अवतार न होने के कारण किसी भी जीव का आत्यन्तिक कल्याण नहीं हुआ था । उसका एक ही हार्द है कि जितने अवतार हुए उसमें कहीं भी किसी ने यह नहीं कहा कि हम इस अवतार में भक्तों का आत्यन्तिक कल्याण करेंगे लेकिन जब स्वयं श्रीहरि अवतरित हुये तब उन्होंने अपने अवतार में यह घोषणा की थी कि हम जीवात्माओं का आत्यन्तिक कल्याण करेंगे । यह सतानत सत्य आज हम सभी इसका अनुभव कर रहे हैं ? जो आश्रितजन हैं वही इस रहस्य को समझ सकते हैं अन्य को समझ आना भी असम्भव है । किसी के गले उतरे भी तो कैसे जब तक आत्मसर्पण नहीं होगा और आत्मनिष्ठा या श्रद्धा नहीं होगी । तब तक श्रीहरि के स्वरुप में निष्ठा कैसे होगी । इस कलियुग में इस सर्वोपरि संप्रदाय के हम आश्रित हैं हमें ही इस रहस्य का ज्ञान होगा अन्य को नहीं । यही हमारी सौभाग्य है ।

अपने इष्टदेव भगवान श्रीनरनारायणदेव के पीठाधिपति प्रातः स्मरणीय प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम ता. ५-३-२०११ से ता. ९-३-२०११ तक धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस महोत्सव में दोनो देश के पूज्य ब्रह्मनिष्ठ सन्त, देश विदेश के तन, मन, धन से सेवा करने वाले हरिभक्त, अनेक दर्शनार्थी हरिभक्त, तथा अन्य भक्तजन, गुजरात राज्य के अनेक सामाजिक एवं राजकीय महानुभाव तथा राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी उपस्थित होकर उत्सव की शोभा को बढाये थे ।

इस महोत्सव में पांच दिन तक सत्संगिजीवन कथा पारायण पांच दिन तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून, तीन दिन तक का श्रीहरि याग, समूह महापूजा श्री स्वामिनाराय मंदिर कालुपुर रंगमहोल में विराजमान राजाधिराज घनश्याम महाराज का अभिषेक दर्शन, इष्टदेव श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार के साथ पूजन-अर्चन अभिषेक के साथ पाटोत्सव दर्शन, छप्पन भोग अन्नकूट दर्शन इत्यादि अनेक प्रकार से श्री स्वामिनारायण भगवान का दर्शन, श्रवण, पूजन, अर्चन, इत्यादि रुप में भक्तों को अलभ्य लाभ मिला था।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के पांच दिन के महोत्सव में प्रत्येक दिन के उत्सव का दर्शन, श्रवण, पूजन का अवसर प्रायः सभी को मिला था । हमारे परिवार के ज्ञानगुरु अक्षरनिवासी परम भगवन्निष्ठ पूज्य

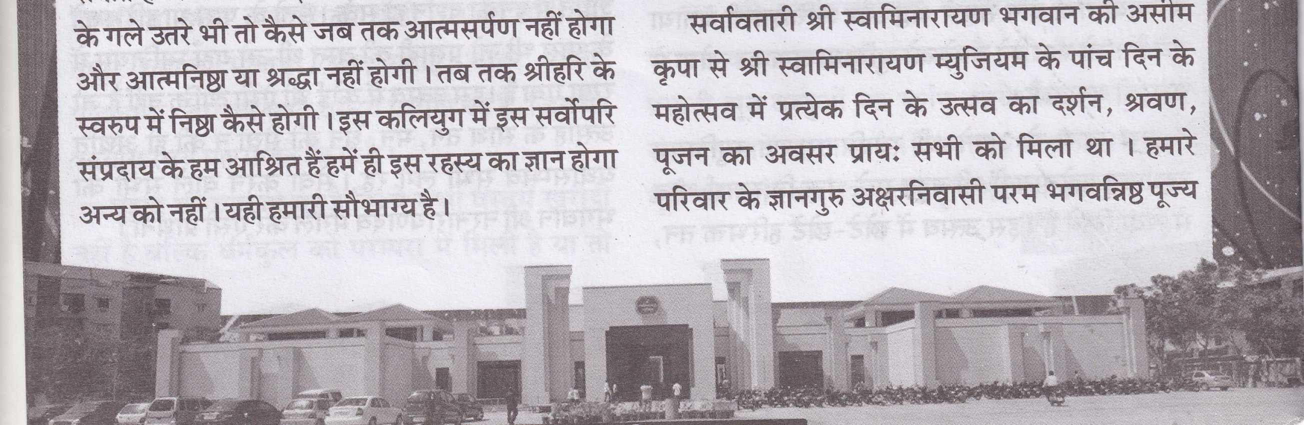

श्री मणिलाल तक्ष्मीदास भालजा साहेब (पूज्य बड़े भाई अमदावाद) के सत्संग द्वारा प्राप्त संस्कार के आधार पर इस महोत्सव के विषय में तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम के विषय में मैं अपना विचार संप्रदाय के इस मासिक पत्रिका के माध्यम से वाचक वृन्द तक पहुंचाकर आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

विश्व के सभी संप्रदाय में अलग-अलग उत्सव मनाये जाते हैं। हिन्दु धर्म में अनेक संप्रदाय हैं। प्रत्येक संप्रदाय में अपनी परंपार के अनुसार उत्सव मनाये जाते हैं। यह स्वामिनारायण संप्रदाय उत्सव प्रिय संप्रदाय के रुप में जाना जाता है। सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्सवों को मनाने की वात को गढडा के तीसरे वचनामृत में स्पष्ट किया है ''जेने भगवानना मूर्ति अन्तरमां अखंड देखाती होय तेणे पण भगवाने जे जे अवतारे करी ने जे जे स्थानकने विषे जे जे लीला करी होय ते संभारी राखवी अने ब्रह्मचारी, साधु तथा सत्संगी तेनी साथे हेत राखवुं अने ए सर्वेने संभारी राखवा। ते शा सारुं जे कदापि देह मूक्या समे भगवानना मूर्तिने भूली जवाय तो पण भगवाने जे जे स्थानके विषे जे जे तीला करी होय ते जो सांभरी आवे अथवा सत्संगी सांभरी आवे अथवा ब्रह्मचारी ने साधु सांभरी आवे तो तेने योगे करी ने भगवानना मूर्ति पण सांभरी आवे अने ते जीव मोटी पदवीने पामे अने तेनुं धणुं रुडुं थाय। ते माटे अमे मोटा मोटा विष्णुयाग करिये छीए। तथा जन्माष्टमी अने एकादशी आदिक व्रतना वर्षोवर्ष उत्सव करिये छीए। ने तेमां ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगीने भेगा करीए छीए अने जो कोई पापी जीव होय ने तेने पण जो एमनी अंतकाले स्मृति थई आवे तो तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय।''

श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रादुर्भाव का ६ कारण था जिसमें मुख्य हेतु था उनके आश्रय में जो आये उसे इस लोक में तथा परलोक में सुखी करना। प्रत्येक जीवात्मा का कल्याण करना था। जन्म मरण के बन्धन से मुक्त करना था। अक्षरधामकी प्राप्ति करानी थी। इस हेतु को सिद्ध कराने के सन्दर्भ में गढडा मध्य प्रकरण के वचनामृत में कहे गये अनुसार श्री नरनारायणदेव देश गादी के छोटे बड़े सभी मंदिरो में छोटे बड़े उत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यथावसर होते रहते हैं।

इस के अलांवा सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने विश्व के अनन्त जीवात्माओ का आत्मकल्याण हो सके इसके लिये उनके समकालीन लीला चरित्रों से सम्बन्धित उपयोग में आये हुये वस्त्रादियों का दर्शन-स्पर्श द्वारा इह लोकिक तथा पारलोकिक सुख प्राप्त हो सके इसके लिये प.पू. बड़े

महाराजश्री ने अपने मनः संकल्प से श्री स्वामिनारायण म्युजियम को साकार रुप दिया । श्रीजी महाराज ने अपने मुख से जैसा कहा था वैसा निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तम प्रकाश नाम ग्रन्थ में लिखा है कि -

वही अमारा अंगनुं अंबर रे, बहु स्पर्शेल सारु सुंदर रे ।
एक प्रसादी नुं जेह पट रे, मले टले सर्वे संकट रे ।
एक वस्त्र अनुपम अति रे, थाय पूजतां परम प्राप्ति रे ।
अति माहात्म्य एनुं अतुल्य रे, कहो क्यांथी मले एक मूल्य रे ।
जे जे अमारा संबन्धनी वस्तु रे, न मले जोवतां उदे ने अस्त रे ।
जणस अम संबन्धनी जे जे रे, छेए कल्याण कारी मानी लीजे रे ।
ते तो राखी छे अमे अपार रे, सहुजन अरशे आवार रे ।
नख शिखा लगी निरधार रे, राखी स्पर्शी वस्तु करी काट रे ।
स्परशी चीज जे बहु परकारे रे, अडी होय जे अंगे अमारे रे ।
ते तो सर्वे छे कल्याणकारी रे, माटे राखी छे अमे विचारी रे ।
एम अनेक प्रकारे कल्याणकारी रे, माटे राखी छे अमे विचारी रे ।
एम अनेक प्रकारे आज रे, बहु जीव ता करवा छे काज रे ।
आव्या छीए अमे एक धारी रे, सर्वे जीव ने लेवा उद्धारी रे ।
एम कह्युं आपे अविनाशी रे, ते तो सांभळ्यु सहु दासे रे ।
सुणी सहु थया परसन रे, कहे स्वामी श्रीजी धन्य धन्य रे ।

श्रीजी महाराज की प्रसादी की जो भी वस्तु है उसकी महिमा पुरुषोत्तम प्रकाश नामक ग्रन्थ में इस तरह लिखी गयी है । इसी महिमा के सन्दर्भ में पूज्य बड़े महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दिव्य संकल्प किया था । गढडा प्रथम के तीसरे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने जिस तरह वात कही तथा श्री पुरुषोत्तम प्रकाश नामक ग्रन्थ में जिस तरह का महत्व प्रसादी की वस्तुओं का निरुपण किया गया है उसी को ध्यान में रखकर जीवात्माओं का सर्व विधकल्याण हो इस हेतु प.पू. बड़े महाराजश्रीने इस म्युजियम के कार्य को पूर्ण होते ही पांच दिन तक महोत्सव का आयोजन किया था ।

इस पंच दिवसीय कार्यक्रम में पांच लाख से भी अधिक भक्तजन भाग लिये थे । यहाँ के नाना विधकार्यक्रमो में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन, त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग श्रीहरि की षोडशोपचार दिव्य महापूजा इष्टदेव श्री नरनारायणदेव का १८९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव, छप्पन भोग, पारायण श्री स्वामिनारायण भगवान के परिवार के छठे, सातवें, आठवें इस तरह तीनो मूर्तियों का दिव्य दर्शन, इनके आशीर्वाद श्रवण, श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उद्घाटन प्रसंग पर समूह आरती दर्शन, म्युजियम में श्रीजी महाराज के प्रत्येक प्रासदी की वस्तुओं का दिव्य दर्शन, दिव्य महाप्रसाद (भोजन) इत्यादि का सभीने लाभ लिया था । इन सभी उपरोक्त दिव्य वस्तुओं का अन्तकाल में किसी भी वस्तुओ का यदि स्मरण हो जायेगा तो वचनामृत में बताये अनुसार जीवात्माओं का अवश्य कल्याण होगा ।

इस महोत्सव के समय यदि कोई अनुभव हुआ है तो वह अधोनिर्दिष्टमैं अपना अनुभव लिख रहा हूँ :-

(१) श्री स्वामिनारायण म्युजियम महोत्सव में पूज्य आचार्य महाराजश्री त्रिपुटी का दिव्य दर्शन :-

श्री स्वामिनारायण म्युजियम प्रसंग पर तैयार किये गये विशाल सभा मंडप में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के छठे वंशजन प.पू.ध.धु. पूर्व आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, सातवें वंशज प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, आठवे वंसज भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इन तीन (पूर्व, वर्तमान, भावि) दिव्य आचार्यों का दर्शन एक साथ किसी अलभ्य लाभ की तरफ निर्देश करता है । इन तीनो मूर्तियों का आशीर्वचन मोक्षाधामक है ।

(२) अहमदाबाद देश के भावि आचार्यश्री का आशीर्वचन :-

प.पू. १०८ पूज्य लालजी महाराजश्री

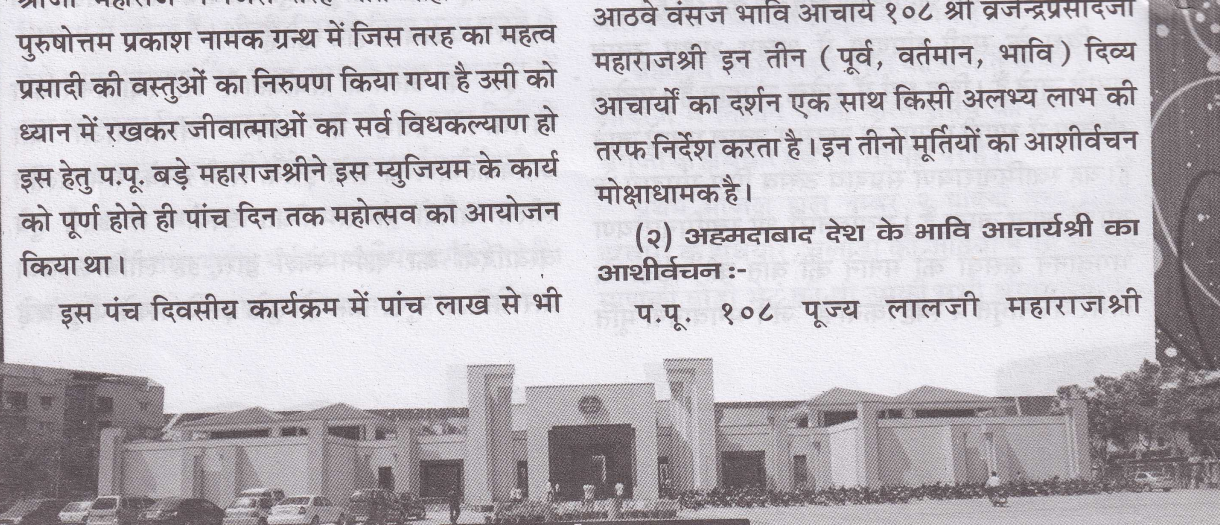

व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने मनुष्य के जीवन में चढाव उतार पर उद्बोधन देते हुये कहा कि **"Addition, Multiplication, Devidation & Deduction** पू. लालजी महाराजश्रीके आज तक के सभी उद्बोधन में आज का उद्बोधन सर्व श्रेष्ठ था। श्रोताजन को खुद के जीवन में आध्यात्मिकता कितना

महत्व है, इसका अनुभव हुआ होगा। संप्रदाय के भावि आचार्य महाराजश्री के नेतृत्व का सभी को गर्व हुआ और यह भी कि आने वाली पीढी में संत हो या गृहस्थ सभी को नियम, निश्चय, पक्ष का ऊर्ध्वगामी बल मिलेगा यह निश्चय हुआ था। पूज्य लालजी महाराजश्री की इतनी छोटी उम्र और इस तरह की आध्यात्मिकता की लहर, दिव्य वाणी का प्रवाह सुनकर सभी श्रोतागण भाव विभोर हो गये थे।

(३) Preservation Plus पर्यावरण की सुरक्षा :-

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पर्यावरण की रक्षा के लिये विशेष प्रकार का आयोजन किया गया है। इस विषय में विशेष जानकारी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दी थी। विशाल सभा मंडप में विशाल सभा में ''पर्यावरण सुरक्षा'' का बेनर लगाया गया था। इस बेनर के साथ पाचं पंखीवाला भूल भी दर्शित किया गया था। प्रारभ में इस फूल के विषय म बहुत जानकारी नहीं थी लेकिन इस बेनर तथा पांच पंखीवाले फूल के विषय में बताया गया तब खबर पड़ी। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये श्री स्वामिनारायण म्युजियम में जो उदाहरण हेतु कार्य किया गया है उसका हार्द यह है कि यह समग्र सृष्टि पांच तत्वों से बनी हुई है जिसमें (१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश समाविष्ट हैं। इन पांच तत्वों की एक समष्टि की जाय तभी पर्यावरण सुरक्षित रह सकता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये म्युजियम में पवन चक्की द्वारा तथा सूर्य शक्ति द्वारा बिजली उत्पन्न करके म्युजियम संकुल के लिये तथा प्रसादी की वस्तुओं की सुरक्षा के लिये अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है। इस आयोजन से म्युजियम का खर्च कम हो जायेगा और स्थायी देखरेख में सहायता होती रहेगी। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये गुजरात सरकार भी कटिबद्ध है उसकी भी सहायता हो रही है।

(४) पूज्य बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प अर्थात् श्री स्वामिनारायण म्युजियम :-

पू. बड़े महाराजश्री ने इस महोत्सव के विशाल सभा में प्रतिदिन पधारते थे। पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री भी इस सभा में प्रतिदिन पधारकर सभी को दिव्य दर्शन का लाभ तो देते ही थे साथ में अपनी दिव्य वाणी द्वारा शुभाशीर्वाद से अभिषिक्त करते थे। पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वाद से अभिषिक्त करते थे। पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वचन में श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दिव्य संकल्प के विषय में बताते हुये कहा कि ''हमारा यह दिव्य संकल्प श्रीजी महाराज को दिव्य संकल्प है। इसीलिये मूर्त स्वरुप में यह म्युजियम प्रकाशित हो रहा है। हमारे वंश परंपरा में प्राप्त महाराज के प्रसादी की वस्तु समग्र सत्संग के काम में आवे इसलिये यह संकल्प जब

मैं लालजी महाराज था तब पू. बापूजी अ.नि. श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को बताया था । उस समय का संकल्प इष्टदेव श्री नरनारायणदेव ने तथा हमारे दादा श्री स्वामिनारायण भगवानने पूर्ण किया है । अब हमारे जीवन में कोई अन्य संकल्प नहीं है । भविष्य में कोई संकल्प करना भी नहीं है । पू. बड़े महाराजश्री की ऐसी दिव्य वाणी सुनकर सभी खूब प्रसन्न हुये थे और भाव विभोर भी हुये थे । यह अमृत वचन जब उनके मुख से निकल रहा था उस समय उनका मुखारविन्द आनंद से परिपूर्ण लग रहा था । संतोष तथा पूर्ण शांति का अनुभव हो रहा था । इसका असर सम्पूर्ण सत्संग समाज पर बड़ा था और सत्संग के लिये यह अविष्मरणीय पाथेय साबित होगा ।

(५) पूज्य बड़े महाराजश्री का अभिनन्दन :-

इस उत्सव प्रसंग पर जो भी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये वे सभी बड़े भाग्यशाली है जिन्हें पू. बड़े महाराजश्री, पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मंदिर द्वारा प्रकाशित श्रीजी महाराज की दिव्य मूर्ति एम.पी.-३ केसेट, महोत्सव के स्मृतिचिन्ह से अंकित सुन्दर शाल से समानित किया गया था । ऐसे सन्मान प्रसंग के बाद पूज्य बड़े महाराजश्रीने अपने दिव्य आशीर्वचन में आनन्दित करने के लिये कहने लगे कि ''इस उत्सव में जिन सत्संगियों ने सेवा की है उन सभी का शाल इत्यादि द्वारा सन्मान किया गया है । इस म्युजियम के लिये हमने श्रीजी महाराज की प्रसादी की वस्तुयें समर्पित की है तो आप लोग इसके बदले में हमें क्या देंगे ? ऐसे आनन्द भरे शब्दों के बाद पू. बड़े महाराजश्रीने कहा कि आप लोगोने आज तक जो कुछ हमें समर्पित किया है वह सभी भाव, प्रेम, स्नेह से समर्पति किया है, आज जो म्युजियम के लिये समर्पित भाव से तन, मन, धन एवं प्रसादी की वस्तु भेंट की है वही मेरा सन्मान है, इससे अधिक और क्या चाहिये । पू. बड़े महाराजश्री की ऐसी दिव्य वाणी सुनकर समग्र सत्संग समाज भाव विभोर हो गया था और पू. बड़े महाराजश्री भी अपने उद्‌गार प्रगट करते समय भाव विभोर हो गये थे । इस उत्सव समिति के अग्रणी संत, हरिभक्त तथा मंदिर के ट्रस्टी इत्यादि सभी ने पू. बड़े महाराजश्री का फूलहार से अभिवादन किया था । इन अभिवादन में सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने स्थान से उठकर पू. बड़े महाराजश्री के पास जाकर अपनी लाल पगड़ी उतारकर चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । इसी तरह पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद प्राप्त किया । यह दिव्य दर्शन देखकर समग्र सत्संग समाजने भाव विभोर अश्रु प्रवाहित नेत्रों से नत मस्तक होकर पू. बड़े महाराजश्री को यथा स्थान रहकर प्रणाम किया था ।

(६) श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्‌घाटन समारंभ :-

श्री स्वामिनारायण म्युजियम महोत्सव के समय ता. ८-३-११ को सायंकाल ७-०० से ९-०० बड़े तक नारायणपुरा के विस्तार में कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर द्वारा संचालित टर्फ हाईस्कुल के सामने तैयार किये गये श्री स्वामिनारायण म्युजियम के कार्यक्रम का मंगल आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में लेशरशो, श्री घनश्याम महाराज प्रादुर्भाव महोत्सव, श्री पंचाला का रास, श्री माणकी घोड़ी ऊपर सवार श्री घनश्याम महाराज साथ में संत, हरिभक्तों का दर्शन, उद्‌घाटन समारंभ में उपस्थित सभी हरिभक्त समाज द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युजियम की समूह आरती, उद्‌घाटन समारंभ के यजमान द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री को म्युजियम स्थान की चाभी अर्पण विधि, पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री के साथ पू. बड़े महाराजश्री द्वारा श्री स्वामिनारायण म्जुयियम का द्वार खोलकर उद्‌घाटन विधि, म्युजियम

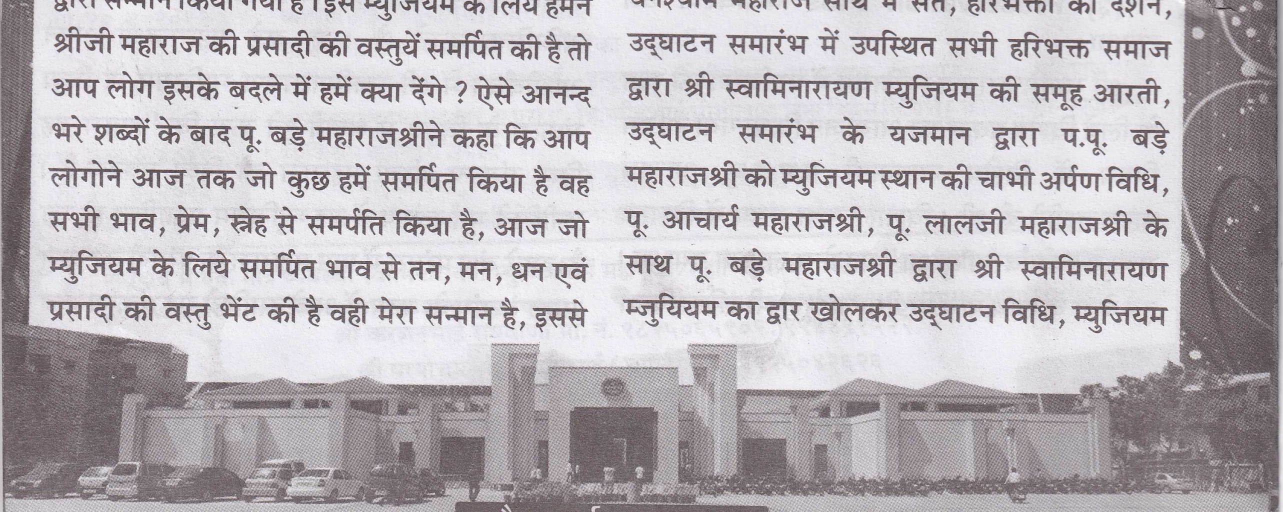

में पूज्य आचार्य त्रिपुटी का तथा पू. सन्तों एवं हरिभक्तों के साथ म्युजियम में मंगल प्रवेश । म्युजियम में स्थापित प्रसादी की वस्तुओं का आयोजन बद्ध सभी का दर्शन ।

(७) श्री स्वामिनारायण म्युजियम की समूह आरती का दिव्य दर्शन :-

उपरोक्त नियमानुसार श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उद्घाटन प्रसंग पर उपस्थित प्रत्येक नर नारी सत्संगी हरिभक्तों द्वारा सुन्दर आरती का आयोजन किया गया था । रात्रि में ८-०० बजे समूह आरती के अवसर पर लाईट को बन्द कर दिया गया था । मोमवत्ती तथा दीपक से आरती की गयी थी । उस समय प्राकृतिक दृश्य का अनुभव हो रहा था । इस म्युजियम में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की जितनी लीलाचरित्र के समय में थी वे सभी संग्रहीत करके एक स्थान पर रखकर उन्हीं की आरती की गयी थी । अर्थात् उन वस्तुओं के रुप में साक्षात् श्रीहरि की ही आरती हुई यह समझना चाहिये । इस आरती का लाभ लेने वाले प्रत्येक सत्संगी बड़े भाग्यशाली हैं ।

(८) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का दिव्य दर्शन :-

समग्र विश्व में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का श्री स्वामिनारायण म्युजियम मुमुक्षु जीवात्माओं के आत्यन्तिक कल्याण के लिये इस म्युजियम महाराज की प्रसादी की वस्तुयें दर्शनार्थ रखी गयी है । इन प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करते समय श्रीहरि का स्मरण हो आवे और यह भाव आजाय कि प्रभु ने अपनी शरीर में अमुक स्थान पर धारण किया था तो उनके साक्षात् दर्शन की अनुभूति होगी । सामान्य ढंग से समझने की बात इस तरह से हो सकती है - जैसे महाराज के चरण की मोजड़ी का जब दर्शन करते हो तो उस समय वह भाव आजाय कि प्रभु अपने पवित्र कमल के समान चरण में इसे धारण किये थे । इसी तरह वस्त्र, पगड़ी तथा अन्य वस्तुओं का भी समन्वय करना चाहिये, इससे आत्मशक्ति ही नहीं बल्कि तत्कालीन नानाविधिदिव्यलीलाओं का स्मरण हो जायेगा और परमशांति की अनुभूति होने लगेगी । प्रेमानन्द स्वामी द्वारा रचित श्रीजी महाराज के स्वाभाविक चेष्टा का भी याद आये विना नहीं रहेगा -

प्रेमानंद नो नाथ चलु करे रे, मोहन तृप्त थई ने ।
दांत ने खोतरे रे, सली रुपानी लईने ॥
मुखवास लईने रे, ढोलिये बिराजे ।
पूजा करे रे, हरिजन हे ते साजे ॥

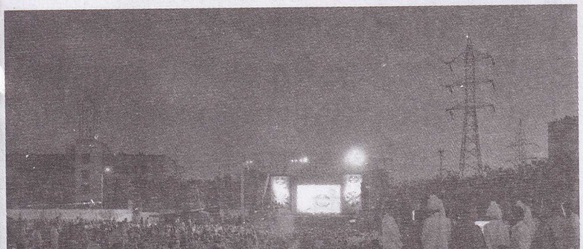

जेतलपुर के यज्ञ में विघ्न संतोषी लोग घी-सीधा सामान सभी लेजाकर देव सरोवर में डाल आये और यज्ञ में जितने विघ्न हो सके सभी प्रकार के प्रयत्न किये । लेकिन महाराज ने अक्षयपात्र द्वारा (चर्म कुंड द्वारा) पुनः घी तथा अन्य भोजन सामग्री पूर्णता को प्राप्त हो गई, जिस अक्षयपात्र का म्युजियम में आज भी दर्शन हो रहा है तो क्या तत्कालीन दृश्य दर्शन में समाया नहीं है । जेतलपुर के यज्ञ में गेहूँ पीसने का काम एक गणिका को महाराज ने दिया, वह गणिका जिस चक्की से स्वयं आंटा पीसी थी आज वह चक्की यहाँ म्युजियम में रखी गयी है ।

जिस तरह महाराज ने मुक्तानंद स्वामी का कल्याण किया उसी तरह उस गणिका का भी कल्याण किया। वह चक्की आज सभी के दर्शनार्थ म्युजियम में रखी गयी है उस चक्की के दर्शन में महाराज के दर्शन की अनुभूति होती है। प्रेमानंद स्वामी द्वारा रचित श्रीहरि की स्वाभाविक भावना का दर्शन होता है-

अति दयालु रे, स्वभाव छे स्वामी नो।
पर दुःखहारी रे, बारी बहु नामी तो ॥
कोई ने दुखियो रे, देखी न खमाय।
दया आणी रे, अति अकणा थाय ॥
अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दुःख टाले।
करुणा दृष्टि रे, देखी वानज वाले ॥

उनावा गांव में जब महाराज पधारे उस समय मूलजी ब्रह्मचारी ने रामदासभाई पटेल के घर में हलुआ बनाकर श्रीहरि को जिस लोटे में बनाकर अर्पण किये और बाद में उस प्रसाद को अनन्त लोगो में बाटने पर भी खत्म नहीं हुआ, वह अक्षय पात्र आज म्युजियम में सभी को अक्षयवरदान दे रहा है।

मूली के रंगोत्सव के समय जिस तरह महाराज संत-हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव किये ठीक वही स्थिति आज यहाँ म्युजियम में दिखाई दे रही है।

बीजापुर की बजीबा के घर का दरवाजा तथा प्रसादी के पीपल की जड़ यहाँ म्युजियम में दर्शनार्थ रखी गयी है।

म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के जन्म जयन्ती के अवसर पर श्रीजी महाराज ने जो धोती तथा उत्तरवस्त्र धारण किया था तथा रंगोत्सव के समय जो पिचकारी धारण किया था वह सभी दृश्य रंगोत्सव का यहां साक्षात् दर्शन हो रहा है।

डांगरवा गाँव के वेणीराम भक्त तथा श्री जतनबा के घर जिस तांबा के वर्तन में से दूध, दहीं, घी तथा माखन की अखंडधारा श्रीहरि बहाये थे वह पात्र आज यहाँ म्युजियम में साक्षात् उस रुप का स्मरण कर रहा है। उस दिव्य लीला का अनुभव सभी को हो रहा है।

म्युजियम में दर्शन करते समय कुंडाल गाँव के श्री कला भगत की महाराज ने जिस लोहे के धधकते गोले से परीक्षण के समय रक्षा की वह तद्रुप दृश्य सामने आजाता है। कला भगत धधकते गोले को महाराज के नाम का स्मरण करते हुये ग्रहण कर लिये थे। हाथ में फूल जैसा आभास हुआ था।

करजीसण गाँव के हरिभक्त श्री गोविन्दभाई के घर श्रीजी महाराज १५ दिन तक संत-हरिभक्तों के साथ रुके थे, उस समय उनके मन में भोजन कराने की समस्या दिखाई दी थी, मन में विचार आया था कि १५ दिन तक कैसे संभव होगा। महाराज उन का संकल्प जानकर उनसे कहे कि जो आपकी अनाज की कोठी है उसका ढंकन ऊपर से बन्द कहे के नीचे से अनाज लेते रहियेगा, ऊपर देखना नहीं। वह अक्षय कोठी आज दर्शनार्थ म्युजियम में रखी गयी है। उसके दर्शन में सभी को अक्षय दर्शन का फल मिल रहा है।

म्युजियम में महाराज के चरणारविंद का दर्शन मोजड़ी का दर्शन, पीताम्बर, धोती, उत्तरीयवस्त्र शाल, पगड़ी, इत्यादि वस्त्रों का दर्शन, जिन पात्रों में भोजन करते उन पात्रों का दर्शन महाराजके समकालीन सिक्का का दर्शन, सोना, चांदी, हीरा इत्यादि के आभूषणों का दिव्य दर्शन, श्रीहरि के समकालीन वस्त्रों का दर्शन, तत्कालीन अश्वों के श्रृंगार का दर्शन, श्रीजी महाराज के दिव्य हस्ताक्षर का दर्शन, श्रीजी महाराज की कुंडली का दर्शन, श्रीजी महाराज के नन्द संतो के द्वारा हस्त लिखित ग्रन्थों का दर्शन, श्रीजी महाराज के समकालीन संगीत वाद्य यंत्रो का दर्शन, श्रीजी महाराज के समकालीन वहेलाल गाँव के जेसिंगभाई के घर की सीढी का दर्शन, श्रीजी महाराज के समकालीन

बैलगाडियों का दर्शन, सगराम तथा हाथी के हौदे का दर्शन, देश विभाग के लेख का दर्शन, श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज से लेकर श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज तक प्रत्येक आचार्यों के छायाचित्र का दर्शन, पू. बड़े महाराजश्री, पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री इन तीनों का सचित्र छाया दर्शन श्रीजी महाराज के नख, केश, अस्थि का दिव्य दर्शन, श्रीहरि द्वारा पूजित श्री नरनारायणदेव की दिव्य मूर्ति का दर्शन, श्रीहरि के चरणारविन्द में प्रत्येक चिन्हों का निरुपण करने वाले कम्प्यूटरका दर्शन, श्री कुबेरसिंहजी को जो मुखत्यार नामा लिखे वे उसका दर्शन, श्रीहरि के अनेकों प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन, यहाँ के श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शन हो रहा है। अन्त में ओडीटोरियम में श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अमदावाद द्वारा होने वाली अनेक प्रवृत्तियों का दर्शन यहाँ के म्युजियम में महत्व का स्थान प्राप्त किया हुआ है।

यहाँ पर श्रीहरि के प्रसादी की करीब १२०० से भी अधिक वस्तुयें प्रतिष्ठित की गयी है। उन प्रत्येक प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन अर्थात् साक्षात् श्रीहरि का दर्शन हो रहा है यह भाव मन में रखकर जो दर्शन करेगा उसे निश्चित ही हरि के दिव्य दर्शन की अनुभूति होगी। समग्र म्युजियम में प्रसादी की सभी वस्तुओं का दर्शन करें और दर्शन करते समय तन्मय भाव से करें तो एक विशेष शांति का अनुभव होगा। इस महान तीर्थराट के उद्घाटन प्रसंग पर मुझे दर्शन का जो सुनहरा अवसर मिला था वह मेरी अहो भाग्य थी। इसी तरह सारे मुमुक्षुओं के लिये अमनोल अवसर था।

पूज्य बड़े महाराजश्री को जो दिव्य संकल्प हुआ था वह साकार न हुआ होता या संकल्प ही नहीं किये होते तो महाराज की प्रसादी की वस्तुओं का सारे सत्संग समाज को सरलता से दर्शन कैसे संभव होता ? बड़ी भाग्य की बात तो यह है कि अलभ्य प्रसादी की वस्तुयें स्वतः प्रेरणा प्राप्त करके सन्त तथा हरिभक्त अपने पास से पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण कर दिये और उसका लाभ सारे सत्संग समाज को मिल रहा है। ऐसे पूज्य तीनो आचार्यश्री के चरणों में कोटि-कोटि वंदन जिन्होंने त्यागमय जीवन कोम्युजियम का रुप दिया।

इस म्युजियम में अनेक पूज्य संत तथा परमादरणीय सत्संगी हरिभक्त अपने पास से प्रसादी की वस्तु पू. बड़े महाराजश्री को अर्पित किये है। इन अलभ्य प्रसादी की वस्तुओं को बैंच कर लाखो रुपये प्राप्त कर सकते थे फिर भी प्रसादी की वस्तु में दैवत्व समझकर पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये तथा श्रीहरि की कृपा प्राप्त करने के लिये म्युजियम हेतु समर्पित कर दिये। प्रसादी की वस्तु भेंट करने वाले पूज्य सन्तो तथा हरिभक्तों के चरणों में कोटि-कोटि वंदन।

इस पृथ्वी पर जितने भी मंदिर या हरि मंदिर में श्रीहरि के स्वरुप प्रतिष्ठित है वे सभी इस पवित्र धाम म्युजियम में प्रतिष्ठित हो गये हैं। यह म्युजियम संप्रदाय के लिये ही नहि अपितु विश्व कक्षा के विशिष्ट फलक पर अद्वितीय, अलौकिक यह महातीर्थ राज है इस तरह का इसे विशेषण मिला है।

(९) श्री स्वामिनारायण म्युजियम का स्वमुख से सुमधुर अमृतवाणी :-

वर्षो पहले टी.वी. के माध्यम से महाभारत का सीरीयल आता था। इस प्रसार का उद्‌धोधन स्वयं समय था। अर्थात् समय स्वयं पार्श्वभूमिका में (परदे के पीछे) रहकर अपनी सुमधुर आवाज में प्रभावशाली कंठ द्वारा समग्र महाभारत के प्रत्येक प्रसंग की जानकारी देते थे, इसी तरह यहाँ भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उदघाटन समारंभ में प्रत्येक प्रसंग पर श्रोताओं को सुनने का अवसर मिला। विशाल मंच के ऊपर विशाल परदे

के पीछे रहकर सुमधुर तथा प्रभाव शाली कंठ द्वारा अपने जन्म से लेकर आजतक अपने सभी विवरणों को प्रस्तुत करने वाला स्वयं श्री स्वामिनारायण म्युजियम था । यद्यपि व्यक्ति कोई था नहीं, जब इस यथार्थता की सभी को जानकारी हुई तो वहाँ स्वयं श्री स्वामिनारायण म्युजियम अपने अपना स्वरुप की यथार्थता का निरुपण कर रहा है । इस दिव्य संकल्पनाके पीछे स्वयं प.पू. बड़े महाराजश्री थे । प.पू. बड़े महाराजश्री ने अपनी दिव्य वाणी द्वारा इसी तरह प्रस्तुतीकरण किया था । जिसका श्रवण करते सभी उपस्थित समुदायने आश्चर्य के साथ जीवन की सार्थकता माना था ।

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय सर्वजीव हितावर संप्रदाय है । सभी जीव के कल्याण के लिये इसलोक में प्रादुर्भाव होने वाले अक्षरधाम के अधिपति भगवान स्वामिनारायण के विषय में स्वामी निष्कुलानंदजी लिखते हैं कि

अक्षरथी पर पुरुषोत्तम जेह, तेणे धर्यो मनुष्यनो देह ।
तेना दर्शन स्पर्शन क्यांथी ? ते तो विचारो ने मनमांथी ॥

इसके अलांवा भगवान स्वामिनारायण अपने मुख से सर्वोपरिता का तथा दयालु सर्वजीवहितावह स्वभाव के विषय में बताते हैं कि –

पछी प्रभुजी बोलिया, तमे सांभणो सर्वे जन ।
ज्यारे प्रभु ने पामिये, त्यारे सर्वे थया साधन ।
पछी जे जे करुं, तेहनी ते कहुं वात ।
गुरु संत संत ने भजवा, श्रीहरिने साक्षात् ।
मारा जनने अंतकाले, जाकर मारे आववुं ।
विरुद मारुं ए न बदले, ए सर्वे जन ने जणाववुं ।
दासना दास थईने, जे रहे सत्संग मां ।
भक्ति तेनी भली मानीश, राचीश तेना रंग मां ।
ते माटे तमे सांभळो, सत्संगी सहु नरनार ।
जे जे थाय छे जगतमां, तेनो बीजो नथी करनार ।
सुख दुःख आवे सर्वे भेडु, तेमां राखजो स्थिर मति ।
जाडवीश मारा जन ने, वड़ी करीश जत अति ।
एम करतां जो पंड पडशे, तो आगण सुख दे अति धणुं ।
पण व्रत टेक जो टाळशे तो, भोगवशो सहु सहु तणुं ।
नहिं तो तमे नचिंत रहेजो, करवुं तमारे कांई नथी ।
जे मळया छे तमने, ते पारके अक्षरथी ।

प्रिय सत्संगी हरिभक्तों ! हमें इस संप्रदाय में जो कुछ प्राप्त हुआ है वह अति अमूल्य है । वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं कि ''गायकवाण राजा का बेटा मूली के लिये रोयेगा ? इस कलियुग में हमारी कुछ ऐसी ही स्थिति है । अपनी प्राप्ति के मूल्यांकन के लिये तथा सरलता से जीवात्मा का कल्याण हो इसके लिये संप्रदाय में हम सभी के प्राण प्यारे परम पूज्य बड़े महाराजश्री ने हम सभी पर अहेतुकी कृपा करके श्री स्वामिनारायण म्युजियम को अर्पण किया है । जिससे सभी के कल्याण का मार्ग खुल गया है । इस प्रसंग पर निष्कुलानंद स्वामी के शब्द याद आते हैं :

हशे जीवने जावानुं बीजे रे, जावुं पडसे रीजे खीजे रे ।
एवो अभागी कोई न कहेवाय रे, जे आ समां मां रही आय रे ।

इस स्वामिनारायण म्युजियम में रखी गयी प्रसादी की वस्तु का अन्त काल में याद आजाय तो सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण को याद आगयी ऐसा समझना चाहिये, क्यों कि भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में वचन दिया है, उस वचन को सार्थक करने के लिये वे अवश्य पधारेंगे इष्टदेव भगवान नरनारायणदेव, भगवान स्वामिनारायण प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के चरण में कर बद्ध प्रार्थना के साथ विराम लेता हूँ, जय श्री स्वामिनारायण ।

श्रीहरि को प्रसन्न करने का श्रेष्ठ साधन अर्थात् सेवा

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

भगवान को प्रसन्न करने के लिये शास्त्रों में अनेकों उपाय वताई गई है । परन्तु अनुभव से यह सिद्ध होता है कि भगवान के सम्बन्धवाली सेवा भगवान को प्रसन्न करने का श्रेष्ठ साधन है । वैसे प्रभु ने शिक्षापत्री के १२१ वें श्लोक में लिखा है कि

मतं विशिष्टाद्वैतं मे गोलोकोधाम चेप्सितम् ।

तत्र ब्रह्मात्मना कृष्ण सेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ।।

हमारा मत विशिष्टा द्वैत मत है तथा सबसे प्रिय धाम गोलोकधाम है । उस धाम में ब्रह्मरुप में रहने वाले भगवान श्रीकृष्ण की सेवा करनी चाहिये वही मुक्ति है ।

वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि मलिन वासना हो तो सेवा कनरे से नष्ट हो जाती है । उका खाचर का नाम लेकर कहते हैं कि प्रेम पूर्वक भगवान की या भगवान के भक्त की सेवा करने से मलिन वासना नष्ट होजाती है । ग.म.प्र. ४१ वें में श्रीहरि कहते हैं कि ''भगवान तथा भगवान के भक्त की सेवा करना बड़ी भाग्य है । यह सेवा अपने कल्याण के लिये करनी चाहिये । ग.म.प्र. ४३ वें में कहे हैं कि भक्त चतुर्धा मुक्ति की भी चाहना नहीं करना, मात्र सेवा की चाहना रखता है । उसे ही निष्काम भक्त कहाजाता है । ऐसे भक्त को भगवान अपने ऐश्वर्य से सुखी करते हैं । वहीं के ६३ वें वचनामृत में कहे है कि भगवान की या भगवान के भक्त की सेवा के बराबर दूसरा कोई उपाय नहीं है । सत्संग की मां के रुप में कहे जाने वाले मुक्तानंद स्वामीने भी कहा है कि ''नीची टेल मले तो मानो मोटा भाग्य जो ।'' जितनी नीची सेवा उतनी भगवान की अधिक प्रसन्नता । श्रीहरि चरित्रामृत सागर में कहा गया है कि समाधि, ध्यान, धारणा, जप, तप, तीर्थ, दान, पुण्य तथा आत्मनिष्ठा इन साधनो का फल सेवा है । सेवा विना का साधन फल के विना वृक्ष है । इन्द्रादि सभी सेवा करके ही बड़े स्थान को प्राप्त किये हैं । एकदिन भी श्रीहरि की सेवा करने वाला कृतार्थ होजाता है । भरत खंड में मनुष्य शरीर प्राप्त करके जिन्हे श्रीहरि की सेवा का अवसर नहीं मिला उन्हें कुछ भी नहीं मिला । श्रीहरि की सेवा करने से मायिक शरीर दिव्य बन जाता है ।

श्रीहरिने सत्संग में देव तथा आचार्य को मोक्ष का साधन माना है । देव तथा आचार्य के निमित्त से संप्रदाय में नाना विधउत्सव होते रहते हैं । इन उत्सवों में पू. महाराजश्री की आज्ञा हो तो धन, मन, धन से समर्पित हो जाने से कल्याण है।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान से इस तरह के अनेकों उत्सव होते रहते हैं। जिस में श्री स्वामिनारायण म्युजियम अभी वर्तमान में सम्पन्न हुआ है । इस कार्य में छोटे-बड़े सभी

तन, मन, धन से समर्पित होकर श्रीहरि की प्रसन्नता के पात्र बने थे ।

प्रत्येक उत्सव में विजय स्तम्भ की स्थापना की जाती है । इस कार्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ समग्र सत्संग जुड जाता है । खूब उत्साह के साथ उत्सव की तैयारी होने लगती है । यहाँ तक मैं ने सेवा की चर्चा की अब अनुभूति की चर्चा करता हूँ । महोत्सव में भक्तजन अलग-अलग ढंग से शारीरिक सेवा में लगे रहते हैं । कोई झाडूं लगाते हैं, कोई पोता लगते हैं, कोई यज्ञशाला में लीपते हैं । इस क्रिया के समय जब प.पू. महाराजश्री पधारते हैं उस समय भक्तजन पू. महाराजश्री को प्रणाम करने के लिये हाथ जोडते हैं और महाराजश्री उन्हें आशीर्वाद देते हैं, उस समय ऐसा लगता है कि मानो भगवान प्रसन्न होकर उनके ऊपर कृपा वरसा रहे हैं ।

उत्सव के आदि में तथा उत्सव के अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री स्वयं सेवकों को बुलाकर आशीर्वचन देते समय यह कहे कि ''एक दिन मैं यज्ञ शाला देखने के लिये जा रहा था तो देखा कि पांच वर्ष की एक बालिका झाडू से यज्ञशाला को बटोर रही थी । ऐसी वेटी को धन्यवाद है । इसके साथ उसके माता-पिता को धन्यवाद अधिक है क्योंकि इतनी छोटी उम्र में उन्होंने ऐसे उत्तम संस्कार दिये है । ऐसे संस्कार से भावी पीढ़ी सत्संग में सुरक्षित है । सेवा का ऐसा दृश्य देखकर मेरी शरीर के रुग्टे खड़े हो गये । महोत्सव का दर्शन करने के लिये आये हुये सभी तो मेहमान थे, लेकिन सेवा करनेवाले आप सभी इस कार्य के सच्चे स्वामी है, धनी है । इस प्रकार का वचन सुनकर सभी कार्य करने वाले सेवक गद्गद हो गये । एक प्रेरणादायी वचन पू. महाराश्री का और लिख रहा हूँ । आज कितने द्वेषी, श्री नरनारायणदेव को पूजा के स्थान से हटा दे रहे हैं । वे कहते हैं कि श्री नरनारायणदेव को पूजने वाला बद्रिकाश्रम में जायेगा, अक्षरधाम में नही जायेगा । श्रीहरिने वचनामृत में श्री नरनारायणदेव को पूजने-मानने की वात की है । जो विरोधकर रहे हैं वे श्रीहरि का ही द्रोह कर रहे हैं । इसीलिये उनके उत्सव में उत्पात होता रहता है, सुख शान्ति नहीं मिलती । श्री नरनारायणदेव के आश्रय में सुख-शान्ति है । श्री नरनारायणदेव का आश्रय रखेंगे बद्रिकाश्रम क्या नरक में भी जाना पड़े तो भी तैयार है । श्री नरनारायणदेव ही स्वामिनारायण भगवान हैं । वेद की परंपरा को ध्यान में रखकर कहीं भी प्रत्यक्ष अपनी मूर्ति को प्रतिष्ठित नहीं किया । परन्तु वचनामृत में श्री नरनारायणदेव की प्रधानता को रखकर उसी स्वरुप से हम सभी को दर्शन का सुख देते हैं। श्री नरनारायणदेव या श्री लक्ष्मीनारायणदेव को छोड़कर कोई उत्सव होता है । जहाँ देव को कोई लाभ न होता हों तो हम वहाँ जाते नहीं है । श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय करने वाले इन सन्त तथा हरिभक्तों के प्रति हमें खूब गौरव है । हमारे भक्तों की कोई प्रशंसा करता है तो हमारी छाती आनन्द से फूल उठती है । हमारे साधु सोने की थाली में भोजन करें लाल रंग के कपड़े पहने तो भी वे त्यागी है । कारण यह कि वे हमारी आज्ञा में रहकर सेवा करते हैं । वे महंत पद पर हों या न हो, परंतु सत्संग की सेवा तो कर रहे हैं न ।

अन्य साधु चाहे कितना भी मोटा कपड़ा गेरुवा में रंगदे और लकड़ी के पात्र में खाये, खूब तप करते हो, लेकिन उन्हें जो स्थान मिला है उस स्थान से बदली करके दिखाये, उनकी साधुता का ख्याल आजेयागा । हमारी टिप्पणी होती है अच्छी वात है । कारण यह कि इसी में हमारी प्रगति है । टिप्पणी से हम जीवित है । मरे हुये को कौन मारता है । जीते को सभी प्रहार करते हैं ।

प.पू. महाराजश्रीने म्युजियम तथा उत्सव में सहयोग करने वाले सभी सत्संगी हरिभक्तों को तथा संतो को आशीर्वाद के साथ धन्यवाद दिया ।

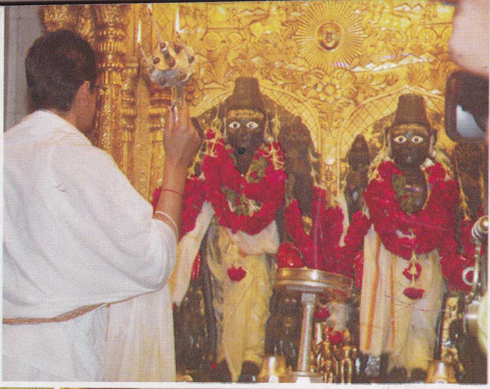
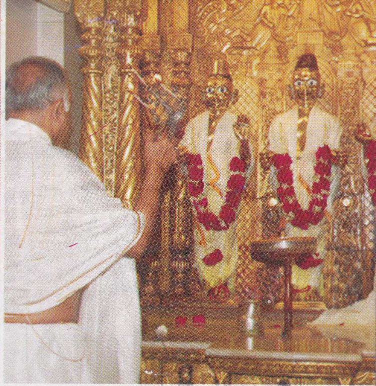
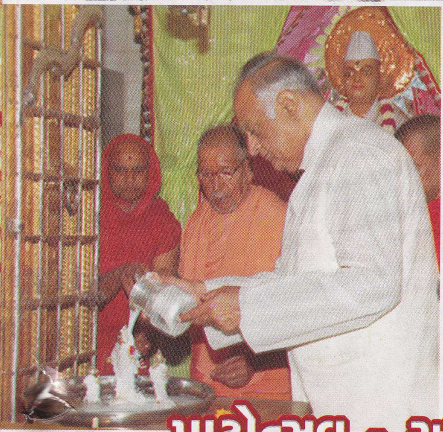
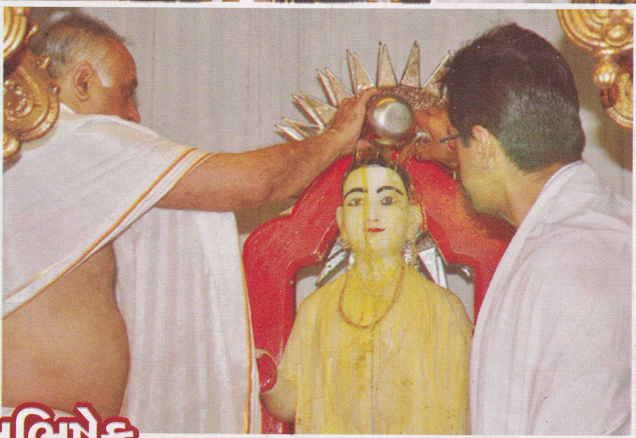

પાટોત્સવ - અભિષેક

સમુહ મહાપૂજા

સાંસ્કૃતિક-કાર્યક્રમ

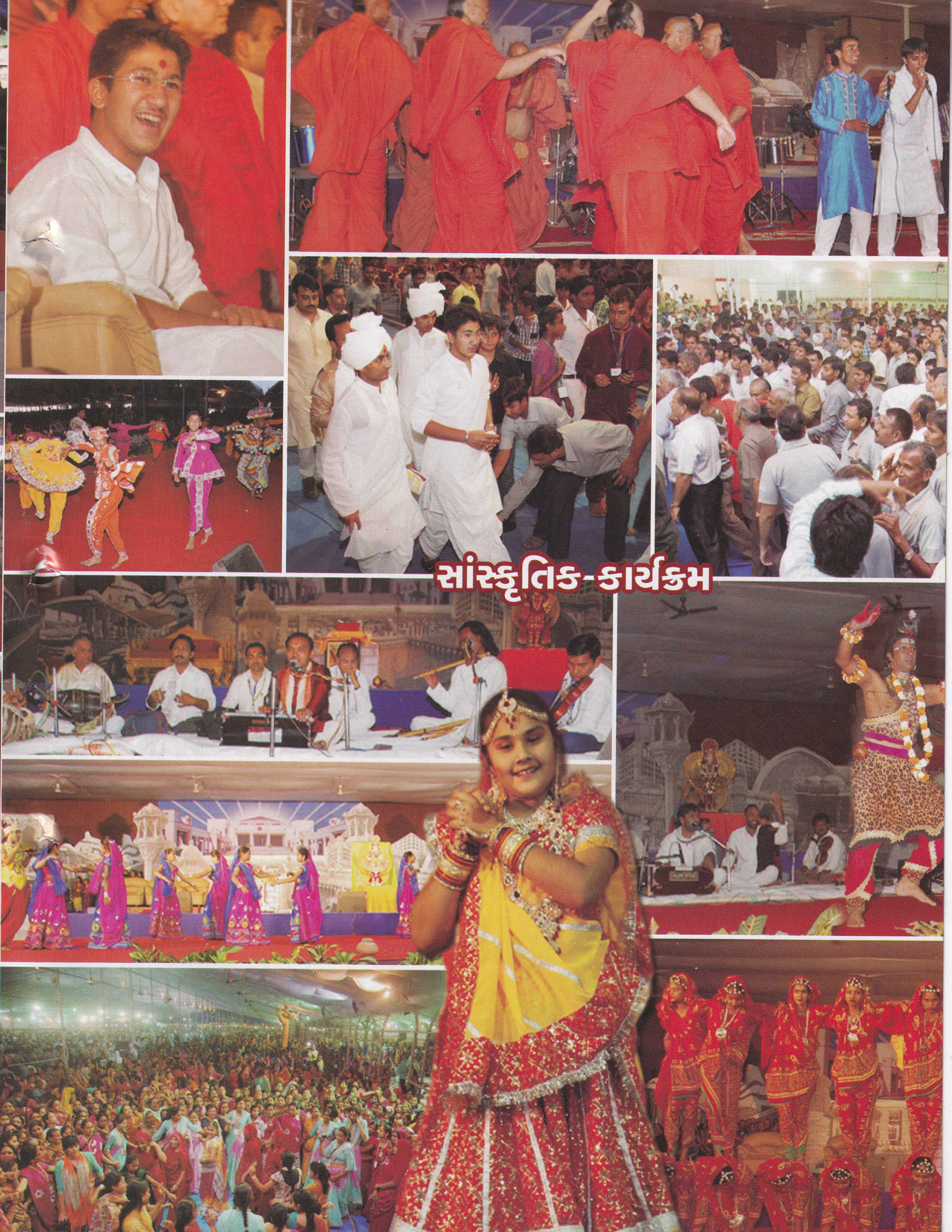

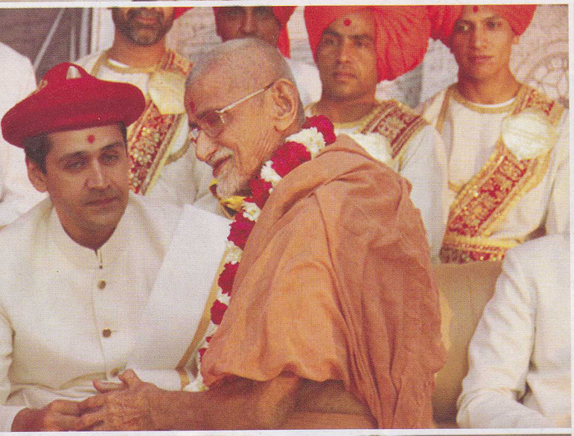

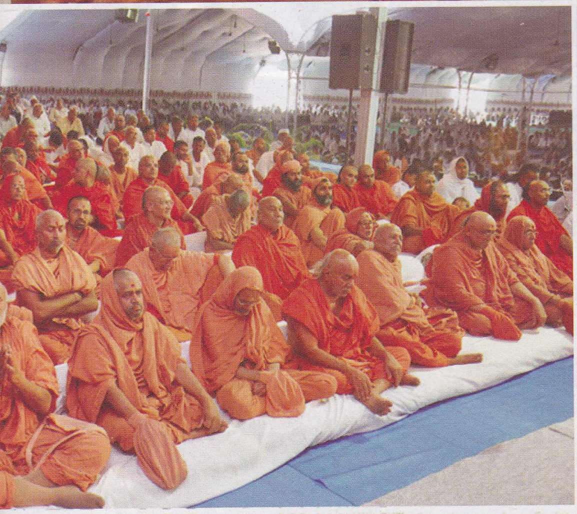
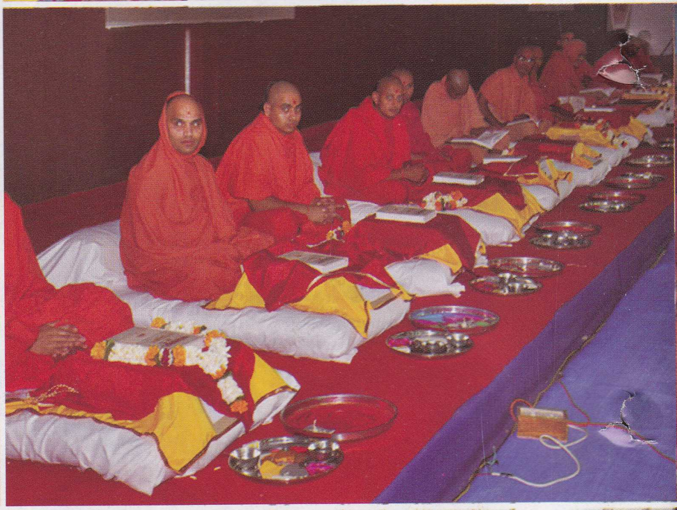

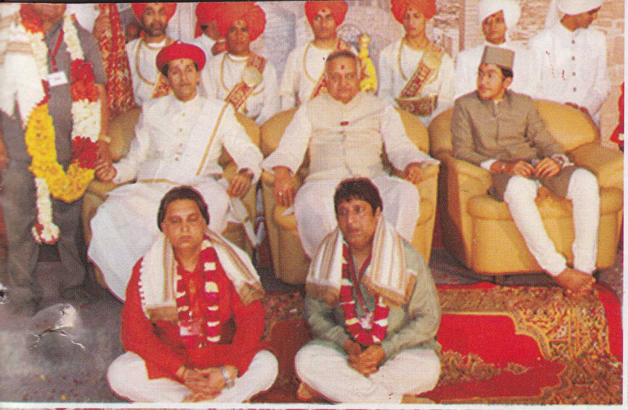

સન્માન

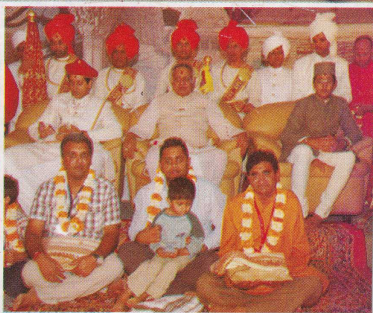

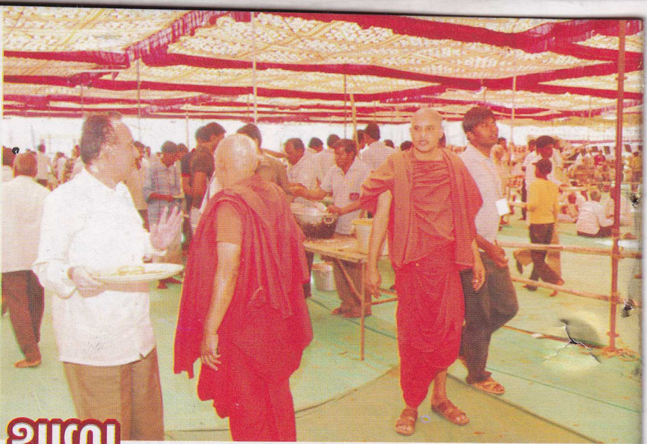

ભોજન શાળા

મ્યુઝિયમમાં આવતા દર્શનાર્થીઓના આ છે મ્યુઝિયમ અંગેના અભિપ્રાય

આભાર -
જય સ્વામિનારાયણ સાથે જણાવવાનું કે અમે
પ્રસાદી ની વસ્તુ જોઈ દર્શન કરી ખૂબ જ આનંદ થયો.
અને અમને અંતકાળે પ્રસાદી ની વસ્તુ યાદ આવી જાય તો
ગમે તેને મહારાજ અક્ષરધામથી તેડવા આવે. અમે મહારાજની
હૈયાતી ના દર્શન થાય છે. આવી પ્રસાદીની વસ્તુના હંમેશા
હૃદયપૂર્વક દર્શન થાય તેવી મહારાજ પાસે પ્રાર્થના.

લિ.
ચોરબિયા કિશોરભાઈ વાલજીભાઈ
જા. જુનાગઢ, તા. માળીયાહાટીના
ગામ: પીપળાણા.
મો. ન. ૯૮૨૫૨૨૬૦૦૬.

અતિ સુંદર. શબ્દો ઓછા પડે છે.
પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના [illegible] છે.
" બહુત શુક્રિયા. બડી મહેરબાની "
N. J. Acharya
Morbi.

22-3-2011
[illegible]

22 Mch. 2011
Jay Swaminarayan
What an amazing accomplishment!
Congratulations to everyone that contributed with તન મન અને ધન.
For all of us this is the greatest gift that Our Mota Maharajshree has given us. With the Grace of our Acharya Maharaj, we are all prerileged & have been lucky to witness this great Mandir - The Swaminarayan Museum.
Thank you -
Sincerely, Joshi
Vishnubhai
Boston Mandir, U.S.

હરિ ૐ।
આજે અચાનક આવવાનું થયું. આ નિર્માણ આપણા જીવનમાં
સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિનું સિંચન કરવામાં બહુમૂલ્યવાન છે.
દરેક સંપ્રદાયના ઋષિઓ આ રીતે પૂર્વપરંપરાગત ઋષિઓના સંસ્કારને
આજના યુગ પ્રમાણે પ્રસ્તુત કરે તો અતિશય ઉપયોગી બનશે.
આ કોઈ મ્યુ. નથી આપણા જ ઋષિનું સ્થાન છે.
હજુ પણ વિશેષ પ્રકાશદાયક વિચારોને પૂ. આચાર્યશ્રી લેતા આવે
તેવી અપેક્ષા.
મુનિ દિવ્યચેતન. મુ. સાયલા
૯૮૨૫૯૭૦૧૯૫

COMMENTS & SUGGESTIONS

			JSW
27/3/2011	SURESH H PATEL 57 MESSINA CT. SHREWSBURY PA 17361	00447868 271929	Very impressed with the whole thing
1/4/2011	SANJIV J PATEL, LEICESTER, UK 24 LADY HAY ROAD, LE3 9QW		Would like to come back to view it again & when the complex is fully complete. Thank you for such a memorable experience.
7-4-11	Amit Ambalal	26300020	excellent, a unique museum - only one of its kind in India

संप्रदाय में सदा स्मरणी श्री स्वामिनारायण म्युजियम

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज-कच्छ)

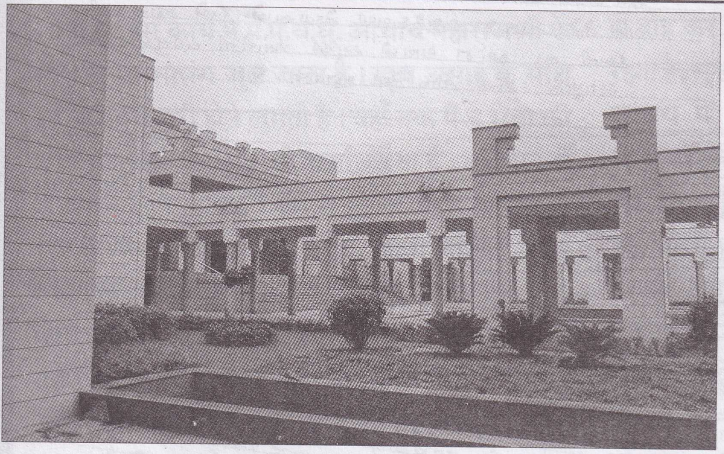

भगवान श्रीहरि स्वयं किसी न किसी को अनिर्धारित समय पर किसी स्थल विशेष पर विशेष प्रकार के कार्य हेतु प्रेरणा करते हैं। यह प्रेरणा सभी के लिये संभव नहीं है। इसी विषय को देखकर यहाँ एक प्रसंग लिख रहे हैं। प.पू. बड़े महाराजश्री को श्री स्वामिनारायण म्युजियम को बनाने की प्रेरणा वर्षो पूर्व में हुई थी। वे एकबार एक हरिभक्त के घर पदार्पण किये, उन्हें महाराज के चरणारविन्द का दर्शन कराया गया लेकिन उन्होंने पूछा दूसरा चरणारविन्द कहाँ है। परिवार वालों ने बताया कि परिवार में विभाजन हुआ तो चरणारविन्द में भी विभाजन हो गया।

पू. बड़े महाराजने बताया कि उसी समय मेरे मन में विचार आया कि श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का एक संग्रह स्थान बनाया जाय। वह इसलिये कि जिनके पास ये दुर्लभ वस्तुयें हैं वे उसका रख रखाव व्यवस्थित नहीं कर पायेंगे और कालान्तर में वह नष्ट होजायेंगी। इनमें प्रसादी की वस्तु ये - आभूषण, कींमती वस्त्र, जिसे महाराजने स्पर्श किया हो या उपयोग में लाया हो और उसे हरिभक्तों को दिया हो वे सभी संग्रहालय के योग्य हैं। हरिभक्तों के पास से मिली वस्तुयें चरणारविन्द, कंठी, माला, बर्तन, गद्दी, तकिया, शाल, दुशाला, हस्तलेख, गाडी, लगाम, जीन तथा अन्य वस्तुयें श्रीहरि की रजाई, तोषक, तकिया, पूंजा की सामग्री भोजन के पात्र - थाली, कटोरी, लोटा, चमची इत्यादि में श्रीहरि की दिव्यता का दर्शन होता था। इन सभी के लिये म्युजियम बनाया जाय तो वस्तुयें सुरक्षित रह सकती है। यह विचार सतत बड़े महाराज के मन में होता रहा और परिणाम स्वरुप म्युजियम का निर्माण संभव हो सका।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी ने बताया कि ''सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव पीठ के लिये जीवन समर्पित कर देने वाले हमारे पू. पिताजी के संकल्प को पूर्ण करना हम सभी का पूर्ण कर्तव्य है। यह म्युझियम किसी एक व्यक्ति का नहीं है। यहाँ पर मात्र भौतिक वस्तुओं का प्रदर्शन नहीं है अपितु भगवान के प्रसादी धाम का साक्षात्कार का स्थान है।

बड़े महाराजश्री को उनके पिताजी प.पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने ता. १३-१०-१९६९ को २५ वर्ष की छोटी उम्र में सत्संग का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सोंप दिया था। उस समय से सत्संग के अभ्युदय हेतु श्रीजी महाराज की तरह देश-विदेश में गाँव गाँव में फिरकर दुर्लभ कार्य करते रहे। गर्मी हो या ठन्डी परवाह

किये बिना अविरत सत्संग के प्रवर्धन में अपने आप को उसी में डुबोदिया । निवृति में भी प्रवृत्त रहने के लिये, म्युजियम का कार्य हाथ में लिया । घन्टो-घन्टो तक म्युजियम में रहकर इन्जिनियर, डिजाईनर, लाईट डेकोरेटर, कोन्ट्राकटर इत्यादि को बड़ी शांति से मार्गदर्शन देते रहे।

बीच में आने जाने वालों को भी सही दिशा देते रहे। मोबाईल आजाय तो शांति से उसमें भी बात करते रहते। अपनी दैनिक चर्या में कोई कमी नहीं आयी । समय से मंदिर आना, कथा में बैठना, आफिस में बैठना, मन्दिर में प्रभु की आरती उतारना, बाद में म्युजियम में जाकर मार्गदर्शन देना। इसके साथ किसी आमन्त्रण पर दूर हो या नजदीक देश हो या विदेश उसे भाव पूर्वक स्वीकार करके उसके यहाँ पदार्पण करने अवश्य पधारते । अहमदाबाद से कच्छ कार में आते उसमें छ-सात घन्टे लग जाता। कच्छ में बारह महीने में अनेकों उत्सव आते, किसी उत्सव में न रहे हो ऐसा कभी बना नहीं । जाते उत्सव में भाग लेते और वहाँ से बापस आजाते। ६७ वर्ष की आयु में आज तक इस दौड़ में कितनी थकान लगी होगी कल्पना करना मुश्किल है।

म्युजियम के कार्य में पू. महाराजश्री कहीं हाथ किसी के सामने बढाये नहीं । श्रीहरिने ही सभी को प्रेरणा दी जिससे करोडो रुपये का म्युजियम प्रत्यक्ष चमत्कार के रुप में विद्यमान है। इस कार्य में छोटे से छोटा परिवार तथा बड़े से बड़ा सभी ने सेवा कार्य किया। जिसकी रोज के मजदूरी की कमाई थी उसने भी भेंट रुप में अर्पण किया। यही सबसे बड़ा चमत्कार है।

म्युजियम का बांधकाम करीब २ लाख चौरस फुट जितना है । इसके भीतर १३ ब्लोक हैं । ३१ हजार चोरसवार क्षेत्रफल में यह म्युजियम खड़ा है । LED लाइठ द्वारा ३५% बिजली की वचत हो रही है । सेन्ट्रलाइज सुरक्षा व्यवस्था की गयी है। अधिक गर्मी या अधिक ठन्ढी से सुरक्षित रहने के लिये दीवाल के बीच में थर्मोकोल, डबलग्लोज, फ्लायचेश, तथा ग्लास के आवरण है। लकड़ी का कम उपयोग किया गया है। सूर्य ऊर्जा से तथा पवन ऊर्जा से बिजली उत्पन्न की जा रही है।

यहाँ पर विश्वभर के कला जिज्ञासुओं के लिये अपनी कला प्रदर्शन के लिये एक्सीबीशन होल गेलेरी का निर्माण किया गया है । दूसरी तरफ स्वामिनारायण संप्रदाय में प्रथमवार यहाँ पर म्युजियम सर्टिफिकेट कोर्स प्रारभ किया जा रहा है। प्रिजर्वेटीव पदार्थो द्वारा प्रसादी की वस्तुओं का रख रखाव किया जा रहा है। इससे लम्बे समय तक सुरक्षा बनी रहेगी।

श्रीजी महाराज स्वयं वृक्ष लगाते थे। कूंआ-तालाब बनवाते थे। पर्यावरण की रक्षा करते । म्युजियम में भी करीब एक हजार वृक्ष लगाये गये है। जिसकी देखभाल प्रतिदिन की जा रही है । इस म्युजियम में श्रीहरि के अत्यन्त दुर्लभ हस्ताक्षर, उनके नख, केश, दाढी के बाल इत्यादि का दर्शन हो रहा है। ४० करोड़ के खर्च से बने इस म्युजियम में प्रभु के अवतारकाल में उपयोग में लाई गयी प्राप्त हजारों प्रसादी की वस्तुयें संग्रहीत है। जिसका दर्शन अन्तकाल तक प्रेमी भक्तजन करते रहेंगे।

पू. बड़े महाराजश्री का कहना है कि "यह म्युजियम मात्र स्वामिनारायण संप्रदाय के लिये ही नही बना है अपितु सनातन वैदिक संस्कृति के साथ अनुबंधित है। इन प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन से भगवान के प्रत्यक्षपना का अनुभव होगा। ता. ५ मार्च से ९ मार्च तक उद्घाटन कार्यक्रम रखा गया था । मात्र एक वार स्नेह तथा श्रद्धा से म्युजियम का दर्शन करके मोक्षभागी बने और बड़े महाराजश्री के पुरुषार्थ को सार्थक करें ।

म्युजियम की मनोहरता

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

वनराज भगत.... ओ वनराज .... हम अभी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री (प.पू. बड़े महाराजश्री) से मिलना चाहते हैं । इस तरह जोर से चिल्लाते हुये दोपहर में करीब ३ बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर काम करते हुये भोंयरा में से ऊपर आ गये । बाद में संप्रदाय के नीति-रीति-नियम का ख्याल आया और एक स्थान पर खड़े होकर दो-तीन बार आवाज दिया । सेवक वनराज भगत दौडते हुये वहाँ आ गये और आंखो से अश्रुधारा बहते देखकर पूछे कि भाई ! आपकी तबियत अच्छी तो है न ? क्या तकलीफ हुई है ? मैंने कहा भगत ! कोई तकलीफ नहीं, यह तो आनन्द का अश्रुजल है । आनन्द के कारण मेरी यह स्थिति है । हमें अभी प.पू. महाराजश्री को मिलना है । भगतने बताया कि पू. महाराजश्री इस समय बाहर गये हैं रात्रि में विलम्ब से आयेंगे । मैने भगवान स्वामिनारायण के हस्ताक्षर वाला पत्र देकर कहा कि आप यह पत्र लीजिये, सुरक्षित रखियेगा, जब पू. महाराजश्री आवें तब उन्हें दे दी जियेगा । वनराज भगत वफादार सेवक हैं उन्हें वह पत्र देकर सायंकाल मैं घर आ गया ।

यह वात उस समय की है जब प.पू. बड़े महाराजश्री गादी पर आरुढ थे । उनकी कृपा तथा आज्ञा से स्वामिनारायण बाग में हस्त लिखित पत्रों का तथा अन्य प्रसादी की वस्तुओं का संकलन करता था । उस समय अत्यन्त पुरानी पेटी में से श्री स्वामिनारायण भगवान के हस्ताक्षर वाला पत्र मिल गया था । मेरी शरीर पुलकाय मान हो गयी थी । एक अलौकिक आनंद का अनुभव हो रहा था । इस आनंद का वर्णन संभव नहीं हैं । श्रीहरि की माधुरी मूर्ति तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के मुखारविन्द का साम्यानुभव हो रहा था । मुझे विश्वास नहीं हो रहा था । पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण के हस्ताक्षर का स्पर्श सुख मिलेगा यह कौन जानता था । भाग्य की या ईश्वर की अहैतुकी कृपा का सायद यह फल हो, कुछ समझ में नहीं आ रहा था । मेरे माता-पिताने जो सत्संग का संस्कार दिया था सायद उसका यह परिणाम रहा हो ।

प.पू. बड़े महाराजश्री दूसरे दिन भी पदार्पण इत्यादि कार्य क्रमों में व्यस्त रहते हुये भी हमें प्रातः ६-०० बजे फोन करके आनन्द के कारण दर्शन देने की आज्ञा की । उसी समय मैं वहाँ पहुँच गया । उस समय उनके चेहर पर जो आनन्द का दर्शन हो रहा था वह लेख में संभव नहीं है फिर भी महाराजश्री ने कहा हितेन्द्रभाई ! आपने हमारी तथा संप्रदाय की अमूल्य सेवा की है । हमारे मस्तक पर दोनो हाथ रखकर कहे कि आज आप जो मांगे आपको दूंगा । इस तरह की प्रसन्नता देखकर मैं दिङ्मूढ रह गया । ''कहाँ राजा भोज और कहाँ गांगू तेली'' । नरनारायणदेव देशका पीठाधिपति एक सामान्य हरिभक्त के मस्तक पर अमृत का घड़ा उड़ेल रहे थे । एक पामर जीव को मस्तक पर बैठा रहे थे । एक रंक को चक्रवर्ती राजा का मान दे रहे थे। महत्ता लेने वाले की नहीं महत्ता देने वाली की थी । उनके वाणी की मधुरता, हित वाला हाथ, अमृत वरसाती आंखे वात्सल्य से भरपूर हावभाव तथा मुखारविंद, स्वरुप में तेज का दर्शन हो रहा था । पू. महाराजश्रीने मुझे दो-तीन बार कहा हितेन्द्रभाई ! क्या विचाङ्कर रहे हो मांगो.... आप नहीं मांगे तो भी आपको कुछ देना तो है ही । तब मैंने कहा कि महाराज ! यदि आप मेरे ऊपर खूब प्रसन्न हों तो मेरे

अंतकाल में भगवान श्री स्वामिनारायण के साथ यह लाल पगड़ी पहनकर, इस पत्र को हाथ में लेकर लेंने आइयेगा। महाराजश्री प्रेमातिरेक के कारण मुझे अपने गले लगालिये अनन्दाश्रु के साथ कहे "मैं श्री नरनारायणदेव को अवश्य विन्ती करुँगा कि आप की मनोकामना पूर्ण करे।" इसके बाद वहाँ से अपने साथ श्री नरनारयणदेव प्रभु के दर्शन हेतु साथ लेकर आये। इस वरदान का इतना अधिक बल है कि मेरी अन्य शारीरिक समस्यायें बाधक नहीं बन पाती।

मायिक सुख पण मोंघा घणा,
त्यारे अमायिक नो कोण आपनार।
माटे सहजानंद सेववा
उर करी बड़ी विचार।
जेह सुख जेहने घरे
ते तो तेनुं दिधुं देवाय।
तेह विना तोली तपासियु,
लेश पण आपणे न लेवाय।
(सार सिद्धि कडवुं ४५, कडी ५ तथा ६)

प.पू. आचार्य महाराजश्री स्वामिनारायण भगवान के पुत्र हैं। अक्षरधाम तो उनका घर है इसलिये वचन सिद्ध महापुरुष ने इस तरह का वरदान दिया।

भगवान स्वामिनारायण के हस्ताक्षर वाला यह एकमात्र पत्र हैं। इस पत्र का दर्शन बड़े-बड़े संतो को पू. महारांजश्री ने करवाया। उसी समय पू. महाराजश्री ने विचार किया कि इन अमूल्य प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन प्रत्येक हरिभक्त को हो ऐसा मुझे करना है।

यह विचार भूतपूर्व का था जो आज म्युजियम के रुप में प्रत्यक्ष दृष्ट हो रहा था। स्वयं संकल्प सिद्ध पुरुष हैं। ऐसा होते हुये भी अपने विचार को अपने सुपुत्र श्री लालजी महाराजश्री को बताये वे भी इस कार्य में सहयोग करने का वचन दिये। इसलिये सत्संगियों के लाभार्थ, सत्संगियो के सेवार्थ स्वयं लालजी महाराजश्री को संप्रदाय की धुरा सौंप दिये। इस कार्य में सभी संत महंत तथा हरिभक्तों की संमति लेकर आचार्य पद का त्याग करके निवृत्ति लेलिये। निष्काम भाव से संप्रदाय की सेवा करने के लिये पद-प्रतिष्ठा की जरुरत नहीं है। ऐसा अपने जीवन में आचरण द्वारा प्रस्थापित कर दिया।

भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रसादी की वस्तुओं के विषय में निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है की -

वळी अमारा अंगनुं अंबर रे,
बहु स्परशेल सारुं सुदंर रे।
एह प्रसादीनुं जेह पट रे,
मले टले सर्वे संकट रे ॥१४॥
एह वस्त्र अनुपम अति रे,
थाय पूजतां परम प्राप्ती रे।
अहि महात्म्य एनुं अतुल्य रे,
कहो क्यांथी मले एह मूल्य रे ॥१५॥
जे जे अमारा संबंधनी वस्तु रे,
न मले गौतता उदे ने अस्त रे।
जणस अम संबन्धीनी जे जे रे,
छे ए कल्याणकारी मानी लीजे रे ॥१६॥
ते तो राखी छे अमे अपार रे,
सहुजन अरथे आ वाट रे।
नख शिख लवी निरधार रे,
राखी स्परशी वस्तु करी प्यार रे ॥१७॥
स्परशी चीज जे बहु परकारे रे,
अडी होय जे अंगे अमारे रे।
ते तो सरवे छे कल्याणकारी रे,
माटे राखी छे अमे विचारी रे ॥१८॥

संप्रदाय में ऐसी प्रसादी की वस्तुयें बहुत है, परंतु इसकी योग्य देखरेख करना आवश्यक है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के संकल्प से तैयार इस म्युजियम में वैज्ञानिक तकनीकी से रखरखाव का पूर्ण ध्यान दिया गया है। प.पू. महाराजश्रीने सभी संत-हरिभक्तों को अपना अभिप्राय बताये और श्रीहरि की इच्छा से अनेक संत हरिभक्त स्वेच्छया, खूब प्रेम से अपने पास परंपरा से प्राप्त प्रसादी की वस्तुओं को म्युजियम के लिये प्रदान

कर दिये । बड़े-बड़े संत प.पू. हाराजश्री को आत्मबल दिये और हरिभक्तों को सच्चा मार्गदर्शन कर रहे । इसके बाद तो प.पू. महाराजश्री का म्युजियम के लिये जहाँ-जहाँ पदार्पण हुआ वहाँ वहाँ से अपार आर्थिक सहयोग धारा बह पड़ी । विदेशमें हरिभक्तों ने आग्रह पूर्वक बुलाया और अपने घरों में पदार्पण करवाकर म्युजियम के लिये भेंट देते रहे। इस कार्य में पूज्य महाराजश्री अपने शरीर की परवाह किये विना रात-दिन भक्तों के घर पदार्पण करते रहे। इस विचरण के समय खाने-पीने की अव्यवस्था हो जाती थी। महीनों तक १८ घन्टे लगातार परिश्रम करते रहे। हरिभक्तों से कभी मांगे नही । भक्त अपनी इच्छा से जो भी दिये उसे स्वीकार करते उसके बदले में हार्दिक आशीर्वाद देते । जिन्होंने आजीवन अयाचकव्रत रखा वे स्वयं हरिभक्तों का कल्याण करने के लिये छोटे-छोटे बालकों के १ रुपये से लेकर दानेश्वरों की दान राशिको स्वीकार करने के लिये सतत चलते रहे। मात्र पू. महाराजश्री का संकल्प तथा श्रीहरि की प्रेरणा मात्र से अनेक संत, हरिभक्त, पार्षद अपने पास परंपरा से प्राप्त प्रसादी की वस्तु पू. महाराजश्री के चरणों में अर्पित कर दिये। एक गृहस्थ के पास १ रुपया निकालना कितना मुश्किल है। तो लाखों रुपयों का दान विना मांगे हरिभक्त दे जाते थे। पू. श्री की ऐसी आज्ञा थी की भक्त उन्हें देखने के साथ ही आत्मशांती का अनुभव करते हुये स्वयं दान के लिये प्रेरित हो जाते थे। यही श्रीहरि का चमत्कार कहा जायेगा । यह दिव्य संकलप सिद्ध महापुरुष के विना संभव ही नही है। म्युजियम के मूल में ही त्याग है। जो महापुरुष गादी त्याग कर सकते हैं, जो म्युजियम के लिये अपनी जिन्दगी को सर्मपित कर दिये हो, वर्षो तक उसी स्थान पर प्रातः सायम् विराजमान होकर योग्य मार्गदर्शक बने हों, उसी स्थान पर प्रायः अनुष्ठान-पूजा-पाठ-यज्ञ जैसे अनेकों कार्य हुये हों वह स्थान श्रीजी द्वारा संस्थापित मंदिरो से लेश मात्र प्रभाव में कम नहीं हैं। श्रीजी के प्रसादी की वस्तुयें स्वयं अलौकिक है। इसमें श्रीजी का साक्षात् वास है। जब कि प्रसादी की वस्तुये आचार्यश्री द्वारा प्रस्थापित की गई है तो अमूल्यता द्विगुणीकृत हो गयी। म्युजियम के एक एक ईंट में से हरिभक्तों की सेवा की सुगंधआती है।

यह म्युजियम कोई प्रदर्शनी का स्थान नहीं है । लेकिन दर्शन का स्थान अवश्य है। यहाँ मात्र मूर्ति ही नहीं है बल्कि श्रीजी के स्वरुप में पंच भौतिक देह के स्पर्श को प्राप्त किये हुये वस्त्र तथा अन्य वस्तुयें है। इतना ही नहीं परंतु परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण के पंच भौतिक देह के अवशेष रुप अस्थि, नख, केश, दांत इत्यादि भी हैं। जिनके दर्शन से एक अलौकिक आनंद की अनुभूति शरीर में होने लगती है। श्रीहरि स्वयं पंडित तो थे जो वचनामृत ग्रंथ में यदा कदा शास्त्रों का प्रमाण देकर चर्चा किये हैं। शास्त्रों के अनुसार जीवन में चार वार ही कागज पर हस्तलेख लिखे हैं। एक बाल्यावस्था में सद्शास्त्र का गुटका तैयार किये थे। दूसरा-रामानन्द स्वामी को जो पत्र लिखे थे। तीसरा-शिक्षापत्री लिखे। चौथा - अहमदाबाद मंदिर के लिये पत्र लिखे । कालक्रम के कारण प्रथम तीन पत्र आज उपलब्धनहीं है, लेकिन चौथा पत्र श्री नरनारायणदेव गादी के आचार्य के पास यह उपलब्धहो गया । यह अमूल्य पत्र भी वे सत्संग समाज की हित कामना से अर्पण कर दिये । प्रसादी की सभी वस्तुयें मायिक नहीं है अपितु दिव्य है। सत्संग समाज के लिये कल्याणकारी है। इन प्रसादी की वस्तुओं में इतनी शक्ति है कि प्रभु के पास तक ले जा सकती है।

जिस माणकी घोड़ी पर श्रीहरि सवारी करते, उसके साजसज्जा की सभी सामग्री यहाँ म्युजियम में रखी गयी है, जिसके दर्शन से उसकाल का स्मरण हो आता है

। यहाँ पर श्रीहरि जिन, अस्त्र, शस्त्र को धारण करते या उनके पार्षद धारण करते वे सभी दर्शनीय है । यहाँ पर श्रीजी के प्रसादी के शास्त्र भी हैं । जिनके दर्शन से अज्ञान का नाश हो रहा है । यहाँ पर श्रीजी महाराज की पटमूर्तिया भी दर्शन दे रही है । जिनके दर्शन से प्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्ति की अनुभूति होती है । श्रीहरि ने जिन पात्रों का यज्ञ-यागादि में उपयोग किया था उन सभी का यहाँ दर्शन होता है । श्रीहरि जिस वांसुरी को बजाते थे वह भी उसी रुप में दृष्ट हो रही है । जिस गाडी में बैठकर आया जाया करते थे वह भी उसी रुप में प्रत्यक्ष दर्शन दे रही है । श्रीहरि के पैर में १६ चिन्ह थे उनका तद्रुप दर्शन प्रतिकृति के रुप छाया द्वारा आज भी हो रहा है । श्रीहरि जिन पादुकाओं द्वारा स्वगमन की ध्वनि से समाधिस्थ किये थे आज उनका यहाँ प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के समर्थ पीठाधिपतिओं की वस्तुओं का दर्शन होने के बाद दिव्यता तथा अलौकिकता का आभास हुये विना नहीं रहता । श्रीहरि के हस्ताक्षरित पत्र की कौन बराबरी कर सकता है । जो अखिल ब्रह्मांड के अधिपति हैं अक्षराधिपति है वे प्रत्यक्ष यहाँ आकर स्वयं लिखे हों उसकी अलौकिकता दिव्यता का अनुमान कौन कर सकता है । यह पत्र भी प.पू. बड़े महाराजश्री के कृपाप्रसाद से ही प्राप्त है । प्रभु की दिव्यता इस पत्र में प.पू. महाराजश्री की कृपा से सभी को दर्शन के लिये प्रगट हुई है ।

धर्मकुल इतना भोला है कि हम इन्हें थोड़ा बहुत दान करके, सेवा करके - (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक) उसके बदले में म्युजियम में उपलब्धअलौकिक, दिव्य वस्तुओं का साक्षात् दर्शन का लाभ थोड़ा देकर अधिक की प्राप्ति कर लिये हैं ।

ऐसे कल्याण कारी म्युजियम के दर्शनार्थ जब आप आवें तो नीचे के नियम का अवश्य पालन कीजियेगा इससे श्रीहरि की प्रसन्नता मिलेगी ।

(१) यहाँ श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुयें है इनमें दिव्यता समाई है इस भाव से दर्शन करना, यह कोई पर्यटन का स्थान नहीं है ।

(२) स्नानादि क्रिया से शुद्ध होकर दर्शनार्थ आवे ।

(३) अयोग्य वस्त्र पहनकर यहाँ न आवें ।

(४) दर्शन करते समय कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिये, चोकलेट इत्यादि भी मुख में नहीं रखना चाहिये ।

(५) दर्शन करते समय ग्राम्यवार्ता नहीं करना चाहिये । श्रीहरि के लीला चरित्रों का स्मरण करते हुये दर्शन करना ।

(६) लिखे हुये पत्रों को तथा अन्य इतिहास को ध्यानपूर्वक वांचना ।

(७) शान्ति-विवेकपूर्वक दर्शन करना ।

(८) यदि हाथ अशुद्धि हो तो प्रसादी की वस्तु के स्पर्श से दोष लगेगा ।

(९) स्वयं सेवकों की सूचना का अवश्य पालन करें ।

(१०) हमें जिन पू. बड़े महाराजश्रीने इतना अधिक परीश्रम करके इस म्युजियम को बनवाया उनका स्मरण तथा जिन सन्त-हरिभक्तों ने प्रसादी की वस्तुयें दी उनका आभार मानते हुये दर्शन करना । श्रीहरि को दंडवत प्रणाम करना ।

(११) म्युजियम में अभी भी संत-हरिभक्तों के यहाँ से प्रसादी की वस्तुये आ रही है जिन्हें दर्शनार्थ समयान्तर में रखा जायेगा । आप अवश्य यदा कदा दर्शन करते रहे । इस दर्शन का दिव्य लाभ स्वयं को अनुभव होगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

संप्रदाय में हरिभक्तों के हाथ से एकमात्र महाभिषेक

श्री स्वामिनारायण म्युजियम अमदावाद

सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण ने अपने हाथों से सर्व प्रथम संप्रदाय का श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बनाया, जिसमें भगवान श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया। इस मूर्ति के साथ चलमूर्ति भी दिये जिससे पालकी, झूला तथा जन्मोत्सव के अवसर पर उन्हें कहीं लेजाना हो तो ले जाया जा सके।

कुछ समय के बाद श्री स्वामिनारायण भगवान (श्रीहरि कृष्ण महाराज) की चल मूर्ति की परंपरा प्रारंभ हुई। हरिकृष्ण महाराज के चल मूर्ति की परंपरा के बाद श्री नरनारायणदेव की चल मूर्ति को प.पू. आचार्य महारजश्री अपनी परंपरा की पूजा में रख लिये।

अत्यन्त देदीप्यमान श्री नरनारायणदेव की इस चल मूर्ति को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के मुख्य होल में मध्य सिंहासन पर चल स्वरुप में विराजमान किया गया है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. विश्ववंन्द्य बड़े महाराजश्री प्रसन्न होकर संप्रदाय में एक मात्र प्रसादी के स्वरुप को सभी हरिभक्तों को दर्शन के लिये महापूजा-महा अभिषेक का महा लाभ देने के लिये आशीर्वाद के रुप में अनुमति दी है। नित्य प्रातः ९-०० बजे से ११ बजे तक इस स्वरुप का हरिभक्त अपने हाथ से महाभिषेक का लाभ ले सकते हैं।

सभी हरिभक्त महा पूजा महाभिषेक का लाभ लेकर सर्वावतारी श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करके मनो कामना पूर्ण कर रहे हैं। जिन हरिभक्तों को यह दिव्य लाभ लेने की इच्छा हो वे नीचे लिखे फोन नंबर से अथवा इमेल द्वारा इच्छित तिथि तथा समय पर महापूजा या महा अभिषेक के लिये बुकिंग करा सकते हैं।

संयोगवश यदि आप बहुत दूर रहते हैं तो आपके नाम का संकल्प करके महापूजा। महा अभिषेक कराने की व्यवस्था की जा सकती है।

महापूजा सहित महाभिषेक में ५० हरिभक्त लाभ ले सकते हैं।

मात्र महाभिषेक के लिये २५ हरिभक्त लाभ ले सकते हैं।

सम्भव होगा तो प.पू. बड़े महाराजश्री आपकी तरफ से महापूजा में या महाभिषेक में बैठ सकते हैं।

महापूजा सहित महाभिषेक की सेवा ५१०००-०० । मात्र महाअभिषेक की सेवा २५०००-०० रुपये है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियममें प्रतिष्ठित प्रसादी के श्री नरनारायणदेव के अभिषेक के यजमान के नाम की स्मरणिका

ता. १०-३-२०११	प्रसादी के श्री नरनारायणदेव के प्रथम अभिषेक के यजमान प.भ. रसिकलाल अंबालाल पटेल (मोखासणवाले यु.एस.ए.) ह. संजयभाई तथा जयेशभाई
ता. १३-३-२०११	प्रीतिबहन दर्पेशकुमार पटेल ह. प्रहलादभाई पटेल
ता. १७-३-२०११	राधिका पंकजभाई पटेल ह. प्रहलादभाई पटेल
ता. १९-३-२०११	बाबूभाई अरजणभाई पटेल बापूनगर
ता. २०-३-२०११	कल्पेशभाई घनश्यामभाई मारफतिया
ता. १२-४-२०११	माणेकलाल नारणदास पटेल (अमेरिका-न्युजर्सी)
ता. १८-४-२०११	अ.नि. भोगीलाल ईश्वरदासभाई, इन्दुबहन भोगीलाल, रमणलाल ईश्वरदासभाई (लांघणजवाळा), मंजुलाबहन रमणलाल (यु.एस.ए.) ह. जीतुभाई भोगीलाल जन्म दिवस निमित्ते (कोलोनिया-न्युजर्सी)
ता. २०-४-२०११	म्युजियम कर्मचारी समस्त
ता. २४-४-२०११	जगदीशभाई जे दर्जी, निरजकुमार जे. दर्जी (अमदावाद-बोपल)

• उपरोक्त महा अभिषेक करके हरिभक्त महा भाग्यशाली बने हैं।

संप्रदाय मे एक मात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा/महाभिषेक की भेंट लिखाने के लिये संपर्क कीजिए

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री करशनभाई राघवाणी मो. नं. ९८२५०६५९०२, ९९४९९१५२२

श्री परषोत्तमभाई - दासभाई (बापुनगर) : ९९२५०४२६२६

श्री स्वामिनारायण म्युजियम "पवित्रता का मूल"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अमदावाद)

विश्व में बहुत सारे म्युजियम हैं । प्रत्येक म्युजियम का अपना इतिहास है । अपनी पहचान है । म्युजियम मैं ऐतिहासिक वस्तुयें होती हैं साथ में अलभ्य, दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह स्थान कहा जाता है।

इसी तरह अहमदाबाद में ता. ८-३-२०११ फाल्गुन शुक्ल-३ को (श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा के दिन) सायंकाल एक अद्भुत, अलौकिंक, अद्वितीय, ऐश्वर्य सम्पन्न म्युजियम का उद्घाटन महोत्सव संपन्न हुआ । हजारों सत्संगियों एवं अनेको महानुभावों तथा धर्मकुल के तीनो महाराजश्री (पू. बड़े महाराजश्री, पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री) द्वारा इस म्युजियम का उद्घाटन संपन्न हुआ था । उद्घाटन करके समस्त सत्संग के लिये उन्मुक्त खोल दिया गया ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम विश्व के अन्य म्युजियम से एकदम अलग है । अद्भुत तथा अनोखा है । सेकडों यात्रा धाम विश्वभर में फैलें है । जहाँ पर हजारों की संख्या में यात्रालु जाते रहते हैं । लेकिन यह म्युजियम अटूट श्रद्धा तथा अखंड शक्ति का प्रतीक बनाकर सभी के लिये प्रतिष्ठित किया गया है । श्री स्वामिनारायण भगवान का धर्म भले अलग हो, अवतार भले भिन्न-भिन्न हो लेकिन भगवान स्वामिरानायण में सभी तत्व समाया हुआ है । यही भगवान की दिव्य शक्ति है ।

श्री स्वामिनारायण भगवान ने इस पृथ्वी पर विचरण करते हुए जिन वस्तुओ का उपयोग किया स्पर्श किया था उन सभी वस्तुओं को प्रसादी का मानकर जिन भक्तों ने स्वीकार करके अपने पास रखा था वे सभी परम्परा से प्राप्त वस्तुओं का एक मात्र संग्रह स्थान बनाया गया । म्युजियम परिसर की रचना अलौकिक ढंग से बनाई गयी है । बहुत बड़ी जगह भले न हो, परंतु जिस तरह आर्किटेक्चरल स्ट्रेक्चर खड़ा किया गया है, उसे देखकर उसकी विशालता का अनुभव हुए विना रहता नहीं है । यहाँ पर हवा-प्रकाश खुली जगह, हरियाली, सुन्दर फुहारा, संगमरमर की सुन्दर फर्स, दिवाल, विशाल कक्ष, सात्विक शुद्धता से परिपूर्ण यह म्युजियम है, इसके साथ ही इसकी दीव्यता का परिचय स्वयं पू. बड़े महाराजश्री है । यह म्युजियम किसी पर्सनल या प्रोफेसनल प्रसिद्धि के लिये नहीं बनाया गया है । परंतु मानव कल्याण की उत्कृष्ट भावना का यह आदर्श स्थान है । इसीलिये विश्व के जितने म्युजियम हैं उन सभी से यह संग्रहालय निराला है ।

म्युजियम में रखी गयी सभी प्रसादी की वस्तुयें धर्मकुल को परम्परा से प्राप्त हुई है । ''तिजोरी में पड़ी रहे उसकी अपेक्षा सुरक्षित स्थान पर रखकर उसे दर्शनार्थ रखा जाय तो अनेकों जीवों का कल्याण हो । प.पू. बड़े महाराजश्री की लोक कल्याण की भावना ही म्युजियम का हार्द है । म्युजियम में आकर श्रीजी महाराज की सभी प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करने के बाद ही यह ख्याल आयेगा कि श्रीजी महाराज की इतनी अमूल्य वस्तुयें म्युजियम मैं है ? जगत में क्या सारे ब्रह्मांड में भी ये वस्तुयें मिलना अशक्य है ।

दूसरी बात तो यह कि यहाँ पर भगवान स्वामिनारायण की प्रसादी भूत जो भी वस्तु को डिस्पले किया गया है वह सभी प्रसादी की वस्तु सम्प्रदाय के ग्रन्थों में वर्णित है । मतलब यह कि ये सभी वस्तुये ग्रन्थों

के आधार पर तथा संतो के द्वारा प्रमाणित होने पर ही किसी संत या भक्त से साभार स्वीकार की गयी हैं। यह एक भावना का पिचामक है। धर्मकुल सारे सत्संग को अपना कुटुम्ब मानता है इसलिये प्रभु की वस्तुये सारे संप्रदाय की हैं उनके समक्ष रहनी चाहिये, जब चाहें वे उनका दर्शन कर सके, इस भावना में सभी का कल्याण है। इसी भावना को ख्याल में रखकर पू. बड़े महाराजश्री इस दिव्य म्युजियम का स्वप्न देखा।

म्युजियम का कार्यारम्भ हुआ उस समय से अनेकों चमत्कार दिखाई दिये। यहाँ पर रात दिन कठोर परिश्रम का कार्य है। यहाँ म्युजियम के आर्किटेक, इन्जिनीयर, बिल्डर कारीगर इत्यादि सभी स्वयं महाप्रभु रहे हैं। भगवान के स्पर्श से पावन ऐसी वस्तुओं में से बाईब्रेशन्स गया नहीं है, आज भी प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। यहाँ आकर उन वस्तुओं के दर्शन में स्पन्दन का अनुभव होगा। इन प्रत्येक वस्तुओं के दर्शन में अलौकिक सुख का अनुभव होता है।

म्युजियम में करीब ८ विशाल खंड है। प्रत्येक खंड में ये वस्तु इस तरह से विभक्त हैं कि श्रीहरि के दिव्य लीला चरित्रों का स्मरण हो जाता है।

यहाँ अहमदाबाद में श्री नरनरायणदेव की प्रतिष्ठा के समय श्रीहरि ने जिस पीताम्बर को धारण किया था या अन्य किसी वस्तु का उपयोग किया था उसका देश विभाग में उल्लेख हैं। श्रीहरि जिससे नित्य पूजा करते थे ऐसे पात्र, चरणारविंद पूजा सामग्री तथा जेतलपुर में यज्ञ के समय जिस पात्र से यज्ञ में घी का हवन किये थे वह अक्षयपात्र तथा प्रानी पीने का पात्र यहाँ दर्शनीय है।

नंद संतो का चश्मा तथा वचनामृत की सभा का तद्रूप दर्शन तथा दुर्लभ धर्मग्रंथ यहाँ पर दर्शन दे रहे हैं। जिस में आश्रयोपनिषद गुण विभाग पंचरत्न, धर्मानन्द, स्वामीकृत धर्माख्यान, विवेक चिंतामणी इस तरह अनेकों ग्रन्थ इस संग्रहालय में दृश्य हैं।

श्रीहरि की १८५ फूट जितनी लम्बी कुंडली जिसे आधारान्द स्वामी ने बनाया था तथा १५५ फुट की बनाई हुई कुंडली बढवाण के शास्त्री द्वारा बनाई गयई सभी प्रदर्शनी में रखी गयी है। श्रीजी महाराज अहमदाबाद के रंगमहल में जहाँ शयन करते थे वहाँ के वस्त्र तथा जिस पत्थर पर बैठकर स्नान करते थे वह प्रसादीभूत पत्थर भी यहाँ दर्शनीय है।

श्रीजी महाराज ने कालुभार नदी के किनारे जिस वांसुरी को बजाई थी वह बांसुरी तथा सिद्धपुर एवं नारायणघाट पर मुंडन कराया था वह केश, अहमदाबाद भद्र के किला में पेश्वा की जिस छडी से पोल खोली थी वह छड़ी भी यहाँ पर दर्शनीय है।

श्री नरनारायणदेव के चौक में जिस तख्ता पर रंग खेले वह तख्ता तथा पिचकारी एवं उस समय के वस्त्र, कुंडल के कला भक्त की जिस तपते लोहे के गोले से परीक्षा हुई थी वह गोला, डांगरवा की रतनबा के घर जिस पात्र से दूधकी अखंडधारा किये वह पात्र एवं वे वस्त्र, जेतलपुर की गंगा बा श्रीहरि को जिन पात्रों में भोजन कराती वे सभी वासन, विहार गाँव में जिस पात्र में भोजनकिये वे पात्र, कांसा की थाली कटोरी, लौटा तथा महेसाणा की कलशीबाई के यहाँ जो प्रसादी के वासन थे वे सभी यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं।

ब्रह्मानंद स्वामी जिस मृदंग को बजाते थे वह मृदंग, आदरज में निशान बाजी करते समय का बाण तथा भगुजी के हथियार एवं रथ भी यहाँ पर हैं।

प्रथम मंजिल हाल नम्बर २ पार्षदों तथा काठी दरबारों के हथियार, चलोडा की जीतबा ने जो रथ एवं माणकी घोडी भेटं की थी उसकी सभी श्रृंगार सामग्री,

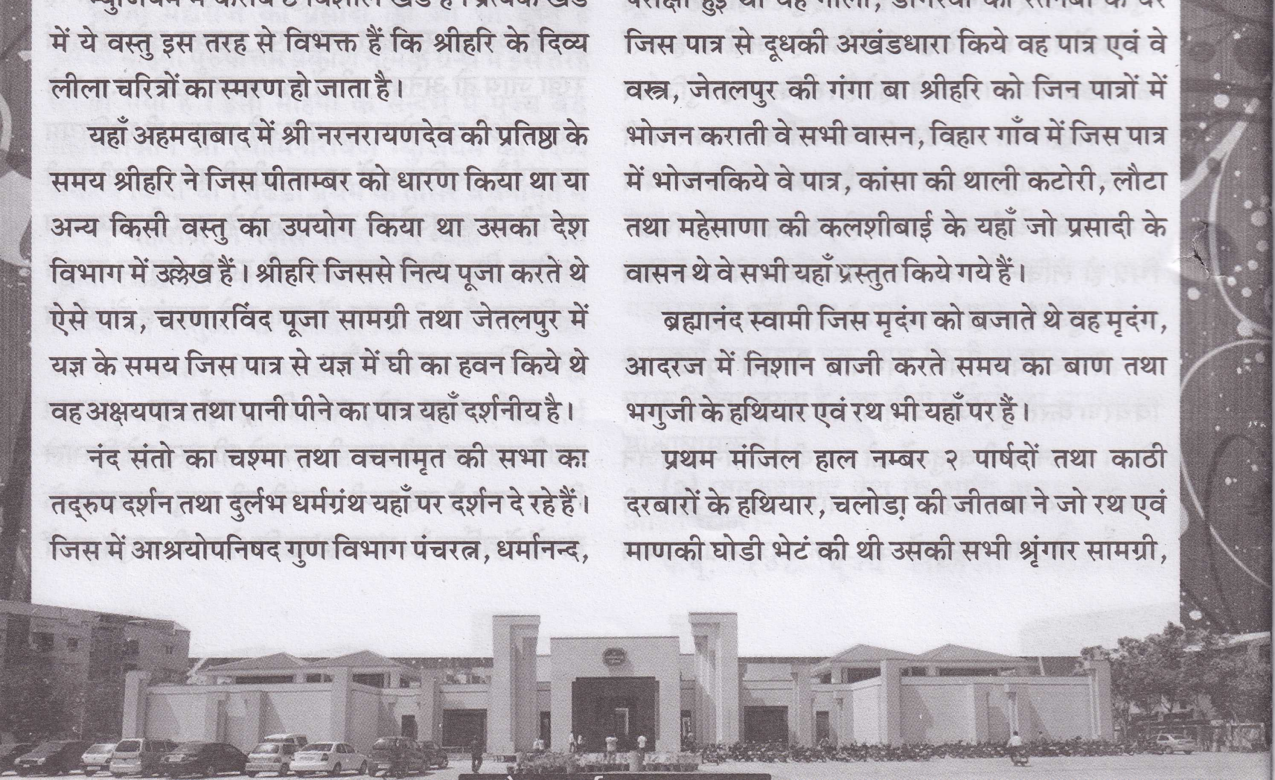

हाथी का हौदा तथा हाथी के सभी श्रृंगार साधन, सयाजीराव गायकवाड़ ने जिन वस्तुओं को दिया था, चांदी के वासन, चांदी के अलंकार वे सभी यहाँ दृश्य हैं।

प्रथम मंजिल हाल नं. ३ में पंचाला में जब श्रीहरि रास खेलते वह दृश्य है मूली में रास करते समय रंगोत्सव करते समय के वस्त्र हैं। गरमी में हलुवा परसते समय का अक्षयपात्र, रंगोत्सव की पिचकारी, पंचाला में किये गये रास का चादर, ८ लाख से भी कीमती पसमीना की शाल, जिस झूले पर झूलते उसका कड़ा, वीजापुर की बजीबा के घर में उपयोग की गयी प्रसादी की रजाई, तकिया, लोटा इत्यादि दृश्य है।

प्रथम मंदिर हाल नं. ४ में बैल गाडी, वहेलाल का मचान, सीढी खिरनी के वृक्ष की जड़, श्रीहरि डभाण में जब यज्ञ किये थे उस समय के यज्ञीय वासन, वस्त्र, हाथी का श्रृंगार इस तरह कारियाणी का ब्रह्मभोजन का सीन दिखाया गया है।

हाल नं. १, २, ३, ४ तथा प्रथम मंजिल होल नं. २, ३, ४ की दर्शनयात्रा के बाद आता है मुख्य हाल नं. ५ जिसे "मौन हाल" कहा जाता है। यहाँ पर ५ प्रोजेक्ट प्रस्तुत किये गये है। (१) श्री नरनारायणदेव की प्रसादी की चांदी की मूर्ति जिसकी स्वयं पूजा श्रीहरि करते थे। वह मूर्ति सुन्दर सिंहासन में दर्शन के लिये रखी गयी है। यही सिंहासन आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज अपनी पूजा में रखते थे।

यह वही मूर्ति तथा सिंहासन है जिस पर मूर्ति रखकर उस सिंहासन के आगे बैठकर अयोध्याप्रसादजी महाराज पूजा करते थे। श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री आत्मनिष्ठ थे। प्रवृत्तिमय जीवन होने के बाद भी इष्टदेव श्री भगवान स्वामिनारायण की सेवा पूजा में समय कम नहीं किये। एक ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म परमात्मा श्री स्वामिनारायण से साक्षात्कार किये थे। उस समय उनकी शरीर में एक बिच्छु अनेकोवार डंक मारा परंतु ध्यानमें इतना लीन थे कि उस समय उन्हें कोई ख्याल ही नहीं आया।

जब घन्टे के बाद मानसी पूजा से निवृत्त हुये तो सेवक से कहे कि देखों इसमें कोई जीव है क्या ? सेवक जब शाल उठाकर देखा तो उसमें बिच्छुथा।

इस में तो बिच्छू है, आपको काटा तो नहीं ? सेवक जब महाराजश्री की पीठ देखा तो अनेकों स्थान पर डंक मारा था पूरी पीठ सूज गयी थी।

सेवक महाराजश्री की स्थित प्रज्ञता देखकर किं कर्तव्य विमूढ हो गया। कहने लगा, आपको बहुत पीडा होती होगी । कुछ औषधिकी उपाय की जाय। अयोध्याप्रसादजी महाराजने कहा नहीं, इसकी कोई जरुरत नहीं है अपने आप ठीक हो जायेगा।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का यह वही सिंहासन एवं पूजा की वही मूर्ति है। मौन हाल की पांच की पांच वस्तुये सभी दिव्य है। प्रभावी है। अलौकिक है, अलभ्य है, जिसके दर्शन मात्र से अत्यन्त आनंद की अनुभूति होती है।

(२) श्रीजी महाराज का दातं तथा सोने की दांत खोदनी जिससे महाराज प्रतिदिन दांत खोदते थे।

(३) श्रीजी महाराज के हस्ताक्षर वाला एकमात्र सम्प्रदाय में संग्रहीत पत्र।

(४) श्रीजी महाराज की अस्थि (चांदी के कुंभ में है)

(५) श्रीजी महाराज का नख तथा केश।

ये पांच अंतरंग वस्तुयें श्रीहरि की स्वयं की है, इनके दर्शन करने से आत्यन्तिक सुख का अनुभव होता है। मौन हाल के मुख्य होल में प्रसादी की ये मुख्य वस्तुओं

का मौन होकर दर्शन करने से ध्यान करने से, माला फेरने से आत्मिकशान्ति मिलती है।

होल नं. ६ में देवनागरी लिपी में लिखे गये प्रसादी के पत्र भी दर्शनीय है। देवलिपा की केशिनीबाई के घर लीला का प्रसंग तथा करजीसण में श्रीजी महाराज पधारे तथा वरखड़ी वृक्ष के नीचे सभा किये उस वृक्ष की जड़ एवं करजीसण के प्रसादी की अनाज की कोठी तथा प्रसादी का पात्र यहाँ दर्शनीय है।

होल नं. ७ इस हाल में आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी से लेकर आजतक आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज तक के आचार्य परम्परा के वस्त्र पगडी, बिल्ला, तथा दुर्लभ तस्वीर प्रस्तुत की गयी है। सात वें खंड के बगल में छोटा ओडियेरियम है। जिस में २० मिनट की डोक्युमेन्टरी फिल्म में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के मूल प्रणाली का संक्षिप्त परिचय प्रदर्शित किया गया है।

प्रथम खंड से लेकर अंतिम सातवें खंड तक जितनी प्रसादी की वस्तुयें दर्शन में रखी गयी है उन सभी के दर्शन से अद्भुव आनन्द की अनुभूति होती है। यहाँ पर सभी बड़ी वस्तुयें नामावली के साथ प्रदर्शित हैं। महाराज के प्रसादी की अन्य वस्तुयें भी है जिन में हाथ पंखा, बुरहानपुरी डुपट्टा, दीक्षा लिये उस समय का पीताम्बर चांदी की पालकी, खडाऊँ, हीराजडित हार, बाजू बंध, श्रीहरि की पगड़ी, आरती का दीपक, शिवलिंग, शंख, प्रसादी की कंठी, पैर के चांदी का नूपूर, रुमाल, मोजड़ी, छत्र, रजाई, चादर, धोती, पादजामा, उपरोक्त सभी वस्तुयें प्रसादी की है, जिसका उपयोग स्वयं महाराजने किया है।

महत्व की वात तो यह है कि ये सभी वस्तुयें खरीदी नहीं है बल्कि धर्मकुल को परम्परा में मिली है या तो सन्त-हरिभक्तों को परम्परा में मिली है, जिन्हें मानव कल्याण के लिये यहाँ पर संग्रहीत किया गया है।

आज कोहिनूर का हीरा सुरक्षीत रखा गया है। जिसे देखकर आनन्द होता है, तो यहाँ पर भगवान के २५० वर्ष पूर्व की जितनी जीवनोपयोगी वस्तुयें है उन्हें एक साथ पर संकलित करके रखा गया है। इनके दर्शन से आनन्द की नहीं बल्कि मोक्ष की भी प्राप्ति होती है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मात्र म्युजियम ही नहीं है परंतु एक आदर्श जीवन शैली का निरुपण भी है। आदि मानव से लेकर आज के मानव तक की यात्रा का भी दर्शन होता है। श्री स्वामिनारायण भगवान स्वयं अवतारी मात्र नहीं थे लेकिन एक ऐसे दिव्य उनके प्रसंग भी थे जिससे सम्बन्धित वस्तुओं का यहाँ प्रदर्शन होता है और उसके दर्शन में मानसिक शांति का अनुभव होता है।

तिजोरी में पड़ी रहे उसकी अपेक्षा सम्पूर्ण सत्संग समाज उसका दर्शन कर सके इस हेतु के ध्योन में रखकर प.पू. बड़े महाराजश्री अपनी मन: संकल्पसिद्धि से अशक्य कार्य को शक्य कर दिया। इस संग्रहालय से निश्चित ही अनन्त जीवात्माओं का कल्याण होगा।

स्वामिनारायण मूल गादी संस्थान का मात्र भगवान की भजन ही करना नहीं बल्कि एक **Helthy Life Style** है **Ecofirnedly Lie Style** है। समाज के साथ रहकर भगवान की भजन भक्ति करना भी महाराज की आज्ञा है। अन्य को प्रसन्न रखकर स्वयं को प्रसन्न रखने में आत्मिक शांति मिलती है।

यह श्री स्वामिनारायण म्युजियम संस्कृति एवं परम्परा का समन्वय बनाने वाला है। श्रीजी महाराज के प्रसादी भूत वस्तुओं का दर्शन करके जीवन में अच्छे संस्कार आवें यह लक्ष्य है। जिस तरह श्रीहरि की मनोहर मूर्ति का दर्शन करने से कभी तृप्ति नहीं मिलती उसी तरह

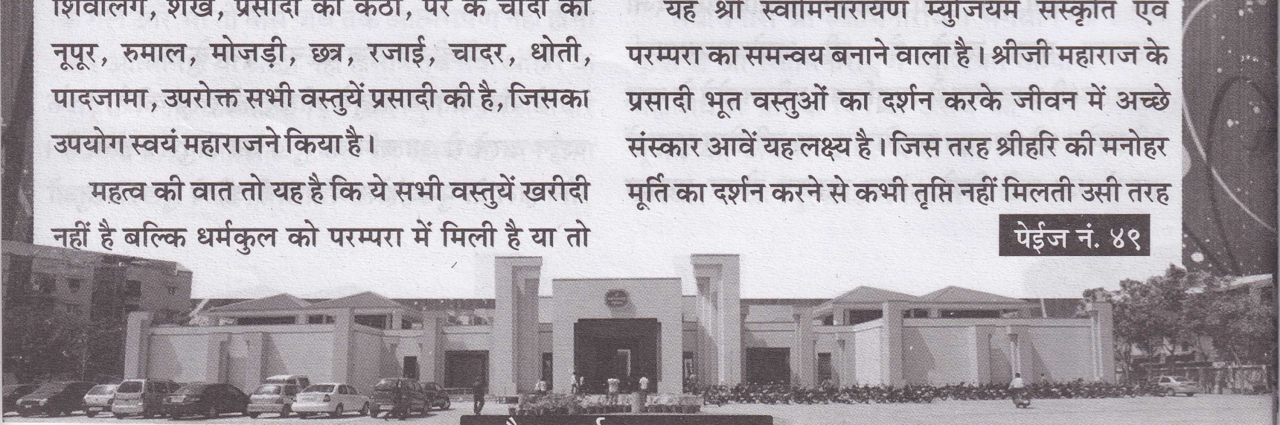

વિમોચન

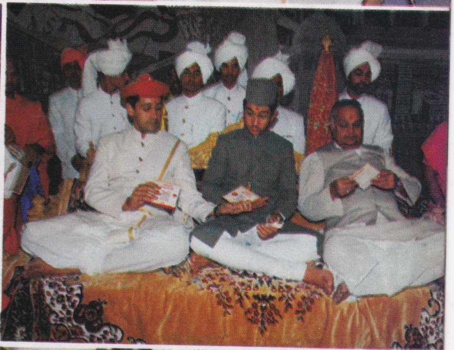

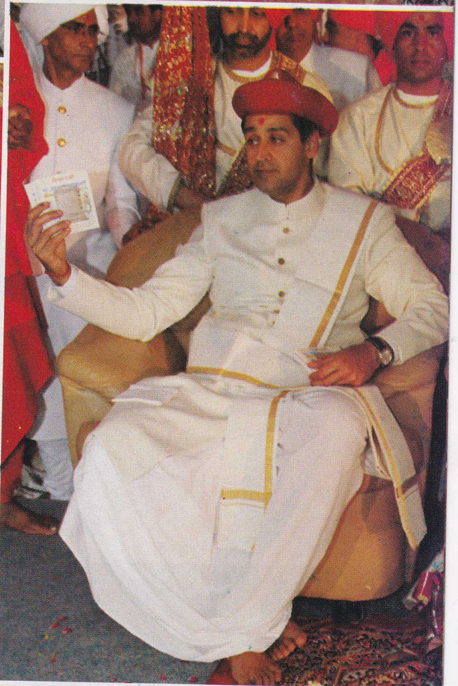

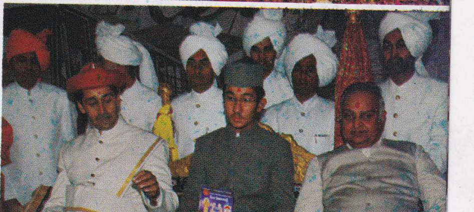

આત્મિયતા

श्री स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण के साथ

- प्रफुल्ल खरसाणी (अहमदाबाद)

मनुष्य जन्म एक अकस्मात है । मनुष्य जन्म मिला यह भाग्य की बात है । बहुत पुण्य के बाद ही यह मनुष्य जन्म मिलता है । प.पू. बड़े महाराजश्री के शब्द में कहे तो "जिस तरह मनुष्य जन्म, विवाह-मरण इत्यादि भाग्य से होता है । उसी तरह सेवा करने का अवसर भी भाग्य से ही होता है । इस विषय में भाग्यशाली हूँ जो म्युजियम में सेवा का अवसर मिला । इतना ही नहीं म्युजियम के खात पूजन से लेकर उद्घाटन विधितक प्रत्येक कार्य में मुझे सेवा का अवसर मिलता रहा ।

२००५ में खात पूजन के समय यह कल्पना नहीं थी कि म्युजियम का उद्घाटन २०११ में होगा और इतना

विशाल म्युजियम बनेगा । धीरे-धीरे नियमित म्युजियम में जाना फोटो लेना तथा बेवसाईट पर रखना जिसकी प्रगति विश्वभर में सभी देख सकें यह कार्य मेरी सेवा का आधार बन गया था ।

परन्तु अधिक पुरुषार्थ का काम विगत एक वर्ष से अधिक प्रारंभ हुआ । पू. महाराजश्री के घर से छोटी से बड़ी सभी प्रसादी की वस्तुयें म्युजियम की आफिस में लाई गयी । इन सभी का फोटोग्राफ लेकर उस वस्तु का नाम तथा लम्बाई-चौडाई, नम्बर इत्यादि का लेखाजोखा फोटोग्राफ्स के माध्यम से होता रहा । मेरे साथ चार अन्य हरिभक्त और भी सेवा में लग गये । हम इस कार्य को करते समय शुध्दता पर ध्यान रखते थे । मास्क पहनकर तथा हाथ में ग्लोब पहन कर वस्तुओं का डोक्युमेन्टेशन करते । परन्तु सभी प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन का लाभ तथा स्पर्श करने का सुख हमें मिला था । इस विषय में मैं बड़ा भाग्यशाली था । करीब एक महीने में यह कार्य पूर्ण हुआ । बाद में जो डेटा तैयार हो गया उसे पू. पी.पी. स्वामी तथा पू. निर्गुण स्वामी को समर्पित कर दिया ।

उन प्रसादी की वस्तुओं का महत्व उन वस्तुओं के प्रमाणानुसार लिखना बड़ा कठिन था । कारण यह कि उनका काल, प्रसंग इन सभी का ध्यान देकर लिखना था। परन्तु पूज्य दोनो सन्तों के खूब सूक्ष्म चिन्तन के आधार पर तथा महाराज के लीला चरित्रों का स्मरण करके सभी वस्तुयें अलग-अलग करके उन्हे एक स्वरुप प्रदान किये । जब भी हमें आवश्यकता हो तब मैं दोनो सन्तो से जानकारी कर लेता था, इसके लिये फोन पर वात करने की दोनो सन्तों ने छूट दी थी । इन दोनो संतो का कार्य बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रसन्शनीय ढंग से सम्पन्न हुआ ।

बाद में सभी प्रसादी की वस्तु को डिस्प्ले किस तरह किया जाय वह प्रक्रिया प्रारम्भ हुई । उद्घाटन समारंभ में प.पू. महाराजश्रीने जिसे दादा खाचर की उपमा दिया ऐसे करसन भाई पटेल भी हमारे साथ रहकर सेवा कार्य किये थे । म्युजियम के सभी कार्य उन्हीं से सन्पन्न हुआ । इतना प्रसन्शात्मक कार्य करने के बाद भी वे अहं आने नही दिये । जितने भी कार्य में विघ्न या पहेशानी आई उस में कभी वे क्रोधमें दिखाई नहीं दिये बड़ी शान्ति से कार्य

करते थे।

उड़ती पतंग कट जाती है तो बगल के छत पर जाकर गिर जाती है। लेकिन अब आकाश में उड़ती है तो उडाने वाले के ऊपर निर्भर करती है। यहाँ मुझे आकाशरुपी म्युजियम में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने उड़ने का अवसर दिया।मेरी भाग्य थी कि प्रतिदिन दोनो महाराजश्री का दर्शन होता और म्युजियम के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन होता। इन प्रसादी की वस्तुओं में करीब १२०० वस्तुओं का एकत्रिकरण हो गया है। इसी बीच इन वस्तुओं के पचियात्मक लेख की आवश्यकता हुई। अपने सम्प्रदाय के लोगों के लिये तो बहुत आवश्यकता नहीं थी लेकिन अन्य लोगों के लिये परिचय आवश्यक था। इसलिये म्युजियम में ही यह कार्यारम्भ हुआ वस्तुओं के रख रखाव के लिये अद्यतन औषधियों का प्रयोग किया गया। जहाँ जो प्रसादी की वस्तु रखी जाती वहाँ उस प्रसंग के अनुसार चित्र तथा कथाओं का समन्वय किया गया। इन सभी कार्यों में पू. महाराजश्री का निर्देश सर्वोपरि होता वे जैसा कहते वैसा ही उसे व्यवस्थित किया जाता था। इस कार्य में तीन कलाकारो को रखा गया जिस में विजय भोजाणी, नवीन सोनी तथा कमलेश मकवाणा इन लोगों की देखरेख में वस्तु यें रखी जाती थी। इन प्रसादी की वस्तुओं को रखने के समय यह भी ध्यान दिया जाता था कि ये दर्शनीय बने प्रदर्शनी की वस्तु न रहें।

इसके बाद सभी प्रसादी की दिव्य वस्तु को जिस हाल में रखा जाता उस प्रसंग को पू. संत निर्देश देते फिर उन्हें रखा जाता था। इस अवसर पर पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री नियमित सायंकाल को आते और सभी को योग्य सलाह भी देते थे।

शोकेस डिजाईन के बाद उसमें लाईट की फीटींग की चर्चा विचारणा करके पू. महाराजश्रीने इकोफ्रेन्डली म्युजियम बनाने के लिये कोन्सेप्ट को ध्यान में रखकर सभी लाईट एल.इ.डी. लगाने का निर्णय लिया। म्युजियम में मैं सदा रहता था इसलिये हमें खबर हैं कितनी परेशानी से यह कार्य सम्पन्न हो रहा है। दान भी ऐसे ऐसे आये कि विचार नहीं कर सकते। एक विधवा बहन अपने बेटे के इलाज के लिये पैसे रखी थी उस में से म्युजियम के लिये दी थी। कोई बालक अपने पाकेट मनी से बचाकर दान दिया था। कोई गरीब होते हुये भी अपनी सभी आवक म्युजियम में दान कर दिया। यह देखकर यह होता था कि इन सभी पैसों का जैसे बने सद्उपयोग हो। इस लिये लाईट फिटिंग में जो ऊँचे भाव की थी उसे छोड़कर नीचे भाव की लाईट लाई गयी।

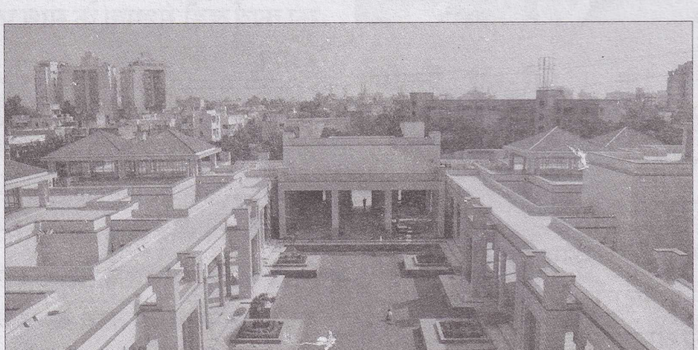

हमारे साथ जगदीशभाई शाह काम में लग गये, लगातार तीन महीने तक काम करके करशनभाई की चिन्तां कम कर दिये। यह सव करते करते म्युजियम के उद्घाटन की ता. नजदीक आ गयी। कुछ काम अवशेष

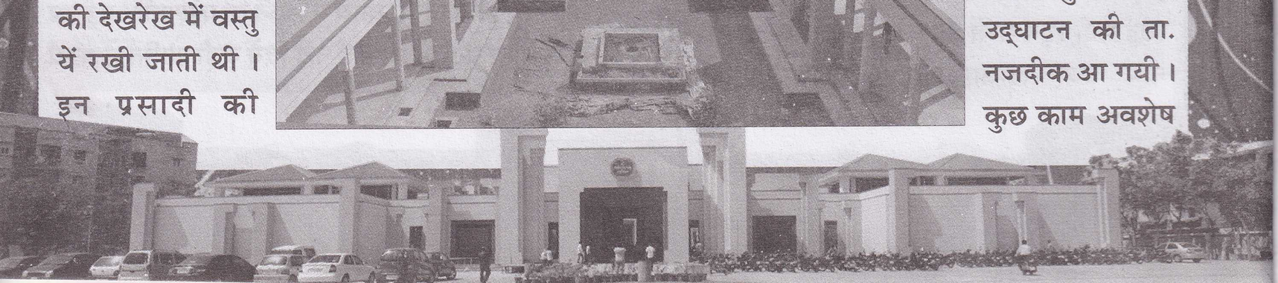

थे फिर भी पू. बड़े महाराजश्री ने कहा कि चिन्ता की वात नहीं है सभी काम में महाराज का चमत्कार है वे ही पूरा करेंगे । यह चमत्कार सामने देखने मे मिला एक बिन सत्संगी भाई की दो बेटियां नयना तथा नंदिनी जैसी अनेकों बिन सत्संगी इस कार्य में तन, मन, धन की सेवा में लग गये । लेकिन सभी को ऐसा था कि ८-३-२०११ तक सभी कार्य पूर्ण हो सकेगा या नहीं । परन्तु चलने का सुख चप्पल नहीं निश्चित कर सकता है, हृदय से ही दृढता होती है तभी कार्य में सफलता मिलती है । ऐसे दृढ हृदय वाले श्री करशनभाई तथा अन्य सभी मिलकर रात दिन एक करके म्युजियम के उद्घाटन से पूर्व ही सभी तैयारी कर दिये ।

प्रारंभ हुआ एक अभियान और पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प को साकार भी कर दिया । यह कार्य सामान्य नहीं था यह श्रीजी महाराज की प्रेरणा से पू. महाराजश्री के द्वारा सम्पन्न होने वाला था ।

यह हमारी वात थी । लेकिन जो स्वप्न महाराजश्रीने देखा वह आगे की तरफ गति करते रहे पीछे कभी देखे नहीं । देश-विदेश से द्रव्योपार्जन में तथा डिझाईन निश्चित करना, निर्माण का कार्य किस तरह का होगा यह सब बड़ी सूक्ष्मता के साथ निवृत्ति के बाद भी अनमोल भेंट संप्रदाय को दे दिये । इस कार्य में भीष्म की शरशैय्या का भी पू. महाराजश्री को अनुभव हुआ । मीरा के विष पान का भी अनुभव हुआ । फिर भी वे अपनी दृढता को पकड़े रहे ओर सतत अपनी गतिको लक्ष्य तक पहुँचाने में सफल भी हो गये ।

अनु. पेईज नं. ४४ से आगे

यहाँ पर स्थिति प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन से भी कभी तृप्ति नहीं मिलती । बार बार दर्शन की उत्कंठा होती रहती है ।

हमें हमारी संस्कृति में जो भी मिला है प्रसादी की वस्तु - **ethics, Values** इन सभी का रक्षण करना है, ऐसी समझ रखकर इनका दर्शन करेंगे तो अनेक जीवों का कल्याण होगा । प.पू. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद को हम आत्मसात करें और म्युजियम का दर्शन करें तो निश्चित ही आप को आत्मिक शांति का अनुभव होगा ।

जहाँ पर कोई सत्पुरुष विराजमान हों वह क्षेत्र नैमिषारण्य जैसा होजाता है । उस स्थान पर आने के साथ ही मन में पर शांति का अनुभव होने लगता है । नारायणपुरा विस्तार टर्फ स्कुल के सामने श्री स्वामनारायण म्युजियम यथार्थरुप में एक नैमिषारण्य क्षेत्र हो गया है ।

छोटी सी बच्ची पूरे दिन अनेक जगहों पर फिरती रहे, खेलती रहे, आनन्द किल्लोल करती रहे, कभी रोती भी रहे परंतु जब माता की गोद में आती है तो वह सो जाती है, ऐसा उस मांकी गोंद में उसे आनंद मिलता है । वह आनंद अन्यत्र सम्भव नहीं है ।

ठीक वही स्थिति इस स्वामिनारायण म्युजियम की है, सारा समाज इस म्युजियम की गोंद में आकार शांति का अनुभव करेगा । यहाँ प्रवेश करने के साथ ही शांति का अनुभव होने लगता है । जब जहाँ पर पवित्रता, सात्विकता का स्थान हो वहाँ शांति होनी चाहिये । क्योकि सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का स्पन्द यहाँ पर मौजूद है । प्रसादी की प्रत्येक वस्तु में चेतना शक्ति छुपी हुई है । जो दर्शन करने से प्रगट हो जाती है । अन्तर में एक चेतना शक्ति का संचार होने लगता है ।

आइये ऐसे पवित्रता की गोंद में आपका स्वागत है । श्री स्वामिनारायण म्युजियम अर्थात् दिव्य चेतना तथा पवित्रता का पर्याय ।

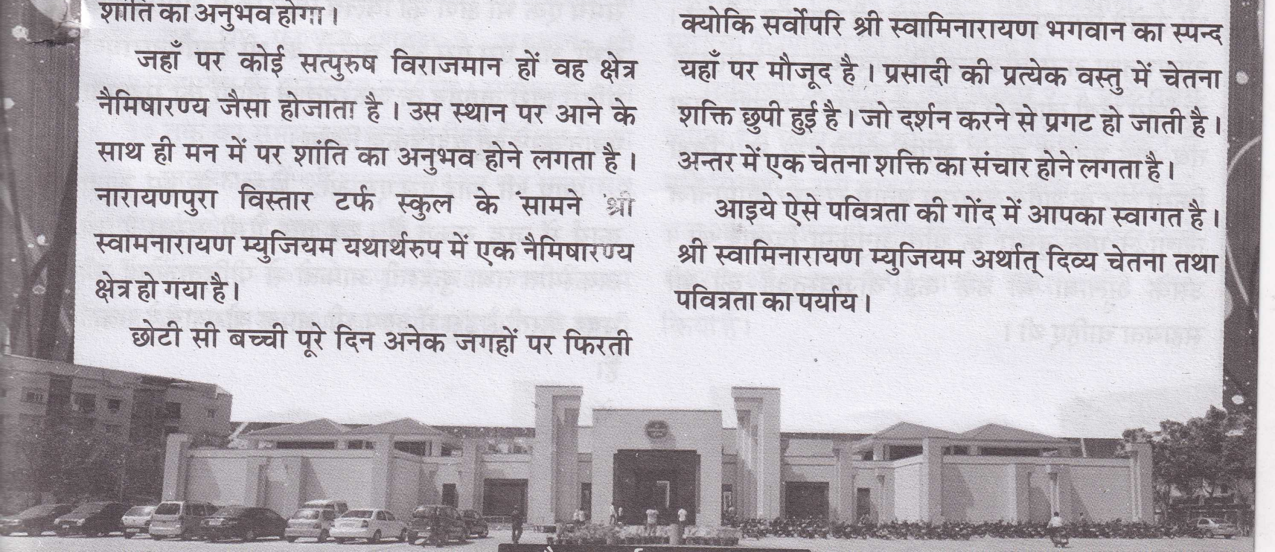

आई.एस.एस.ओ. "सेवा" संस्था द्वारा जापान में भूकंप पीडितों को सहायता प्रदान की गई

विध्वंश, सर्वनाश, भूखमरी, हिंमत तथा दया, अनुकंपा इन सभी शब्दों के वर्णन का अर्थ एक मात्र होता है कुदरती तांडव अर्थात् धरतीकंप । रीक्टर स्केल पर ८.९ की तीव्रता का धरती कंप जापान के उत्तर-पूर्वीय दरिया किनारे पर पाया गया था । जिस के कारण सुनामी का तुफान उठा । इस सुनामी के तुफान में लोगों की जान तो बच गई लेकिन उनके पास कुछ भी नही बचा । तमाम लोग खोराक के द्वारा अपना जीवन बचा सके यह बात तो अनिश्चित थी ।

परंतु जापान के लोगों की धीरज, हिंमत तथा प्रबल ईच्छा शक्ति प्रशंसा पात्र थी । ऐसे कटोकटी के समय में भी उन्होंने हिंमतपूर्वक एक दूसरे की सहायता की थी । आहार तथा अन्य जीवनजरुरी आवश्यक चीजवस्तुओं के लिये लंबी लाईन में जब तक उनका क्रम नहीं आता तब-तक प्रतीक्षा करके शांति बनाये रखे थे । बिना किसी लूंट के शांति व्यवस्था बनाये रखकर जापानीज लोगों ने एक-दूसरों के प्रति अनुकंपा दिखाई थी । उसके अलावा भी उन्हें कई चीजवस्तुओं की भी सहायता चाहिए थी ।

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से हमारे आई.एस.एस.ओ. का सदैव यही लक्ष्य रहा है कि लोंगो को पूर्ण स्वास्थ्य के हेतु सेवायें के नहीं मिलने कारण दुर्भाग्यवश अनेक बिमारियों का भोग बने तथा जो कुदरती आफतों का शिकार बने ऐसे लोगों को पूर्ण सहायता प्रदान की जाये ।

विश्व के किसी भी हिस्से में वसने वाले किसी भी प्रकार की जाति, धर्म के भेदभाद के बिना आई.एस.एस.ओ. ''सेवा'' जैसे मानवतावादी संस्थान द्वारा पूर्ण सहायता प्रदान की जाती है । भगवान श्री स्वामिनारायणने ऐसी आज्ञा की है कि ''गरीब तथा जरुरतवालों की सहायता करनी चाहिये ।''

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने जब जापानकी आफत के समाचार सुनें तो त्वरीत सेवा संस्था को फोन द्वारा सहायता हेतु आज्ञा की । आई.एस.एस.ओ. के सभी चेप्टरों के हरिभक्तों को जापान में मदद करने की आज्ञा की । उस समय एक भी क्षण का विलंब किये बिना अमेरिका के सभी आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों के श्री स्वामिनारायण मंदिरो द्वारा जापान के जरुरतवाले लोगों को सहायता प्रदान करने हेतु चंदा इकड्डा किया ।

आप भी आई.एस.एस.ओ. ''सेवा'' के इस उमदा कार्य में जुड़ सकते हैं । यह एक ऐसी संस्था है जो अकस्मात तथा कुदरती आफतो से पीडित लोगों की मदद करती है इस में आप भी अपना योगदान दे सकते हैं ।

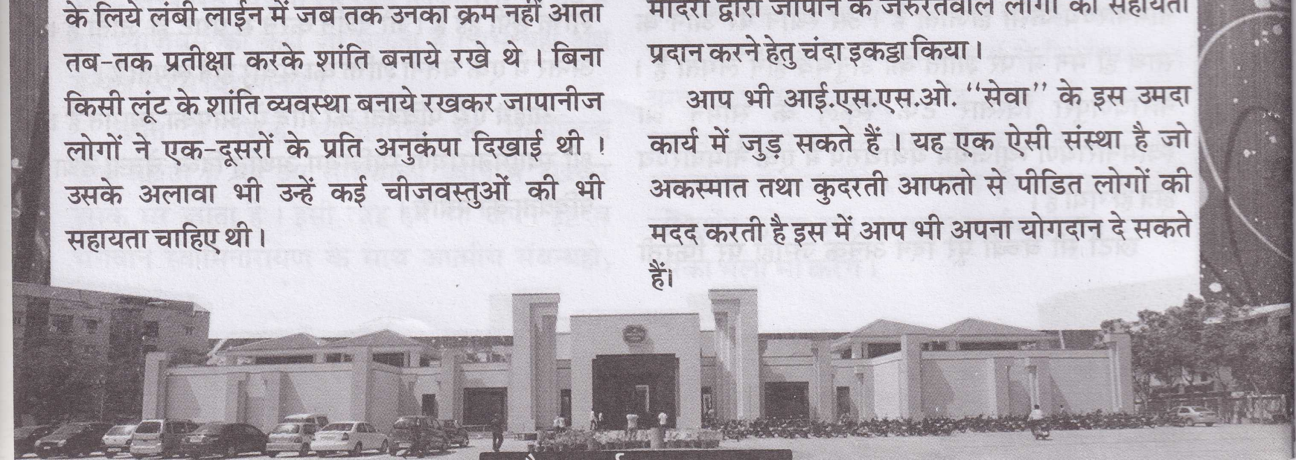

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

परीक्षा के बाद क्या ?

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

आज के विद्यार्थियों में कितनी चिन्ता है ? इस विषय में ना समझ भी यह नहीं कह सकता उसे किसकी चिन्ता ? बस, खाना, पीना, पढ़ना कुछ और तो घूमना फिरना । इसके अलांवा और क्या है। नहीं कोई व्यावसायिक प्रवृति नहीं कोई पारिवारिक उत्तरदायित्व ।

विद्यार्थियों को कितनी चिन्ता होती है लोग क्या जाने ? दश महीने तक खेले, घूमे, कहने के लिये स्कूल में हाजरी दिये इतने में परीक्षा सामने आ गयी और चिन्ता ने घेर लिया। परीक्षा की तैयारी होने लगी। परीक्षा आ गयी। परीक्षा केन्द्र में सीट ऊपर बैठ गये। प्रश्न पत्र मिलने लगा। प्रश्न पत्र देखते ही पसीना छूटने लगी। कितने लोग "स्योट गाईट" इत्यादि तैयार करके आये थे, उसमें से एक भी नहीं आया। किसे गाली दें ? प्रश्न पत्र लिखने वाले को ? या कच्छ निरीक्षक को ? जैसे-तैसे पेपर लिखकर कक्ष से बाहर निकल गये। लेकिन मन से चिन्ता हटी नहीं थी।

लेकिन अब कैसी चिन्ता ? परीक्षा तो हो गयी। अरे ! अनजान थे क्यां खबर पड़ेगी। सत्य चिन्ता तो अब आई। क्योंकि मा-बाप मित्रों से कहे है कि मेरे पेपर अच्छे गये है।

वैसे फर्स्ट क्लास आना चाहिये, यदि पेपर देखने वाला गडबड किया तो सेकन्ड क्लास तो निश्चित है। सभी के सामने ऐसा बोलता रहता हूँ लेकिन पेपर मैने क्या लिखा है मैं ही जानता हूँ। इसलिये परिणाम की चिन्ता निरन्तर होती रहती है।

अब क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा है। मेरे मित्र का फोन आया है कि एकदिन बड़ौदा जा आते हैं। वहाँ से सूरत चलें जायेंगे और पिताजी को भी कह देते हैं कि वे भी भावनगर एक चक्कर मार आयें। लेकिन सूरत, वडोदरा, भावनगर जाने की क्या जरुरत ? ऐसी गरमी में ? अरे, यार, सुना हूँ कि पेपर वहाँ गया है। हम कल ही हनुमानजी के मंदिर में गये थे। वहाँ मैंने मन्नत रखी है कि मेरा अच्छा परिणाम आयेगा तो प्रति शनिवार को दर्शन करेंगे, तेल और नारियल चढायेंगे। एक ज्योतिषी के कथनानुसार मंगलवार को मूग खाता हूँ। गुरुवार को वघारा हुआ गेहूं खाता हूँ। शुक्रवार को भूजा हुआ चना खाता हूँ। शनिवार को तेल में तला हुआ बाजरी का वड़ा खाता हूँ। हम तो सभी को मानते हैं। हो सकता है किसी का सच्चा हो जाय और हम सफल हो जांय। विद्यार्थियों को कितनी चिन्ता होती है। परीक्षा की चिन्ता से बढकर परिणाम की चिन्ता होती है। यह बात तो अब साधु महात्मा भी समझने लगे हैं। कल मैं अपने मित्र के साथ एक स्वामिनारायण के मंदिर में गया था। हम वहाँ पर एक महात्मा को प्रणाम करके बैठे थे। वहाँ पर भी स्वामीने परीक्षा तथा परिणाम की ही वात चालू किया। हमें अच्छा लग रहा था। उसमें से एक-दो शब्द यह कर रहा हूँ।

उन्होंने कहा कि परीक्षा की तैयारी न हो तो परीक्षा केन्द्र में जाते समय डर लगता है। अच्छा उत्तर न लिखा हो तो परिणाम का डर लगता है। यहा बात विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं है, लेकिन मानव मात्र के लिये चरितार्थ है। यह दुनिया प्रभु के परीक्षा का केन्द्र है। मानव मात्र परीक्षा है। अपने जीवन में जितने प्रसंग आते हैं आ जो परिस्थिति आती है वहीं प्रश्न पत्र है। यदि इनके उत्तर सही नहीं दिये तो परिणाम क्या होगा ? विद्यार्थी तो अनुतीर्ण होकर दूसरे वर्ष पुनः परीक्षा देकर पास हो सकता है। यदि मानव प्रभु की परीक्षा में फेईल हो गया तो पुनः अवसर मिलेगा ही नहीं। इसलिये संतो का सत्संग तथा शास्त्रों का अभ्यास करके जीवन में आने वाली सभी यथार्थरुप की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना चाहिये, इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं। इसलोक की परीक्षा में पास होने के लिये सूरत, वडौदरा, भावनगर तक दौड़ सकते हैं। लेकिन प्रभु की परीक्षा में गडबड होने पर कहाँ दौड़गे। जीवन अधः पतन को प्राप्त हो जायेगा। वहाँ कीसी प्रकार की बनावटी बात नहीं चलेगी। जीवन को अच्छे मार्ग से ले गये होंगे तो ही आप पास मान जायेंगे।

विद्यार्थी तो परीक्षा देकर संतोष, असंतोष का अनुभव करलें लेकिन प्रभु की परीक्षा वाला तो सतत जागरुक रहे उसी में उसकी भलाई है। परीक्षा पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी

उन्मुक्त होकर गप-सप करते रहते हैं। फालतु समय टी.बी. या बाहर घूमने में बिताते हैं। बिन जरुरी वात करते हैं। किसी की खिल्ली उड़ाते हैं। इसमें से कुछ मिलता नहीं है बल्कि गुमाना ही पड़ता है।

परीक्षा के बाद वेकेशन में मंदिर में जाकर दर्शन करना चाहिये । संतो के पास सही दिशा सदुपदेश लेना चाहिये । अच्छी पुस्तक का वांचन करना चाहिये । घर में माता पिता के उपयोग में आवें ऐसी प्रवृत्ति करनी चाहिये । अच्छे विचार आवे ऐसा प्रयत्न करना चाहिये । इस तरह वर्तन करने से सच्चे मानव बनकर प्रभु की परीक्षा में सफल हो जायेंगे।

वे महात्माजी उपरोक्त नियमानुसार उपदेश दिये । मैंने निश्चित किया कि अवकाश के समय प्रतिदिन मंदिर में जाकर दर्शन, भजन तथा संत समागम करेंगे। घर में मां बाप की सेवा करनी चाहिये। परीक्षा में पास होने के लिये जितने भी नियम लिये जांय उसमें से प्रभु भजन का नियम सर्वोत्तम है। प्रभु कृपा हो तो सम्पूर्ण जीवन सुखमय वीतता है। वस, यह अवकाश का समय बिगड़ते नहीं देना है, सुधारना है।

●

भगवान सर्वत्र है

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भगवान स्वामिनारायण के चरित्र अपार है। उन चरित्रों के आधार पर नाम भी अनंत है। भगवान स्वामिनारायण का एक नाम श्री वासुदेव भी है। इसका अर्थ यह है कि ''सर्वत्र वसति इति वासुः'' अथवा सर्वो हि यस्मिन् वसति स वासुः वासुः चासौ देवश्च इति वासुदेवः । समग्र ब्रह्मांड में जो चित्-अचित् रुप से निवास करता हो या सब जिस में निवास करते हों उसे वासु कहते हैं ऐसे देव को वासुदेव कहते हैं।

स्वामिनारायण भगवान सर्वत्र रहते हैं। इसके प्रमाण रुप में एक चरित्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

भगवान के भक्त आठो प्रहर भगवान का स्मरण करते रहते हैं । किसी भी क्रिया के प्रारंभ में भगवान का स्मरण करते हैं। एक हरिभक्त महिला प्रातः काल नंद संतो के गीत गाते हुये रोटी बना रही थी । उस समय रोटी बहुत सुन्दर फूलकर हुई और उस महिला के मुख से निकल पड़ा कि यह रोटी हमारे भगवान ग्रहण करे ऐसी बनी है। जो क्रिया भाव से प्रेम से हो तो उसे भगवान अवश्य स्वीकार करते हैं। अनंत कोटि ब्रह्मांड में अन्तर्यामी के रुप में जो निवास करते हैं ऐसे वासुदेव भगवान स्वामिनारायण इस महिला का शुभ संकल्प जान गये । वह अपने काम में तल्लीन थी, सभी काम पूर्ण करके खेत में काम करते हुये पति के लिये रोटी, दही, अंचार, गुण इत्यादि कपडे में लंपटेकर एख वर्तन में रहकर माथे पर रखकर खेत के लिये चल दी । लेकिन अन्तःकरण में भगवान का स्मरण करते हुए जा रही है। उसी समय घोड़े पर सवार किसी को सामने से आते देखी। उस रास्ते में कोई आता जाता नहीं था केवल वह बहन थी घुड़ सवार को देखकर थोड़ी घबड़ाई, यह कौन होगा ? हे महाराज रक्षा कीजिये । बड़ी बारी की से देखा तो माथे पर पगड़ी सुन्दर सुहानी सलोनी मूर्ति तथा माणकी घोड़ी को देखकर महाराज को पहचान गयी । लेकिन महाराज को अन्तर्ध्यान (अक्षरवास) हुये काफी समय होगया था, फिर भी भगवान के अन्तर्यामी भाव को समझ गयी । भगवान को पहचान गयी । भगवान घोड़ी से नीचे उतरे और कहे कि हमें रोटी खिलाओ। बहन मस्तक से वर्तन उतारी और सभी महाराज के सामने रखदी । महाराजने कहा नहीं खाली मेरी रोटी हमें दो, जो खूब फूली थी और उस समय यह भाव हुआ था कि यह रोटी महाराज आप ग्रहण करो। वहीं रोटी लेकर खाते हैं, दूसरी रोटी देती है, उसमें वह स्वाद नहीं था। इसलिये अन्य को ग्रहण नहीं करते है मात्र रोटी को ग्रहण करते हैं, वहीं पर खड़े-खड़े खा जाते हैं। एक रोटी जो भाव से बनाई थी जिसे प्रभु को अर्पण किया था वही आधी खाये और आधी उसे प्रसाद के रुप में देते हैं। वह आधी रोटी अपने पात्र में रखने के लिये झुकती है, और पुनः मस्तक ऊपर करती है तो प्रभु अदृश्य हो गये नहीं वहाँ पर महाराज, नहीं वहाँ पर माणकी घोड़ी मात्र निशानी रह गयी और रह गयी प्रसादी की आधी रोटी।

जो व्यक्ति भगवान को भाव से चाहेगा उसके पास भगवान अन्तर्यामी रुप से रहेंगे । ऐसे वासुदेव श्री स्वामिनारायण भगवान भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने अवश्य पधारते हैं।

(श्री जनमंगल कथा भाष्य के आधार पर)

भक्ति सुधा

भक्ति का पाया श्रद्धा है

- सां.यो. कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

भक्ति के मार्ग में श्रद्धा का मूल स्थान है। प्रभु के प्रति जितनी श्रद्धा उतना नजदीक। यदि हृदय में श्रद्धा न हो तो भगवत प्राप्ति संभव ही नहीं है। दुर्योधन को प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्ण मिले लेकिन क्या प्रयोजन। जब कि मीरा बाई तथा नरसिंह महेता को भगवान का केवल नाम भजन का सहारा मिला और उनका सर्व कार्य सिद्ध हो गया। श्रीजी महाराजने गढडा मध्य के वचनामृत में कहा है कि "अखंड चिंतवन हो ऐसी श्रद्धा होनी चाहिये। जब ऐसी श्रद्धा न हो तो प्रभु के माहात्म्य में भी कमी होगी। इसलिये भगवान के स्वरुप का माहात्म्य एवं श्रद्धा हो तो अखंड चिंतवन होता रहेगा। अतिशय श्रद्धा एवं चिंतवन करते रहने से भक्ति मार्ग प्रशस्त होगा और प्रभु की प्राप्ति में सरलता होगी। उसके जीवन में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। भगवत गीता में भी कहा गया है कि श्रद्धावान लभते ज्ञानम्।" इसलिये मोक्षमार्ग में श्रद्धा की परम उपादेयता है।

एक भाई के मन में श्री कृष्ण भगवान की उपासना का निश्चय हुआ। तुरंत वह बाजार में जाकर भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति ले आया। उनकी सेवा पूजा करना प्रारंभ कर दिया। प्रतिदिन प्रातः उठकर स्नानादि क्रिया सम्पन्न करके प्रभु की सेवा में लग जाता था। इसतरह सेवा करते छ महीने बीत गये प्रभु प्रसन्न नहीं हुये तो भगवान राम की उपासना प्रारंभ कर दिया, जब वे भी प्रसन्न नहीं हुए तो शिवजी की उपासना प्रारंभ कर दिया। जब वे भी प्रसन्न नहीं हुये तो माताजी की उपासना प्रारंभ कर दिया। जब माताजी भी प्रसन्न नहीं हुई तो उदास हो गया। उसी समय उसका एक मित्र उसके घर आया अपनी वात उस मित्र से बताया। मित्र ने कहा कि कहाँ तूं भटकने लगा, तूं मात्र माताजी की भक्ति करना प्रारंभ कर। माताजी बहुत दयालु है ममता मयी है वे तुरंत प्रसन्न हो जायेंगी। वह सभी की मूर्ति को ऊपर रख दिया और माताजी की उपासना प्रारंभ कर दिया। प्रतिदिन हवन, पूजन नैवेद्य, धूप, दीप करके भक्ति करता। अब उस के घर का वातावरण थोड़ा सुगन्धमय हो गया। उसके मन में आया कि छ महीनां तक श्रीकृष्ण की भक्ति किया वे प्रसन्न नहीं हुये तो उन्हें अब ऊपर रख दिया हूँ ऊपर बैठकर सुगन्धलें यह ठीक नहीं इसलिये उनकी मूर्ति को नीचे उतारकर उनकी नाक में रुई भर दिया जिससे सुगन्धउन्हें न मिले। यह देखकर उस मूर्ति में से हंसने की आवाज आई। उस भोला व्यक्ति ने पूछा क्यों हंस रहे हो छ महीने तक आपकी पूजा किया। तब प्रसन्न नहीं हुये अब हंसने का क्या कारण ?

भगवान हंसते हुये कहने लगे अरे मूर्ख इतना भी नहीं समझ पाया ? आज तक तूं मेरी सेवा किया लेकिन मेरे में प्राण प्रतिष्ठा नहीं किया, आज जब मेरे नाक को बन्द किया तब मेरी श्वांस रुक गई और मै हंसने लगा। तेरी भावना में परिवर्तन आया इसलिये मै सचेष्ट हो गया।

उपरोक्त प्रसंग से यह समझा जा सकता है कि मूर्ति को पत्थर नहीं मानना चाहिये। श्रद्धा के साथ भगवान के स्वरुप में दृढ निष्ठा होनी आवश्यक है। भगवान में जब तक आत्मभाव नहीं आयेगा तब भक्ति सार्थक नहीं होगी। इसलिये श्रद्धा-महिमा के साथ भक्ति करनी चाहिये। भाव-श्रद्धा के विना की जाने वाली भक्ति दूलहा की वारात जैसी वात है। श्रद्धा-माहात्म्य भक्ति के आधार है।

•

धैर्य शीलता

- परमार भूमिका भगवानजीभाई (सुरत)

भगवान के भक्त को चाहिये कि चाहे कितना भी संघर्ष भक्ति-भजन में करना पड़े कभी घबड़ाना नहीं चाहिये। बड़े-बड़े महापुरुषों को भी भक्ति के मार्ग में पीड़ा सहन करना पड़ा था। फिर भी वे धर्म का परित्याग किये विनाप्रभु की भजन करते रहे। आज हमें थोड़ा दुःख आजाय तो दुःखी नहीं होना चाहिये।

आज के इस घोर कलिकाल में थोड़ा भी किसी को दुःख आता है तो धैर्य छोड़ देते हैं। भगवान पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण के भक्त अनेकों दुःख सहन करते हुये भक्ति करते रहते हैं।

प्रिय भक्तजन ! संप्रदाय का जिन्हे जननी कहा गया है ऐसे मुक्तान्द स्वामी ने क्षय रोग का सहन किया था । इसी तरह चैतन्यानन्द स्वामी तथा अक्षरानन्द स्वामी एवं नृसिंहानंद स्वामीने भी नाना विधरोगों को सहन किया था । नित्यानंद स्वामी को आँख की पीड़ा थी । आनंदानंद स्वामी को वायुरोग था । बद्रिनाथानन्द स्वामी तथा महानुभावानंद स्वामी को पक्षाघात का रोग था । ब्र. वासुदेवानन्द स्वामी को भी उदरपीड़ा र्थी । रघुनाथानन्द स्वामी को वायु की पीड़ा थी । दादाखाचर को ११ दिन तक पीसाब बन्द था । बाद में शरीर छूट गया । उत्तमानंद स्वामी को शारीरिक पीड़ा थी ।

प्रिय भक्तजन ! भगवान के ऐसे संत-हरिभक्तों को इस तरह की पीड़ा थी । लेकिन धैर्य पूर्वक सहन करते रहे । वे कभी भी अपने विचारों में विकृति नहीं आने दिये । इसी तरह आज भी लोगों में होना आवश्यक है ।

महाराज की आज्ञा में रहकर जो भी अपनी क्रिया करेंगे वे शरीर की पीड़ा भोगते हुये भी प्रभु के ही धाम में जायेंगे । शरीर की पीड़ा कर्म भोग है जिसे यहाँ भोगना आवश्यक बताया गया है ।

अतः धैर्य पूर्वक पीड़ा सहन करते हुये प्रभु की भक्ति का कभी भी त्याग न करें ।

•

भक्ति

- रीचा संदीप चौकसी (अहमदाबाद)

सभी को जय स्वामिनारायण तथा प्रभु को कोटि कोटि वन्दन । सभी को प्रभु पर विश्वास होता है भक्ति होती है लेकिन अखंड तथा अडिग श्रद्धा कम लोगों में होती है । इस कथा में श्रद्धा की वात है । भक्ति की वात है । भक्ति से प्रभु प्रसन्न होते हैं । भक्ति के मार्ग में भगवान और भक्त का एक मात्र सम्बन्धरहता है । इस में अन्य तीस रे की आवश्यकता नहीं । भगवान में मात्र दृढ विश्वास या श्रद्धा का होना आवश्यक है । प्रभु की भक्ति के विषय में वात करें तो कम हो जायेगी । प्रभु पाप का नाश करने के लिये वारंवार इस पृथ्वी पर अवतार धारण करते हैं । भजन भक्ति का मार्ग बताये । मोक्ष का साधन साध्य कैसे सम्भव है । यह सभी प्रभु के पृथ्वी पर आने के बाद ही साध्य है । अन्यथा उपासना या भक्ति किस तरह या किस की कीजाय, यह एक प्रश्न है । जब प्रभु धरती पर आते हैं तो उन्हीं के माध्यम से भजन-भक्ति करना सुगम होती है ।

कथा-कथा खूब पावन होती है । कथा में खूब शक्ति होती है । प्रभु जब अवतार धारण करते हैं तभी कथा का रुप बनता है । मोक्ष का मार्ग खुलता है । भक्ति की धारा बहती है । प्रभु जब लीला करते है वही लीला चरित्र कथा के रुप में परिणत होती है और एक इतिहास बनकर सामने आती है । जो वर्तमान के लोगों तक पहुंचाने में साधन बनती है । साध्य प्रभु भक्ति या कथा रुपी साधन से सरल हो जाते है । यही एक मात्र प्रभु की प्राप्ति का साधन है । मार्ग है । कथा में इतनी शक्ति है कि अनेकों पापियों के पाप को नष्ट कर देती है ।

पाप से मुक्ति दिलाकर मोक्ष दिलाती हैं । कथा सुनने वाला खूब भाग्यशाली होता है । मात्र सुनना नहीं चाहिये उसका स्मरण बना रहे ऐसा भी करना चाहिये । कथा पावनकारी होती है । कथा भगवान के सामीप्य को देने वाली होती है ।

प्रभु का परिचय - प्रभु इस लोक के निर्माता हैं । सम्पूर्ण ब्रह्मांड के अधिपति है । भगवान सभी के दुःख का नाश कर देते हैं । जो अविनाशी है, सर्वनियंता है ऐसे हमारे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण सर्व व्यापक है । सभी के दुःख को दूर करने वाले हैं । बहुत दयालु है । भगवान की कृपा से प्राणीमात्र का कल्याण संभव है । उस कृपा को पाने के लिये आत्म समर्पित होना आवश्यक है । सभी प्रकार के सुख-शांति के दाता अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण हैं । ऐसे प्रभु का आस-भरोस छोड़कर दुर्मति ही होगा वही जायेगा ।

•

श्रीहरि की स्वधाम गमन लीला

- चन्द्रिका बहन रमेशभाई (नारणपुरा)

भगवान का प्रादुर्भाव तथा अन्तर्ध्यान की लीला-जिस तरह शास्त्रों में वर्णित है उसी का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करे तो निश्चित ही उसका भव पार हो जायेगा । शास्त्रों में मोक्ष प्राप्ति के अनेक साधन बताये गये हैं । जिस में भक्त भगवान के प्रादुर्भाव से लेकर स्वधाम गमन तक की लीला का चिन्तन

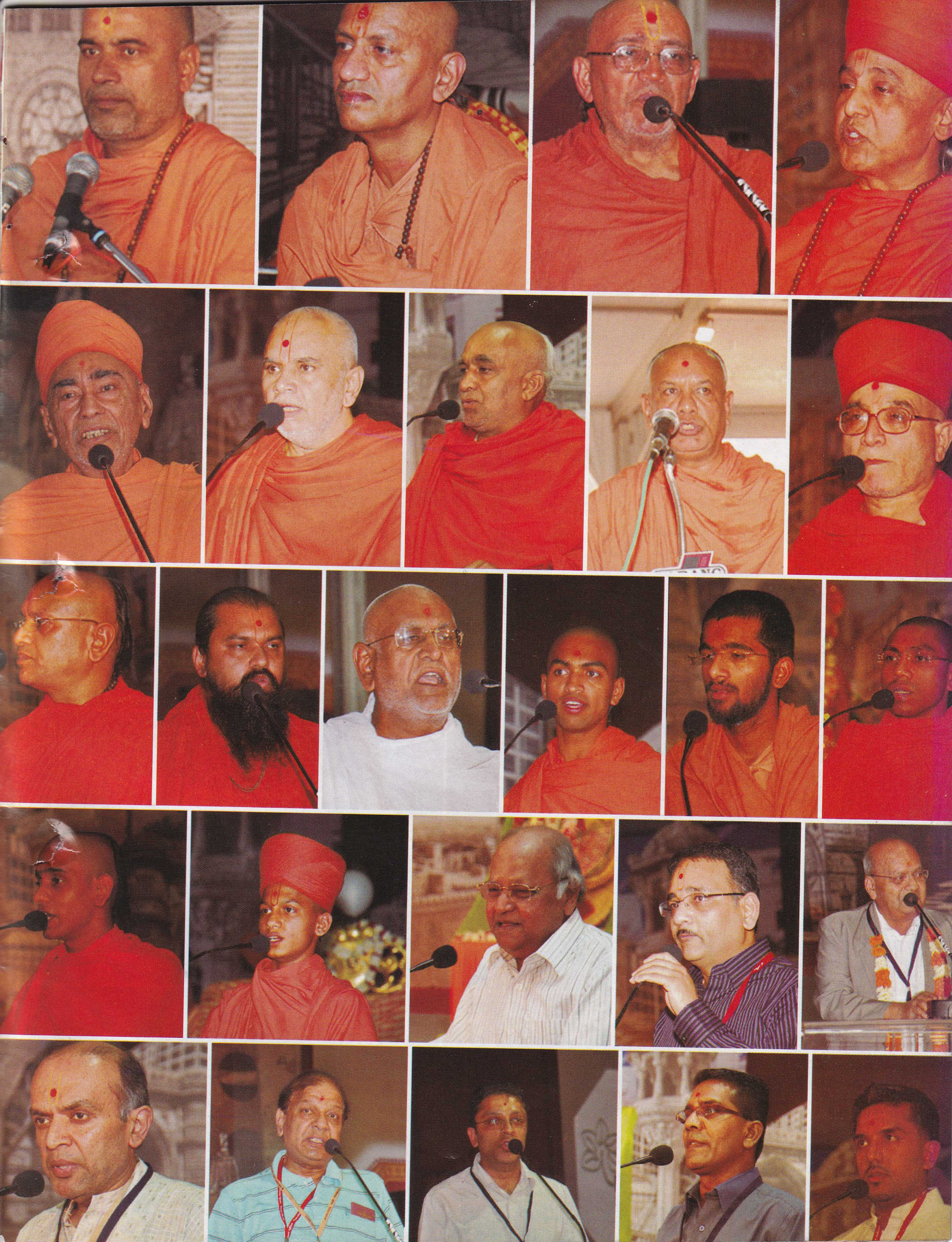

કેમેરાની-આંખે

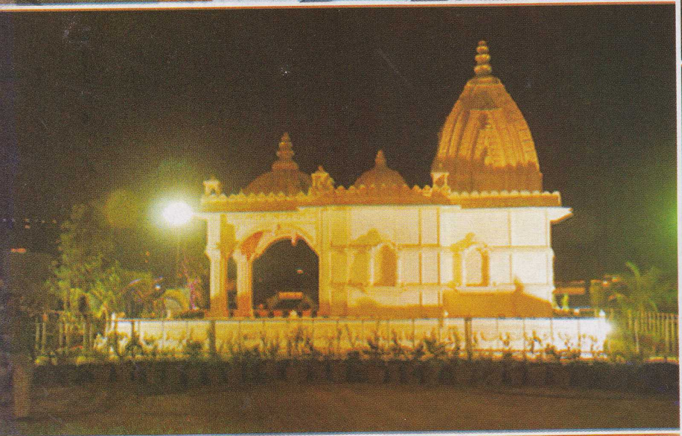

करता है तो अन्य चिन्तन की कोई आवश्यकता नहीं है।

श्रीहरि गोपालानंद स्वामी को कारियाणी में मिले तो अपने प्रागट्य का रहस्य बताकर स्वधाम जाने की बात किये तो स्वामी सुनते ही किं कर्तव्य विमूढ हो गये। महाराज स्थिति को समझकर थोड़ा परिवर्तन में बोले कि मैं सत्संग की अनुज्ञा लिये विना नहीं जाऊँगा इससे स्वामी के मन में चेतना आगयी।

स्वामी के साथ श्रीहरि गढडा आये। बिमारी की स्थिति में हो गये। किसी के साथ बोलना चालना बन्द कर दिये। एकांत में बैठे रहते, सभा में नहीं जाते थे। धीरे-धीरे भोजन छोड़ने लगे। उनकी विमारी का समाचार वायुवेग से चारो तरफ फैल गया। देश-विदेश से संत-भक्त आने लगे। श्रीहरि विचार किये कि सभी की उपस्थिति में मैं स्वधाम नहीं जा सकूंगा। इसलिये धीरे धीरे ठीक होने का नाटक करने लगे। अब वे सभी से कहने लगे कि अब मैं ठीक हूँ आप लोग अपने अपने स्थान को जाइये। पुनः विचार किये कि यहाँ पर ब्रह्मानंद स्वामी तथा सुराखाचर रहेगे तो भी स्वधाम जाना संभव नहीं हो पायेगा। इसलिये सुराखाचर से कहे कि आप भी अपने घर जाकर अपनी गृहस्थी सम्हालो। ब्रह्मानंद स्वामी से भी कहे कि अब मैं ठीक हो गया हूँ, इस समय आप जूनागढ जाकर मंदिर का काम जितना बाकी है उसे पूर्ण करवाइये। ब्रह्मानंद स्वामी महाराज की इस रहस्य भाषा को समझ गये कि मुझे बाहर भेंज कर स्वयं स्वधाम जाने की तैयारी में है। स्वामीने कहा नहीं महाराज जूनागढ का काम तो बाद में भी हो सकता है। इस समय आपके पास मेरा रहना आवश्यक है। पुनः महाराजने आज्ञा की कि आपके सिवाय वहाँ का काम कोई पूर्ण नहीं कर सकता। ब्रह्मानंद स्वामीने विचार किया कि मैं आज तक महाराज की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया हूँ, यदि अन्तिम समय में आज्ञा का उल्लंघन करता हूँ तो महाराज को दुःख होगा। खूब विचार कर किसी तरह मन को मनाकर कुछ संतो को साथ लेकर जूनागढ जाने के लिये निकल पड़े। गाँव के बाहर निकल ही रहे थे कि अपशकुन होने लगा, सामने विधवा स्त्री आगयी, सर्प रास्ता काट गया इत्यादि देखने के बाद भी स्वामीने विचार किया की सभी अमंगल कारक हैं तथापि प्रभु की आज्ञा है इसलिये वापस नहीं जा सकता हूँ।

गढडा में सं. १८८६ को ज्येष्ठ शुक्ल नवमी के दिन सभी संत-हरिभक्त-पार्षद की सभा में बुलवाकर सभी की उपस्थिति में महाराज ने कहा कि हे प्रिय भक्तों ! आज मैं एक आवश्यक वात कहने जा रहा हूँ। उसे सुनना है और धैर्य पूर्वक स्वीकार भी करना है।

इस धरती पर मैं जिस हेतु से आया था वह अबपूर्ण हो गया। अब मैं अन्तर्ध्यान होना चाहता हूँ। फिर भी मैं आप लोगों के पास चार स्वरुप से नित्य रहुँगा। (१) हमारे द्वारा स्थापित श्री नरनारायणादिक देवों के रुप में (२) हमारे द्वारा संस्थापित आचार्यों के रुप में (३) हमारे भक्तिपरायण संतो में। (४) हमारे द्वारा निर्दिष्ट शास्त्रों में।

इस तरह देव, आचार्य, संत, शास्त्र ये चार हमारे स्वरुप है। जब आप सभी को उद्वेग होतो मंदिर में जाकर गद्गद् कंठ से प्रार्थना करेंगे तो हम आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे। हमारे में तथा हमारी इन मूर्तियों में थोड़ा भी अन्तर नहीं है। अब मैं यह मनुष्य देह छोड़ना चाहता हूँ। हमारे जाने के बाद कोई आत्महत्या नहीं करना। अन्यथा शिक्षापत्री में लिखी हमारी आज्ञा का उल्लंघन होगा।

श्रीजी महाराज इतना ज्यों कहे कि सारी सभा स्तब्धरह गयी और सन्नाटा छा गया। भक्तों के करुण क्रन्दन से सभा विरहाकुल हो गयी। सम्पूर्ण वातावरण गमगीन होगया। कितने भक्त तो मूर्छित हो गये। श्रीहरि यह देखकर सभा को विसर्जित कर दिये।

दूसरे दिन महाराज ने सभी भक्तों से कहा, आप सभी लोग गोपालानन्द स्वामी की आज्ञा में रहना। नित्य नियम, पूजा पाठ करके ब्राह्मणों को दान देकर गोमूत्र तथा गोबर से जमीन को लिपवाकर सिद्धासन में बैठ गये। माला फेरते हुये मुक्तानन्द स्वामी की तरफ देखे तो वे बड़ेउदास थे। अपने पास बुलाकर कहे आप उदास मत होईये, आप इस संप्रदाय की मां है, मेरे स्वधाम गमन के बाद आप ही को सम्हालना है।

श्रीहरिने निष्कुलानंद स्वामी को कसम खिलाया था कि मैं दशमी के दिन जाऊँगा लेकिन आप किसी से कहना नहीं,

मेरे लिये पालकी-विमान तैयार करके रखियेगा ।

श्रीहरि माला फेरते-फेरते आंख बन्द कर दिये । शरीर में प्राण उर्ध्वति को प्राप्त हो गया । पार्थिव शरीर को उन्मत गंगा में स्नान कराकर पीताम्बर धारण कराया गया । नन्द संतो ने पार्थिव शरीर की पूजा की । फूलहार चढाया । धूपदीप किया । भक्तो ने मिलकर आरती उतारी । बाद में पार्थिव शरीर को पालकी में बैठाकर लक्ष्मीवाडी ले गये । सभी विलाप करते हुये दंवडत प्रणाम कर रहे थे । चन्दन तथा तुलसी के काष्ठ की चिता बनाई गयी थी । उसी पर उत्तर मुख पार्थिव शरीर को रख दिया गया । अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी ने यथाविधिक्रिया की । अग्नि प्रगट करके घी तथा नारियल का होम किये । देखते देखते भौतिक शरीर जल गयी । बाद में दूधसे राख को ठन्ढा किया गया । श्रीहरि के फूल को एकत्रित किया गया । सभी हरिभक्त धून करते हुये उन्मत गंगा में स्नान करने गये । स्नान करके सभी दरबारगढ में एकत्रित हुये । सभी एक साथ श्रीहरि को शोकांजलि अर्पण किये ।

श्रीहरि इस धराधाम पर ४९ वर्ष २ महिना १ दिन तक भक्तमात्र को शरीर का सुख दिये । श्रीहरि का जिस स्थल पर अग्नि संस्कार हुआ वहीं पर एक स्मृति मंदिर बनाया गया जो आज दर्शन दे रहा है।

•

अठारह घर भोजन किये

– पटेल निशा विष्णुभाई (गुलाबपुरावाला)

एकबार श्रीहरि वहेलाल में पधारे । जेसिंगभाई से कहे कि कई दिन यहाँ रहते हो गया, अब जाना चाहता हूँ । नहीं, महाराज ! अभी मत जाइये आपके यहाँ रहने से अठारह पाटीदार सत्संगी बने हैं । इन सभीको मैंने कहा है कि आप सभी के घर महाराज प्रसाद ग्रहण करने आयेंगे । वे सभी प्रसन्न हैं । वे सभी कल मुझसे पूछ रहे थे । महाराज कब घर पधारेगें ? हम सभी से हाँ किये है, इसलिये आपको रुकना होगा । एक-एक दिन सभी के घर भोजन करना है इस तरह १८ दिन तक आप यहाँ रुक कर सभी का प्रसाद ग्रहण करें जेसिंग के कहने के बाद महाराज विचार करने लगे । विचार करने के बाद जेसिंग से कहे कि जाकर १८ भक्तों से कह दो कि महाराज के लिये सभी लोग भोजन की तैयारी करें । एक ही दिन १८ घरों में मैं प्रसाद ग्रहण करूँगा । सभी के घर में भोजन की तैयारी होने लगी । महाराज सर्व प्रथम जेसिंगभाई के काका के घर भोजन करने पधारे । वहाँ पर नाना प्रकार का व्यंजन बना था लेकिन उसमें से १ लडु को प्रसाद के रुप में स्वीकार करके कहे कि जेसिंग अभी १८ घर और भी प्रसाद लेना है । सभी के घर १-१ लाडु ले लेंगे, सभी भक्तों की इच्छा पूर्ण हो जायेगी । बगल वाली महिला चालांक थी उसने ४-५ लडुका एक लडु बनाया, अब महाराज उसे देखकर कहने लगे यह क्या ? महाराज यह लड्डूही है । फिर भी प्रसाद वहाँ से ग्रहण करके आगे अन्य घरों में प्रसाद ग्रहण करके सभी के मनोरथ को सिद्ध किये ।

•

अपना श्री स्वामिनारायण म्युजियम

– कंचन बहन रणछोडभाई पटेल (नारायणपुरा)

(सोनेरी मोडीयु सुंदर, सोनेरी मोडीयु...) यह राग ।

सोनाना सूरज उग्यो सोनानो सूरज रे,
सोनाना सूरज रे नारायणपुरा मां १

दिव्य संकल्प रुडा, दिव्य संकल्प रे,
दिव्य संकल्प श्री मोटा महाराजनो २

म्युजियम बनाव्या रुडा म्युजियम बन्याव्या रे,
म्युजियम बनाव्या, श्री स्वामिनारायणनां ३

माणकी घोड़ी वहालानी, माणकी घोडी,
माणकी घोडी अहीं पगला पडया छे ४

पवित्र भूमि एवी पवित्र भूमि छे,
पवित्र भूमि, श्रीजी महाराजनी ५

प्रसादीनी वस्तु अहीं प्रसादीनी वस्तु छे,
प्रसादीनी वस्तु छे, श्रीजी महाराजनी ६

सनातन सत्य अहीं, सनातन सत्य छे,
सनातन सत्य एनो महिमा अपार छे ७

प्रगट पुरुषोत्तम अहीं, प्रगटपुरुषोत्तम,
प्रगट पुरुषोत्तम, श्री नरनारायणदेव मां ८

अभिषेक थाय छे अहीं, अभिषेक थाय छे,

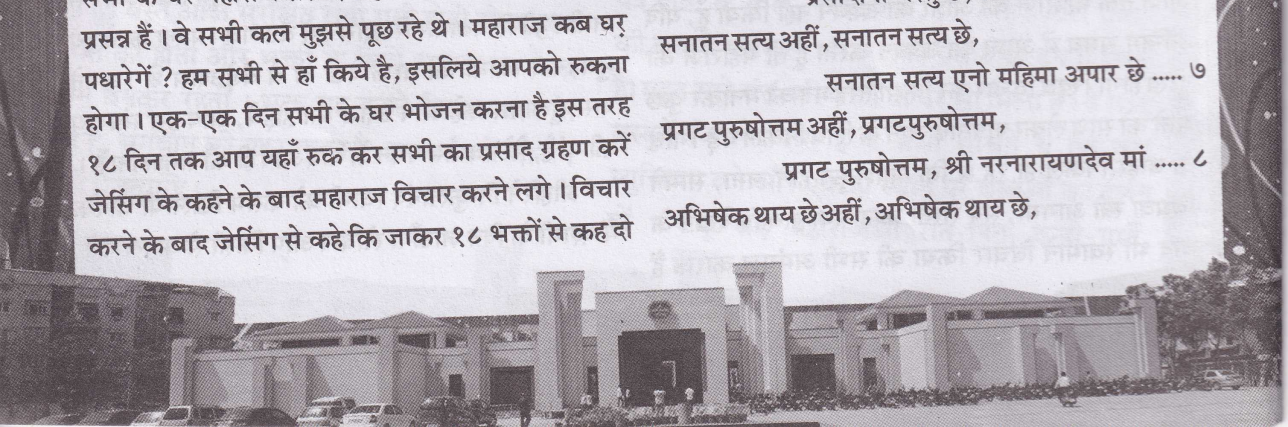

अभिषेक थाय छे, श्री नरनारायणदेव नो ९

घेर बैठा गंगा अहीं, घेर बैठा गंगा,
घेर बैठा गंगा, अभिषेक करीने १०

पावन थइये अहीं, पावन थइये,
पावन थइये दर्शन करीने ११

अडसठ तीरथ अहीं, अडसठ तीरथ छे,
अडसठ तीरथ, श्री स्वामिनारायण म्युजियम मां १२

नैमिषारण्य अहीं, नैमिषारण्य छे,
नैमिषारण्य क्षेत्र, उंडा अन्तरमांही १३

शुद्ध उपासना अहीं, सिद्ध स्वरुप छे,
सिद्ध स्वरुप छे, श्रीजी महाराजनुं १४

अडग निष्ठा अहीं, अडग निष्ठा छे,
अडग निष्ठा श्री नरनारायणदेवनी १५

साक्षात्कार थाय छे अहीं, साक्षात्कार थाय छे,
साक्षात्कार थाय छे, श्रीजी महाराज नो १६

भक्तोनी भीड जामी, भक्तोनी भीड रे,
भक्तोनी भीड़ श्री स्वामिनारायण म्युजियममां १७

अहो भाग्य छे सहुना, अहो भाग्य छे,
अहो भाग्य छे, सत्संग समाजना १८

गुजरातनु नजराणुं आ तो गुजरातनु नजराणु,
गुजरातनुं नजराणु, श्री स्वामिनारायण म्युजियम १९

दान लेवाय छे अहीं, दान लेवाय छे,
दान लेवाय छे प्रसादीनी वस्तुनां
दान लेवाय छे तन, मन, धनना २०

दर्शननो लहावो लेजो, दर्शननो लहावो रे,
दर्शननो लहावो एवो आज्ञा महाराजनी २१

त्यागनी मूर्ति छे, त्यागनी मूर्ति,
त्यागनी मूर्ति, श्री तेजेन्द्रप्रसादजीनी २२

सनातन गादी अहीं, सनातन गादी छे,
सनातन गादी श्री आचार्य महाराजनी २३

हाथ जोडी नमन करिये, हाथ जोडीने,
हाथ जोडीने श्री धर्मकुलने २४

धर्मकुलने वंदन श्री धर्मकुलने वंदन,
श्री धर्मकुलने वंदन, कोटी-कोटी करिये २५

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उद्घाटन प्रसंग पर ता. ५-३-२०११ से ता. ९-३-२०११ तक आरोग्य समिति द्वारा आयोजित आरोग्य विभाग में की गयी प्रवृति अधोनिर्दिष्ट है

(१) प्राथमिक जन सेवा केन्द्र में ता. ५-३-२०११ से ९-३-२०११ तक कुल १८११निरोगी भक्तों ने लाभ लिया।

(२) ब्लड डोनेशन केम्प में ता. ६-३-२००१ से ९-३-२०११ तक कुल ४११ हरिभक्तों ने रक्तदान की सेवा की।

(३) डायाबिटीश निदान केम्प में ता. ८-३-२०११ को कुल ४३० हरिभक्त डायाबिडीश का निदान करवाये।

उपरोक्त सेवा में आरोग्य विभाग में अधोनिर्दिष्ट हरिभक्त डॉ. ने सेवा की थी .... (१) डॉ. नटुभाई एम. पटेल (२) डॉ. रमेशभाई परीख (३) डॉ. कनुभाई पटेल (४) डॉ. हिरेनभाई पटेल (५) हर्षदभाई (६) डॉ. प्रतीक ठक्कर (७) डॉ. शशांकभाई स्वामिनारायण (८) डॉ. दशरथ पटेल (९) नीता भावसार (१०) हसमुखभाई सरवैया (११) डॉ. रुसी सोलंकी।

डायाबिटीश निदान केम्प में डॉ. मयूर पटेल के ''स्वार्थ्य केन्द्र'' की तरफ से सेवाका कार्य किया गया था। ब्लड डोनेशन केम्प सिविल होस्टिपल ब्लड बैक तथा केन्सर होस्पिटल ब्लड बैंक के स्टाफ के तरफ से सेवा की गयी थी।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्‌घाटन महोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद के साथ आज्ञा सेश्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सभ्य बने इसके लिये भेट देने वाले साहित्य प्रेमी भक्तों के नाम

(१) प.भ. रमीलाबहन दर्जी, सादरा (२) प.भ. विष्णुभाई पटेल, अमेरिका (३) प.भ.अ.नि. पुरीबहन डाह्याभाई बूटिया, कालीयाणा (४) प.भ. कुबेरभाई बूठीया (५) प.भ. भीखुभाई जेठुभाई पेपर कं. अमदावाद (७) प.भ. अरविंदभाई सेंधाभाई पटेल, बोपल (८) प.भ. अरविंदभाई पी. ठक्कर, शीतल मोटर्स प्रा.ली. अमदावाद (९) प.भ. डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी (१०) प.भ. रेखाबहन नरेशभाई भावसार (११) प.भ. हर्षाबहन गंजावाला (१२) सां.यो. राजकुंवरबा, सां. उषाबा (मोरबी स्वा. मंदिर) (१३) शिवकृपा ओफसेट प्रा.लि. अहमदाबाद (१४) प.भ. प्रवीणभाई श्रद्धा कैसेट कं. (१६) अ.नि. मधुबहन रावजीभाई पटेल, श्री विष्णुभाई पटेल (१६) मर्म पोझीटीव महेन्द्रभाई अमदावाद (१७) प.भ. शिवाभाई चौधरी (१८) प.भ. जेठाभाई सवाणी कच्छ (१९) प.भ. अरविंदभाई सोमाभाई पटेल (२०) प.भ. आशिषभाई रावल (२१) प.भ. लालभाई पटेल (२२) प.भ. हीराभाई पटेल कच्छ (२३) कुमार बाईन्डर्स श्री धीरुभाई (२४) प.भ. मुकेशभाई के. डांगरवा (२५) प.भ. भीमजीभाई टांक (२६) प.भ. दीपकभाई एम. लंदन (२७) प.भ. धर्मेश सी. पटेल, जयेश पटेल, मुकेश ठक्कर ऊंझा (२८) प.भ. अरजणभाई गोवाभाई मोरी कालीयाणा (२९) प.भ. चिमनभाई परसोत्तमदास पटेल (३०) प.भ. बाबूभाई टांक, मीरा रोड, मुंबई (३१) एन. देसाई पेपर्स प्रा.लि. अमदावाद (३२) प.भ. नयनाबहन घनश्यामभाई पटेल (३३) प.भ. चन्द्राबहन दिनेशभाई पटेल अमेरिका (३४) प.भ. जयंतीभाई पटेल बापूनगर (३५) प.भ. विष्णुभाई भगत, वडु कलोल (३६) प.भ. अर्जुन संजयभाई सोनी, अमदावाद।

इस उत्सव के प्रसंग पर ९०० जितने सदस्य बने थे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्‌घाटन महोत्सव प्रसंग पर नूतन प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं स्कीम कमेटी के सदस्यों की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण म्युजियम उद्‌घाटन महोत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद की तरफ से अधोनिर्दिष्ट पुस्तकों का प्रकाशन तथा सीडी का प्रकाशन किया गया है।

(१) हजारी कीर्तनावलि

(२) वचनामृत में श्री नरनारायणदेव एम.पी.-३ सीडी

(३) नित्य नियमावलि एम.पी.-३ सीडी

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से तथा आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव गादी के विद्वान कथाकार पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी द्वारा सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के जन्म से लेकर अन्तर्धान तक विचरण - तारीख - तिथि समय इत्यादि का अद्‌भुत आलेखन जिस में समाविष्ट है। ऐसा महान शास्त्र श्री स्वामिनारायण का प्रकाशन किया गया है।

उपरोक्त सभी साहित्य अपने मंदिर के साहित्य केन्द्र से मिल सकता है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८०००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८०००१ द्वारा प्रकाशित।

रजत - सुवर्ण तुला विधि

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

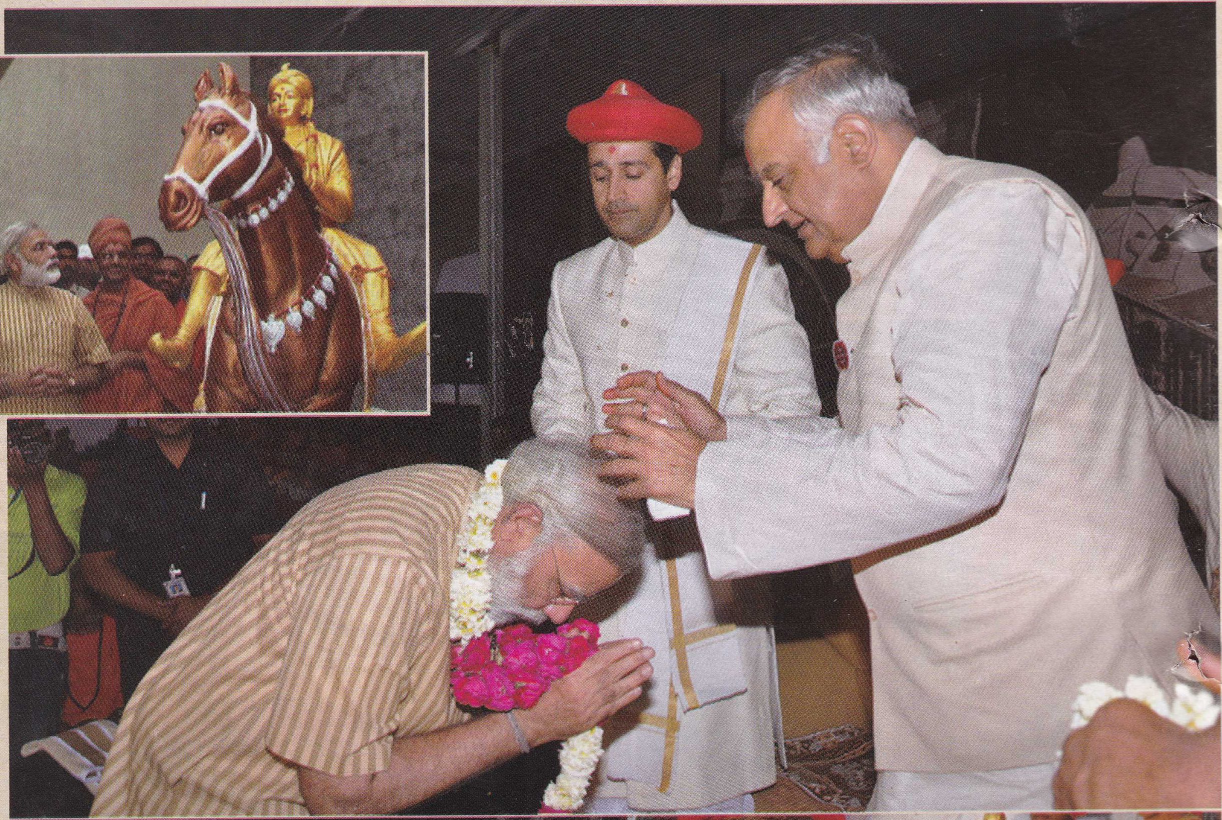

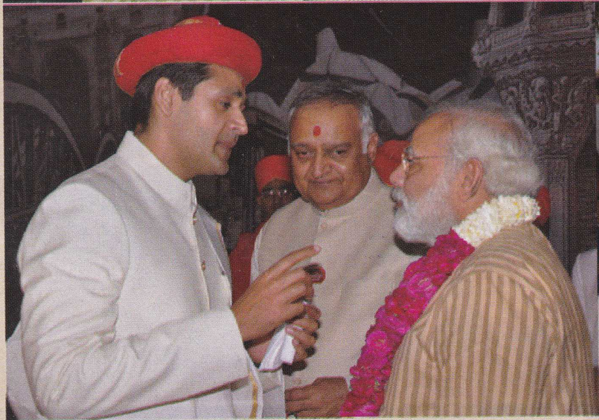

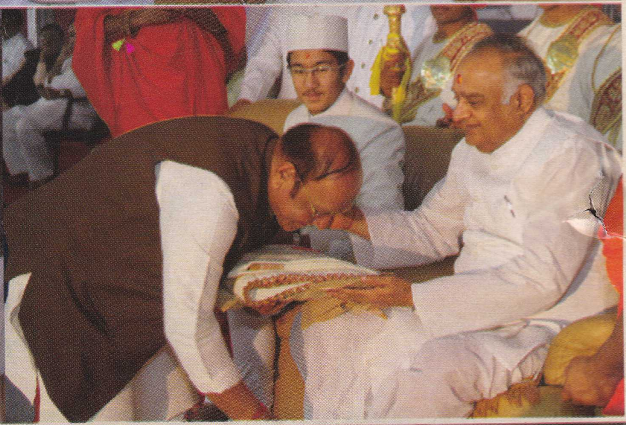

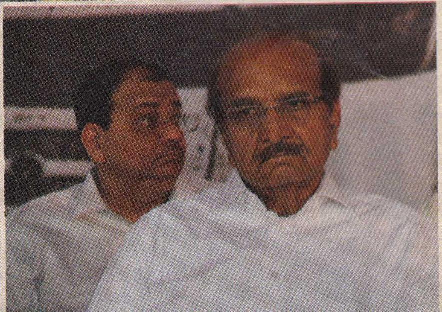

ujish Offset

aful Kharsani